वक्तृत्वकला के बीज
पांचवाँ भाग

समन्वय प्रकाशन

प्र० स०

मोतीलाल पारख
ब्रह्मदेवसिंह

प्रकाशक

जनसुखलाल एण्ड कंपनी
c/o भगवतप्रसाद रणछोडदास
४४, न्यू क्लोथ मार्केट
अहमदाबाद-२

प्रथम आवृति : २०००
बसन्त पचमी वि० स० २०२८
जनवरी १९७२

मूल्य · पांच रुपये पचास पैसे

संपर्क सूत्र

सजय साहित्य सगम,
दासबिल्डिग न०-५
बिलोचपुर, आगरा-२

मुद्रक ·

रामनारायन मेड़तवाल
श्रीविष्णु प्रिंटिंग प्रेस
राजा की मडी, आगरा-२

उन जिज्ञासुओ को,

जिनकी उर्वर मनोभूमि में

ये बीज

अकुरित

पुष्पित

फलित हो,

अपना विराट् रूप प्राप्त कर सकें !

प्राप्तिकेन्द्र

१ जनसुखलाल एंड कंपनी
c/o भगवतप्रसाद रणछोडदास
४४, न्यूक्लोथ मार्केट
अहमदाबाद–२

२ श्री सम्पतराय बोरड
c/o मदनचंद सम्पतराय
४०, धानमंडी,
श्री गंगानगर (राजस्थान)

३ मोतीलाल पारख
दि अहमदाबाद लक्ष्मी कॉटनमिल्स क० लि०
पो० बा० न० ४२
अहमदाबाद–२२

प्राक्कथन

मानव जीवन मे वाचा की उपलब्धि एक वहुत वडी उपलब्धि है। हमारे प्राचीन आचार्यों की दृष्टि मे वाचा ही सरस्वती का अधिष्ठान है, **वाचा सरस्वती भिषग्**[1]—वाचा ज्ञान की अधिष्ठात्री होने से स्वय सरस्वती रूप है, और समाज के विकृत आचार-विचार-रूप रोगो को दूर करने के कारण यह कुशल वैद्य भी है।

अन्तर के भावो को एक दूसरे तक पहुँचाने का एक वहुत वडा माध्यम वाचा ही है। यदि मानव के पास वाचा न होती तो, उसकी क्या दशा होती ? क्या वह भी मूकपशुओ की तरह भीतर ही भीतर घुटकर समाप्त नही हो जाता ? मनुष्य, जो गू गा होता है, वह अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए कितने हाथ-पैर मारता है, कितना छटपटाता है फिर भी अपना सही आशय कहा समझा पाता है दूसरो को ?

वोलना वाचा का एक गुण है, किंतु वोलना एक अलग चीज है, और वक्ता होना वस्तुत एक अलग चीज है। वोलने को हर कोई वोलता है, पर वह कोई कला नही है, किंतु वक्तृत्व एक कला है। वक्ता साधारण से विषय को भी कितने सुन्दर और मनोहारी रूप से प्रस्तुत करता है कि श्रोता मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। वक्ता के वोल श्रोता के हृदय मे ऐसे उतर जाते हैं कि वह उन्हें जीवन भर नही भूलता।

कर्मयोगी श्रीकृष्ण, भगवान्महावीर, तथागतवुद्ध, व्यास और भद्रबाहु आदि भारतीय प्रवचन-परम्परा के ऐसे महान् प्रवक्ता थे,

---

१ यजुर्वेद १९।१२

जिनकी वाणी का नाद आज भी हजारो-लाखो लोगो के हृदयो को आप्यायित कर रहा है। महाकाल की तूफानी हवाओ मे भी उनकी वाणी की दिव्य ज्योति न बुझी है और न बुझेगी।

हर कोई वाचा का धारक, वाचा का स्वामी नही वन सकता। वाचा का स्वामी ही वाग्मी या वक्ता कहलाता है। वक्ता होने के लिए ज्ञान एव अनुभव का आयाम वहुत ही विस्तृत होना चाहिए। विशाल अध्ययन, मनन-चितन एव अनुभव का परिपाक वाणी को तेजस्वी एव चिरस्थायी वनाता है। विना अध्ययन एव विपय की व्यापक जानकारी के भाषण केवल भषण (भोकना) मात्र रह जाता है, वक्ता कितना ही चीखे-चिल्लाये, उछले-कूदे यदि प्रस्तावित विपय पर उसका सक्षम अधिकार नही है, तो वह सभा मे हास्यास्पद हो जाता है, उसके व्यक्तित्व की गरिमा लुप्त हो जाती है। इसीलिए वहुत प्राचीनयुग मे एक ऋपि ने कहा था—**वक्ता शतसहस्रेषु**, अर्थात् लाखो मे कोई एक वक्ता होता है।

शतावधानी मुनि श्री धनराज जी जैनजगत के यशस्वी प्रवक्ता हैं। उनका प्रवचन, वस्तुत प्रवचन होता है। श्रोताओ को अपने प्रस्तावित विपय पर केन्द्रित एव मंत्र-मुग्ध कर देना उनका सहज कर्म है। और यह उनका वक्तृत्व—एक वहुत वडे व्यापक एव गभीर अध्ययन पर आधारित है। उनका सस्कृत-प्राकृत आदि प्राचीन भापाओ का ज्ञान विस्तृत है, साथ ही तलस्पर्शी भी। मालूम होता है, उन्होंने पाण्डित्य को केवल छुआ भर नही है, किंतु समग्रशक्ति के साथ उसे गहराई से अधिग्रहण किया है। उनकी प्रस्तुत पुस्तक 'वक्तृत्वकला के बीज' मे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति मे जैन आगम, बौद्धवाङ्मय, वेदो से लेकर उपनिपद ब्राह्मण, पुराण, स्मृति आदि वैदिक साहित्य तथा लोककथानक, कहा-वतें, रूपक, ऐतिहासिक घटनाएँ, ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी चर्चाएँ—

इसप्रकार शृखलाबद्ध रूप मे सकलित है कि किसी भी विषय पर हम बहुत कुछ विचार-सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। सचमुच वक्तृत्व-कला के अगणित बीज इसमे सन्निहित हैं। सूक्तियो का तो एक प्रकार से यह रत्नाकर ही है। अग्रेजी साहित्य व अन्य धर्मग्रथो के उद्धरण भी काफी महत्वपूर्ण हैं। कुछ प्रसग और स्थल तो ऐसे हैं, जो केवल सूक्ति और सुभाषित ही नही है, उनमे विषय की तलस्पर्शी गहराई भी है और उसपर से कोई भी अध्येता अपने ज्ञान के आयाम को और अधिक व्यापक बना सकता है। लगता है, जैसे मुनि श्री जी वाङ्मय के रूप मे विराट् पुरुप हो गए हैं। जहा पर भी दृष्टि पडती है, कोई-न-कोई वचन ऐसा मिल ही जाता है जो हृदय को छू जाता है और यदि प्रवक्ता प्रसगत अपने भाषण मे उपयोग करे, तो अवश्य ही श्रोताओ के मस्तक झूम उठेंगे।

प्रश्न हो सकता है—'वक्तृत्वकला के बीज' मे मुनि श्री का अपना क्या है ? यह एक सग्रह है और सग्रह केवल पुरानी निधि होती है, परन्तु मैं कहूंगा — कि फूलो की माला का निर्माता माली जब विभिन्न जाति एव विभिन्न रगो के मोहक पुष्पो की माला बनाता है तो उसमे उसका अपना क्या है ? बिखरे फूल, फूल हैं, माली नही। माला का अपना एक अलग ही विलक्षण सौन्दर्य है। रग-बिरगे फूलो का उपयुक्त चुनाव करना और उनका कलात्मक रूप मे सयोजन करना—यही तो मालाकार का कर्म है, जो स्वय मे एक विलक्षण एव विशिष्ट कलाकर्म है। मुनि श्री जी वक्तृत्वकला के बीज मे ऐसे ही विलक्षण मालाकार हैं। विषयो का उपयुक्त चयन एव तत्सम्बन्धित सूक्तियो आदि का सकलन इतना शानदार हुआ है कि इस प्रकार का सकलन अन्यत्र इस रूप मे नही देखा गया।

एक बात और—श्री चन्दनमुनि जी की संस्कृत-प्राकृत रचनाओ ने मुझे यथावसर काफी प्रभावित किया है। मैं उनकी विद्वत्ता का प्रशसक रहा हूं। श्री धनमुनि जी उनके बडे भाई हैं—जब यह मुझे

ज्ञात हुआ तो मेरे हर्ष की सीमाओ का और भी अधिक विस्तार हो गया। अब मैं कैसे कहूं कि इन दोनो मे कौन बडा है और कौन छोटा ? अच्छा यही होगा कि एक को दूसरे मे उपमित कर दूं। उनकी बहुश्रुतता एव इनकी संग्रह-कुशलता से मेरा मन मुग्ध हो गया है।

मैं मुनि श्री जी, और उनकी इस महत्वपूर्णकृति का हृदय से अभिनन्दन करता हूं। विभिन्न भागो मे प्रकाशित होने वाली इस विराट् कृति से प्रवचनकार, लेखक एव स्वाध्यायप्रेमीजन मुनि श्री के प्रति ऋणी रहेंगे। वे जब भी चाहेगे, वक्तृत्व के बीज मे से उन्हे कुछ मिलेगा ही, वे रिक्तहस्त नही रहेगे ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रवक्तृ-समाज—मुनि श्री जी का एतदर्थ आभारी है और आभारी रहेगा।

जैन भवन
आश्विन शुक्ला-३
आगरा

—उपाध्याय अमरमुनि

सम्पादकीय

वक्तृत्वगुण एक कला है, और वह बहुत बडी साधना की अपेक्षा करता है। आगम का ज्ञान, लोकव्यवहार का ज्ञान, लोकमानस का ज्ञान और समय एव परिस्थितियो का ज्ञान तथा इन सबके साथ निस्पृहता, निर्भयता, स्वर की मधुरता, ओजस्विता आदि गुणो की साधना एव विकास से ही वक्तृत्वकला का विकास हो सकता है, और ऐसे वक्ता वस्तुत. हजारो लाखो मे कोई एकाध ही मिलते हैं।

तेरापथ के अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्रीतुलसी मे वक्तृत्वकला के ये विशिष्ट गुण चमत्कारी ढग से विकसित हुए है। उनकी वाणी का जादू श्रोताओ के मन-मस्तिष्क को आन्दोलित कर देता है। भारतवर्ष की सुदीर्घ पदयात्राओ के मध्य लाखो नर-नारियो ने उनकी ओजस्विनी वाणी सुनी है और उसके मधुर प्रभाव को जीवन मे अनुभव किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक मुनि श्री धनराजजी भी वास्तव मे वक्तृत्वकला के महान गुणो के धनी एक कुशल प्रवक्ता सत हैं। वे कवि भी है, गायक भी है, और तेरापथ शासन मे सर्वप्रथम अवधानकार भी है, इन सबके साथ-साथ बहुत बडे विद्वान तो है ही। उनके प्रवचन जहा भी होते है, श्रोताओ की अपार भीड़ उमड आती है। आपके विहार करने के बाद भी श्रोता आपकी याद करते रहते है।

आपकी भावना है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी वक्तृत्वकला का विकास करे और उसका सदुपयोग करे, अत. जन-समाज के लाभार्थ आपने वक्तृत्व के योग्य विभिन्न सामग्रियो का यह विशाल सग्रह प्रस्तुत किया है।

बहुत समय से जनता की, विद्वानो की और वक्तृत्वकला के अभ्यासियो की माँग थी कि इस दुर्लभ सामग्री का जन-हिताय प्रकाशन किया जाय तो बहुत लोगो को लाभ मिलेगा। जनता की भावना के अनुसार हमने मुनिश्री की इस सामग्री को धारणा प्रारभ किया। इस कार्य को सम्पन्न करने मे श्री डूगरगढ, मोमासर, भादरा, हिसार, टोहाना, नरवाना कैथल, हासी, भिवानी, तोसाम, ऊमरा, सिसाय, जमालपुर, सिरसा और भटिडा आदि के विद्यार्थियो एव युवको ने अथक परिश्रम किया है। फलस्वरूप लगभग सौ कापियो व १५०० विषयो मे यह सामग्री सकलित हुई है। हम इस विशाल सग्रह को विभिन्न भागो मे प्रकाशित करने का सकल्प लेकर पाठको के समक्ष प्रस्तुत हुए हैं।

वक्तृत्वकला के वीज का यह पाचवाँ भाग पाठको की सेवा मे प्रस्तुत है। इसके प्रकाशन का समस्त अर्थभार श्री जनसुखलाल एड कंपनी, अहमदावाद ने वहन किया है। इस अनुकरणीय उदारता के लिए हम उनके हृदय से आभारी है।

इसके प्रकाशन एव प्रूफ सशोधन आदि मे श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' तथा श्री ब्रह्मदेवसिह जी आदि का जो हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ है—उसके लिए भी हम हृदय से कृतज्ञता-ज्ञापित करते है। आशा है यह पुस्तक जन-जन के लिए, वक्ताओ और लेखको के लिए एक इनसाईक्लोपीडिया (विश्वकोश) का काम देगी और युग-युग तक इसका लाभ मिलता रहेगा...

●●

आ त्म नि वे द न

'मनुष्य की प्रकृति का बदलना अत्यन्त कठिन है'—यह सूक्ति मेरे लिए सवा सोलह आना ठीक साबित हुई। बचपन मे जब मैं कलकत्ता—श्री जैनेश्वेताम्बर-तेरापथी-विद्यालय में पढता था, जहाँ तक याद है, मुझे जलपान के लिए प्राय प्रतिदिन एक आना मिलता था। प्रकृति मे सग्रह करने की भावना अधिक थी, अत मैं खर्च करके भी उसमे से कुछ न कुछ बचा ही लेता था। इस प्रकार मेरे पास कई रुपये इकट्ठे हो गये थे और मैं उनको एक डिब्बी मे रखा करता था।

विक्रम सवत् १९७९ मे अचानक माताजी की मृत्यु होने से विरक्त होकर हम (पिता श्री केवलचन्द जी, मैं, छोटी बहन दीपांजी और छोटे भाई चन्दनमल जी) परमकृपालु श्री कालुगणीजी के पास दीक्षित हो गए। यद्यपि दीक्षित होकर रुपयो-पैसो का सग्रह छोड दिया, फिर भी सग्रहवृत्ति नही छूट सकी। वह धनसग्रह से हटकर ज्ञानसग्रह की ओर झुक गई। श्री कालुगणी के चरणो में हम अनेक बालक मुनि आगम-व्याकरण-काव्य-कोष आदि पढ रहे थे। लेकिन मेरी प्रकृति इस प्रकार की बन गई थी कि जो भी दोहा-छन्द-श्लोक-ढाल-व्याख्यान-कथा आदि सुनने या पढने मे अच्छे लगते, मैं तत्काल उन्हे लिख लेता या ससार-पक्षीय पिताजी से लिखवा लेता। फलस्वरूप उपरोक्त सामग्री का काफी अच्छा सग्रह हो गया। उसे देखकर अनेक मुनि विनोद की भाषा मे कह दिया करते थे कि "धन्न् तो न्यारा मे जाने की (अलग विहार करने की) तैयारी कर रहा है।" उत्तर मे मैं कहा करता—"क्या आप गारटी दे सकते हैं कि इतने (१० या १५) साल तक आचार्य श्री हमें अपने साथ ही रखेंगे? क्या पता, कल ही अलग विहार करने

का फरमान करदे। व्याख्यानादि का सग्रह होगा तो धर्मोपदेश या धर्म-प्रचार करने मे सहायता मिलेगी।"

समय-समय पर उपरोक्त साथी मुनियो का हास्य-विनोद चल ही रहा था कि वि० स० १६८६ मे श्री कालुगणी ने अचानक ही श्रीकेवलमुनि को अग्रगण्य बनाकर रतननगर (थेलासर) चातुर्मास करने का हुक्म दे दिया। हम दोनो भाई (मैं और चन्दन मुनि) उनके साथ थे। व्याख्यान आदि का किया हुआ सग्रह उस चातुर्मास मे बहुत काम आया एव भविष्य के लिए उत्तमोत्तम ज्ञानसग्रह करने की भावना बलवती बनी। हम कुछ वर्ष तक पिताजी के साथ विचरते रहे। उनके दिवगत होने के पश्चात् दोनो भाई अग्रगण्य के रूप मे पृथक्-पृथक् विहार करने लगे।

विशेष प्रेरणा—एक बार मैंने 'वक्ता बनो' नाम की पुस्तक पढी। उसमे वक्ता बनने के विषय मे खासी अच्छी बाते बताई हुई थी। पढ़ते-पढते यह पक्ति दृष्टिगोचर हुई कि "कोई भी ग्रन्थ या शास्त्र पढो, उसमे जो भी बात अपने काम की लगे, उसे तत्काल लिख लो।" इस पक्ति ने मेरी सग्रह करने की प्रवृत्ति को पूर्वापेक्षया अत्यधिक तेज बना दिया। मुझे कोई भी नई युक्ति, सूक्ति या कहानी मिलती, उसे तुरत लिख लेता। फिर जो उनमें विशेप उपयोगी लगती, उसे औपदेशिक भजन, स्तवन या व्याख्यान के रूप मे गू थ लेता। इस प्रवृत्ति के कारण मेरे पास अनेक भाषाओ मे निबद्ध स्वरचित सैकडो भजन और सैकडो व्याख्यान इकट्ठे हो गए। फिर जैन-कथा साहित्य एव तात्त्विकसाहित्य की ओर रुचि बढी। फलस्वरूप दोनों ही विपयो पर अनेक पुस्तको की रचना हुई। उनमे छोटी-बड़ी लगभग २६ पुस्तके तो प्रकाश मे आ चुकी, शेप ३०-३२ अप्रकाशित ही हैं।

एक बार सगृहीत-सामग्री के विषय मे यह सुझाव आया कि यदि प्राचीन सग्रह को व्यवस्थित करके एक ग्रन्थ का रूप दे दिया जाए, तो यह उत्कृष्ट उपयोगी चीज बन जाए। मैंने इस सुझाव को स्वीकार किया और अपने प्राचीन सग्रह को व्यवस्थित करने मे जुट गया। लेकिन पुराने सग्रह मे कौन-सी सूक्ति, श्लोक या हेतु किस ग्रन्थ या शास्त्र के है अथवा किस कवि, वक्ता या लेखक के है—यह प्राय लिखा हुआ नही था। अत ग्रन्थो या शास्त्रो आदि की साक्षिया प्राप्त करने के लिए—इन आठ-नौ वर्षो मे वेद, उपनिषद्, इतिहास, स्मृति, पुराण, कुरान, बाइबिल, जैनशास्त्र, बौद्धशास्त्र, नीतिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, शकुनशास्त्र, दर्शन-शास्त्र, सगीत-शास्त्र तथा अनेक हिन्दी, अग्रेजी, सस्कृत, राजस्थानी, गुजराती मराठी एव पजाबी सूक्तिसग्रहो का ध्यानपूर्वक यथासम्भव अध्ययन किया। उससे काफी नया सग्रह बना और प्राचीन सग्रह को साक्षी सम्पन्न बनाने मे सहायता मिली। फिर भी खेद है कि अनेक सूक्तियाँ एव श्लोक आदि बिना साक्षी के ही रह गए। प्रयत्न करने पर भी 'उनकी साक्षिया नही मिल सकी। जिन-जिन की साक्षिया मिली है, उन-उनके आगे वे लगा दी गई हैं। जिनकी साक्षिया उपलब्ध नही हो सकी, उनके आगे स्थान रिक्त छोड दिया गया है। कई जगह प्राचीन सगह के आधार पर केवल महाभारत, वाल्मीकि रामायण, योग-शास्त्र आदि महान् ग्रन्थो के नाममात्र लगाए हैं, अस्तु।

इस ग्रथ के सकलन मे किसी भी मत या सम्प्रदाय विशेष का खण्डन-मण्डन करने की दृष्टि नही है, केवल यही दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि कौन क्या कहता है या क्या मानता है। यद्यपि विश्व के विभिन्न देशनिवासी मनीषियो के मतो का सकलन होने से ग्रन्थ मे भाषा की एकरूपता नही रह

सकी है। कही प्राकृत-सस्कृत, पारसी, उर्दू एव अग्रेजी भाषा है तो कही हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, पजाबी और बगाली भाषा के प्रयोग है, फिर भी कठिन भाषाओ के श्लोक, वाक्य आदि का अर्थ हिन्दी भाषा मे कर दिया गया है। दूसरे प्रकार से भी इस ग्रन्थ मे भाषा की विविधता है। कई ग्रन्थो, कवियो, लेखको एव विचारको ने अपने सिद्धान्त निरवद्यभाषा मे व्यक्त किए है तो कई साफ-साफ सावद्यभाषा में ही बोले है। मुझे जिस रूप मे जिसके जो विचार मिले है, उन्हे मैंने उसी रूप मे अकित किया है, लेकिन मेरा अनुमोदन केवल निर्वद्य-सिद्धान्तो के साथ है।

ग्रन्थ की सर्वोपयोगिता—इस ग्रन्थ मे उच्चस्तरीय विद्वानो के लिए जहाँ जैन-बौद्ध आगमो के गम्भीर पद्य है, वेदो, उपनिषदो के अद्भुत मत्र हैं, स्मृति एव नीति के हृदयग्राही श्लोक है वहाँ सर्वसाधारण के लिए सीधी-सादी भाषा के दोहे, छन्द, सूक्तियाँ, लोकोक्तियाँ, हेतु, दृष्टान्त एव छोटी-छोटी कहानियाँ भी है। अत. यह ग्रन्थ नि.सदेह हर एक व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—ऐसी मेरी मान्यता है। वक्ता, कवि और लेखक इस ग्रन्थ से विशेप लाभ उठा सकेंगे, क्योकि इसके सहारे वे अपने भाषण, काव्य और लेख को ठोस, सजीव, एव हृदयग्राही बना सकेंगे एव अद्भुत विचारो का विचित्र चित्रण करके उनमे निखार ला सकेंगे, अस्तु !

ग्रन्थ का नामकरण—इस ग्रन्थ का नाम 'वक्तृत्वकला के बीज' रखा गया है। वक्तृत्वकला की उपज के निमित्त यहाँ केवल बीज इकट्ठे किए गए हैं। बीजो का वपन किसलिए, कैसे, कब और कहा करना—यह वप्ता (बीच बोनेवालो) की भावना एव बुद्धिमत्ता पर निर्भर करेगा। फिर भी मेरी मनोकामना तो यही है कि वप्ता परमात्मपदप्राप्ति रूप फलो

के लिए शास्त्रोक्तविधि से अच्छे अवसर पर उत्तम क्षेत्रो मे इन बीजो का वपन करेगे। अस्तु !

यहाँ मैं इस बात को भी कहे बिना नही रह सकता कि जिन ग्रन्थो, लेखो, समाचार पत्रो एव व्यक्तियो से इस ग्रन्थ के सकलन मे सहयोग मिला है—वे सभी सहायक रूप से मेरे लिए चिरस्मरणीय रहेगे।

यह ग्रथ कई भागो मे विभक्त है एव उनमे सैकड़ो विषयो का सकलन है। उक्त सग्रह बालोतरा मर्यादा-महोत्सव के समय मैंने आचार्य श्रीतुलसी को भेट किया। उन्होने देखकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की एव फरमाया कि इसमे छोटी-छोटी कहानियाँ एव घटनाएँ भी लगा देनी चाहिये ताकि विशेष उपयोगी बन जाए। आचार्य श्री का आदेश स्वीकार करके इसे सक्षिप्त कहानियाँ तथा घटनाओ से सम्पन्न किया गया।

मुनिश्री चन्दनमलजी, डूगरमलजी, नथमलजी, नगराज जी, मधुकरजी, राकेशजी, रूपचन्दजी आदि अनेक साधु एव साध्वियो ने भी इस ग्रन्थ को विशेष उपयोगी माना। बीदासर-महोत्सव पर कई सतो का यह अनुरोध रहा कि इस संग्रह को अवश्य धरा दिया जाए।

सर्व प्रथम वि० स० २०२३ में श्री डूँगरगढ के श्रावको ने इसे धारणा शुरू किया। फिर थली, हरियाणा एवं पजाब के अनेक ग्रामो-नगरो के उत्साही युवको ने तीन वर्षो के अथक-परिश्रम से धारकर इसे प्रकाशन के योग्य बनाया।

मुझे दृढविश्वास है कि पाठकगण इसके अध्ययन, चिन्तन एव मनन से अपने बुद्धि-वैभव को क्रमश. बढाते जायेगे—

वि० न० २०२७ मृगसर वदी ४
मगलवार, रामामडी, (पजाब)

—धनमुनि 'प्रथम'

अनुक्रमणिका

मे पशु-पक्षी, ४ मनुष्य ससार, ५ मनुष्य का स्वभाव, ६ मनुष्य का कर्तव्य, ७ मनुष्य के लिए शिक्षाएँ, ८ मनुष्य का महत्व, ९ मनुष्य की दस अवस्थाएँ, १० मनुष्य के प्रकार, ११ मनुष्य जन्म की प्राप्ति १२ मनुष्य जन्म की श्रेष्ठता, १३ मनुष्य जन्म की दुर्लभता, १४ दुर्लभ मनुष्य जन्म को हारो मत, १५ मानवता, १६ आश्चर्यकारी मनुष्य, १७ आश्चर्यकारी मनुष्यणिया, १८ मनुष्य के विषय मे ज्ञातव्य वार्ते, १९ मनुष्य लोक, २० वैज्ञानिको के मतानुसार पृथ्वी आदि का जन्मकाल, २१ दृश्यमान जगत की आवादी, २२ भारत की कतिपय विशेप ज्ञातव्य बाते ।

चारो कोष्ठको मे कुल १०७ विषय तथा दस भागों मे लगभग १५०० विषय हैं ।

पाँचवां भाग

वक्तृत्वकला के बीज

पहला कोष्ठक

श्रीनाथजी

श्रावक

१

श्रावक की पूर्वभूमिका—

१ न्यायसम्पन्नविभव शिष्टाचार - प्रशसकः ।
कुलशीलसमं सार्द्धं, कृतोद्वाहोन्यगोत्रजे ॥४७॥
पापभीरु प्रसिद्ध च, देशाचार समाचरन् ।
अवर्णवादी न क्वापि, राजादिषु विशेषत. ॥४८॥
अनतिव्यक्तगुप्ते च, स्थाने सुप्रातिवेश्मिके ।
अनेकनिर्गमद्वार- विवर्जितनिकेतन ॥४९॥
कृतसङ्ग सदाचारै-र्मातापित्रोश्च पूजकः ।
त्यजन्नुपप्लुत स्थान-मप्रवृत्तश्च गर्हिते ॥५०॥
व्ययमायोचित कुर्वन्, वेष वित्तानुसारत ।
अष्टभिर्धीगुणैर्युक्त, शृण्वानो धर्ममन्वहम् ॥५१॥
अजीर्णे भोजनत्यागी, काले भोक्ता च सात्म्यत ।
अन्योन्याऽप्रतिबन्धेन, त्रिवर्गमपि साधयन् ॥५२॥
यथावदतिथौ साधौ, दीने च प्रतिपत्तिकृत् ।
सदाऽनभिनिविष्टश्च, पक्षपाती गुणेषु च ॥५३॥
अदेश कालयोश्चर्यां, त्यजन् जानन् वलावलम् ।
वृत्तस्थज्ञानवृद्धाना, पूजक पोष्यपोषक ॥५४॥

दीर्घदर्शी विशेषज्ञ, कृतज्ञो लोकवल्लभ ।
सलज्ज सदय· सौम्य, परोपकृतिकर्मठ· ॥५५॥
अन्तरङ्गारिषड्वर्ग - परिहार - परायण· ।
वशीकृतेन्द्रियग्रामो, गृहिधर्माय कल्पते ॥५६॥

—योगशास्त्र १

गृहस्थधर्म को पालन करने का पात्र अर्थात् श्रावक वह होता है, जिसमे निम्नलिखित विशेषताए हो—

(१) न्याय-नीति से धन उपार्जन करनेवाला हो।

(२) शिष्टपुरुषो के आचार की प्रशसा करनेवाला हो।

(३) अपने कुल और शील मे समान भिन्न गोत्रवालो के साथ विवाह-सम्बन्ध करनेवाला हो।

(४) पापो से डरनेवाला हो।

(५) प्रसिद्ध देशाचार का पालन करे।

(६) किसी की और विशेषरूप से राजा आदि की निन्दा न करे।

(७) ऐसे स्थान पर घर बनाए, जो न एकदम खुला हो और न एकदम गुप्त ही हो।

(८) घर से बाहर निकलने के द्वार अनेक न हो।

(९) सदाचारी पुरुषो की सगति करता हो।

(१०) माता-पिता की सेवा-भक्ति करे।

(११) रगडे-झगडे और बखेडे पैदा करनेवाली जगह से दूर रहे, अर्थात् चित्त मे क्षोभ उत्पन्न करनेवाले स्थान मे न रहे।

(१२) किसी भी निन्दनीय काम मे प्रवृत्ति न करे।

(१३) आय के अनुसार ही व्यय करे।

(१४) अपनी आर्थिकस्थिति के अनुसार वस्त्र पहने।

(१५) बुद्धि के आठ गुणो से युक्त होकर प्रतिदिन धर्म-श्रवण करे।

(१६) अजीर्ण होने पर भोजन न करे।

(१७) नियत समय पर सन्तोष के साथ भोजन करे।

(१८) धर्म के साथ अर्थ-पुरुषार्थ, काम-पुरुषार्थ और मोक्ष-पुरुषार्थ का इस प्रकार सेवन करे कि कोई किसी का बाधक न हो।

(१९) अतिथि, साधु और दीन-असहायजनो का यथायोग्य सत्कार करे।

(२०) कभी दुराग्रह के वशीभूत न हो।

(२१) गुणो का पक्षपाती हो—जहाँ कही गुण दिखाई दे, उन्हें ग्रहण करे और उनकी प्रशसा करे।

(२२) देश और काल के प्रतिकूल आचरण न करे।

(२३) अपनी शक्ति और अशक्ति को समझे। अपने सामर्थ्य का विचार करके ही किसी काम मे हाथ डाले, सामर्थ्य न होने पर हाथ न डाले।

(२४) सदाचारी पुरुषो की तथा अपने से अधिक ज्ञानवान् पुरुषो की विनय-भक्ति करे।

(२५) जिनके पालन-पोषण करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर हो, उनका पालन-पोषण करे।

(२६) दीर्घदर्शी हो अर्थात् आगे-पीछे का विचार करके कार्य करे।

(२७) अपने हित-अहित को समझे, भलाई-बुराई को समझे।

(२८) लोकप्रिय हो अर्थात् अपने सदाचार एवं सेवा-कार्य के द्वारा जनता का प्रेम सम्पादित करे।

(२९) कृतज्ञ हो अर्थात् अपने प्रति किये हुए उपकार को नम्रता-पूर्वक स्वीकार करे।

(३०) लज्जाशील हो, अर्थात् अनुचित कार्य करने मे लज्जा का अनुभव करे।

(३१) दयावान् हो।

(३२) सोम्य हो—चेहरे पर शान्ति और प्रसन्नता झलकती हो।

(३३) परोपकार करने मे उद्यत रहे। दूसरो की सेवा करने का अवसर आने पर पीछे न हटे।

(३४) काम-क्रोधादि आन्तरिक छह शत्रुओ को त्यागने मे उद्यत हो।

(३५) इन्द्रियो को अपने वश मे रखे।[1]

---

१ जैसे बीज बोने से पहले क्षेत्र-शुद्धि की जाती है। ऐसा न किया जाए तो यथेष्ट फल की प्राप्ति नही होती तथा दीवार खड़ी करने से पहले नीव मजबूत कर ली जाती है। नीव मजबूत न की जाय तो दीवार के किसी भी समय गिरजाने का खतरा रहता है। इसी प्रकार गृहस्थधर्म-श्रावकव्रत को अंगीकार करने से पहले आवश्यक जीवन-शुद्धि कर लेना उचित है। यहाँ जो बातें बतलाई गई हैं, उन्हे गृहस्थ-धर्म की नीव या आधार-भूमि समझना चाहिए। इस आधार-भूमि पर गृहस्थधर्म का जो भव्यप्रासाद खड़ा होता है, वह स्थायी होता है। उसके गिरने का भय नही रहता।

इन्हे मार्गानुसारी के ३५ गुण कहते हैं। इनमे कई गुण ऐसे हैं, जो केवल लौकिकजीवन मे सम्बन्ध रखते हैं। उन्हे गृहस्थ-धर्म का आधार बतलाने का अर्थ यह है कि वास्तव मे जीवन एक

अखण्डवस्तु है। अत लोक-व्यवहार मे और धर्म के क्षेत्र मे उसका विकास एक साथ होता है। जिसका व्यावहारिकजीवन पतित और गया-बीता होगा, उसका धार्मिकजीवन उच्चश्रेणी का नही हो सकता। अत व्रतमय जीवनयापन करने के लिए व्यावहारिकजीवन को उच्च बनाना परमावश्यक है। जब व्यवहार मे पवित्रता आती है, तभी जीवन धर्म-साधना के योग्य बन पाता है।

—योगशास्त्रकार श्री हेमचन्द्राचार्य के मन्तव्य से

२ श्रावक का स्वरूप

१. श्रद्धालुता श्रातिपदार्थचिन्तनाद्,
धनानि पात्रेषु वपत्यनारतम्।
किरत्यपुण्यानि सुसाधुसेवना-
-दतोपि तं श्रावकमाहुरुत्तमा ॥

—श्राद्धविधि, पृष्ठ ७२, श्लोक ३

श्रा—वह तत्त्वार्थचिन्तन द्वारा श्रद्धालुता को सुदृढ करता है।
व—निरन्तर सत्पात्रों मे धनरूप बीज बोता है।
क—शुद्धसाधु की सेवा करके पापधूलि को दूर फेंकता रहता है अत उसे उत्तमपुरुषो ने श्रावक कहा है।

२ श्रा-श्रद्धावान हो, व-विवेकी हो, क-क्रियावान हो, वह श्रावक है।

—घासीरामजी स्वामी

३. उपासन्ते सेवन्ते साधून्, इति उपासका श्रावका।

—उत्तराध्ययन २ टीका

साधुओं की उपासना-सेवा करते है अत श्रावक उपासक कह-लाते है।

४ श्रमणानुपास्ते इति श्रमणोपासक।

—उपासकदशा १ टीका

श्रमणो-साधुओ की उपासना करने से श्रावक श्रमणोपासक कहलाते हैं।

५ अपि दिब्बेसु कामेसु, रतिं सो नाधिगच्छति।
तिण्हक्खयरति होति, सम्मा स बुद्धसावको॥
—धम्मपद १९७

दिव्य काम-भोगो मे जिसे रति नही होती एव तृष्णा के क्षय होने से सुख होता है, वही बुद्ध का सच्चा श्रावक है।

६ सागारा अनगारा च, उभो अञ्ञोञ्ञ निस्सिता।
आराधयन्ति सद्धम्म, योगक्खेम अनुत्तर॥
—इतिवुत्तक ४।८

गृहस्थ और प्रव्रजित (साधु) दोनो ही एक-दूसरे के सहयोग से कल्याणकारी सर्वोत्तम सद्धर्म का पालन करते है।

३ श्रावक के गुण

१. कयवंयकम्मो तह सीलवं, गुणव च उज्जुववहारी ।
गुरु सुस्सूसो पवयण-कुसलो खलु सावगो भावे ।।

—धर्मरत्न प्रकरण ३३

(१) जो व्रतो का अनुष्ठान करनेवाला है, शीलवान है, (२) स्वाध्याय-तप-विनय आदि गुणयुक्त है, (३) सरल व्यवहार करनेवाला है, (४) सद्गुरु की सेवा करनेवाला है, (५) प्रवचनकुशल है, वह 'भावश्रावक' है ।

शील का स्वरूप इस प्रकार है—

(१) धार्मिकजनो युक्त स्थान मे रहना,

(२) आवश्यक कार्य के विना दूसरे के घर न जाना,

(३) भडकीली पोशाक नही पहनना,

(४) विकार पैदा करनेवाले वचन न बोलना,

(५) द्यूत आदि न खेलना,

(६) मधुरनीति से कार्यसिद्धि करना ।

इन छ शीलो से युक्त श्रावक 'शीलवान' होता है।

२. से जहानामए समणोवासगा भवंति । अभिगय-जीवाजीवा, उवलद्ध-पुण्ण-पावा, आसव-संवर-वेयणा -णिज्जरा-किरिया-हिगरण-बंध-मोक्ख-कुसला, असहेज्ज-देवासुर-नाग- सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्नर किंपुरिस-गरुल-गधव्व-महोरगा।इहि देव-गणेहिं निग्गन्थाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, इण-

मेव निग्गथपावयणे निस्सकिया णिक्कखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा अट्ठि-मिज्जपेमाणुरागरत्ता—"अयमाउसो ! निग्गथे पावयणे अट्ठे, अय परमट्ठे, सेसे अणट्ठे- ।" उसिय-फलिहा, अवगुय-दुवारा, अचियत्ततेउर-परघर-पवेसा, चाउद्दसट्ठ-मुद्दिट्ठ-पुण्णिमासिणीसु पडिपुन्न पोसह सम्म अणुपालेमाणा समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कम्बल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणा, बहूहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति । ते ण एयारूवेण विहारेण बहूइ वासाइ समणोवासग-परियाग पाउणति, पाउणित्ता आबाहसि, उप्पन्न सि वा अणुप्पन्न सि वा बहूइ भत्ताइ अणसणाए पच्चक्खायंति, बहूइ भत्ताइ अणसणाए पच्चक्खाएत्ता, बहूइ भत्ताइ अणसणाए छेदेति, बहूइ भत्ताइ अणसणाए छेइत्ता आलोइय-पडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति, त जहा—महड्ढिएसु महज्जुइएसु जाव महासुक्खेसु ।

—सूत्रकृताग श्रु० २।२।२४

जैसे कि कई श्रमणोपासक होते हैं। वे जीव-अजीव के ज्ञाता, पुण्य-पाप के रहस्य के जाननेवाले, आश्रव, संवर, वेदना निर्जरा, क्रिया, अधिकरण, बंध और मोक्ष के ज्ञान मे कुशल, किसी की सहायता से रहित, देव, असुर, किन्नर, यक्ष आदि देवगणो के

द्वारा निर्ग्रन्थप्रवचन से हटने के लिए बाध्य किये जाने पर, निर्ग्रन्थप्रवचन मे शङ्का, काङ्क्षा, विचिकित्सा से रहित, अर्थ-आशय को पाकर, ग्रहणकर, पूछकर निश्चय करनेवाले, जानने वाले, वे अस्थि-मज्जा मे निर्ग्रन्थ-प्रवचन के प्रेम से रगे हुए, उनका कहना है कि—"आयुष्मन् ! यह निर्ग्रन्थप्रवचन ही अर्थ है, परमार्थ है, इसके सिवा शेष व्यर्थ है।" उनके गृह-द्वारो की अर्गला खुली रहती है अर्थात् साधुओ के लिए उनके द्वार खुले रहते है। वे दूसरे के अत पुर या घर मे प्रवेश करने की लालसा नही रखते। वे चउदस, आठम, अमावस और पूनम के दिन प्रतिपूर्ण पौषध का सम्यक् पालन करते है। श्रमण-निर्ग्रन्थ को निरवद्य, एषणीय खान-पान, मेवा-मुखवास, वस्त्र पात्र, दवाई, पाट-पाटिए आदि देते है और बहुत से शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यानव्रत, पौषध-उपवास आदि ग्रहण किए हुए तप कर्मो के द्वारा आत्मा को भावित करते रहते हैं। इस प्रकार बहुत वर्षो तक श्रमणोपासक-अवस्था का पालन करके, रोगादि बाधायें उत्पन्न होने या न होने पर, अनशन करके और आलोचना प्रतिक्रमण करके, शाति से मरकर देवलोक मे महर्द्धिक, महा द्युतिवाले एव महासुखी देवता होते हैं।

२. धम्मरयणस्सजोगो, अक्खुद्दो रूवव पगइसोम्मो।
लोयप्पियो अक्कूरो, भीरु असठो सुदक्खिन्नो।
लज्जालुओ दयालु, मज्झत्थो सोम्मदिट्ठी गुणरागी।
सक्कह सपक्खजुत्तो, सुदीहदसी विसेसन्नू।
वुड्ढाणुगो विणीओ, कयन्नुओ परहिअत्थकारीय।
तह चेव लद्धलक्खो, एगवीसगुणो हवइ सड्ढो।
—प्रवचन सारोद्धार २३६ गाथा १३५६ से १३५८

सर्वज्ञभाषित धर्म के योग्य श्रावक के २१ गुण कहे हैं। यथा-

१ अक्षुद्र, २ रूपवान्, ३ प्रकृतिसौम्य, ४ लोकप्रिय, ५ अक्रूर ६ पापभीरु, ७ अशठ (छल नही करनेवाला), ८ सदाक्षिण्य (धर्मकार्य मे दूसरो की सहायता करनेवाला), ९ लज्जावान, १० दयालु, ११ रागद्वेषरहित (मध्यस्थभाव मे रहनेवाला), १२ सौम्यदृष्टिवाला, १३ गुणरागी, १४ सत्यकथन मे रुचि रखनेवाले - धार्मिकपरिवारयुक्त, १५ सुदीर्घदर्शी १६ विशेषज्ञ, १७ वृद्ध महापुरुषो के पीछे चलनेवाला, १८विनीत, १९ कृतज्ञ (किए हुए उपकार को समझनेवाला), २० परहित करनेवाला, २१ लब्धलक्ष्य (जिसे लक्ष्य की प्राप्ति प्राय हो गई हो।)

१. पञ्चे व अणुव्वयाइं, गुणव्वयाइ च हुति तिन्नेव ।
सिक्खावयाइ चउरो, सावगधम्मो दुवालसहा ।
—श्रावकधर्म प्रज्ञप्ति ६

पाच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, और चार शिक्षाव्रत—इस प्रकार 'श्रावकधर्म' बारह प्रकार का है ।

२. अगारि सामाइयंगाइ, सड्ढी काएण फासए ।
पोसहं दुहओ पक्ख, एगराय ण हावए ।।
—उत्तराध्ययन ५।२३

श्रद्धालु-श्रावक को नि शङ्कित आदि सामायिक के आठो अगो का पालन करना चाहिए। दोनो पक्षो मे अमावस्या-पूर्णिमा को पोषध करना चाहिए, कदाचित् दो न हो सके तो एक तो अवश्य करना ही चाहिए ।

श्रावक के प्रकार—

१. उवासगो दुविहो, पण्णत्ते, तं जहा—वती, अवती वा ।
—निशीथ उ० ११ चूर्णि

उपासक-श्रावक दो प्रकार के होते हैं—
व्रती, और अव्रती—(सम्यग्दृष्टि ।)

४ नामादि चउभेओ, सड्ढो भावेण इत्थ अहिगारो,
तिविहो य भावसड्ढो, दसण-वय-उत्तरगुणेहिं ।
—श्राद्धविधि गाथा ४

१ नामश्रावक, २ स्थापनाश्रावक, ३ द्रव्यश्रावक, ४ भाव-श्रावक, इस प्रकार श्रावक के चार भेद हैं। यहा भावश्रावक का अधिकार है।

भाव श्रावक के तीन प्रकार—

१ दर्शनश्रावक–कृष्ण-श्रेणिक आदिवत् अव्रतीसम्यग्दृष्टि,
२ व्रती श्रावक–पांच अणुव्रतधारी,
३ उत्तरगुणाश्रावक–सम्पूर्ण बारहव्रत धारण करनेवाला।

५ चवदै चूक्यो बारह भूल्यो, नही जाणै छ काया का नाम।
गांव ढढेरो फेरियो, श्रावक म्हारो नाम!

—राजस्थानी दोहा

६ चतारि समणोवासगा पण्णत्ता, त जहा—अम्मापिइसमाणे, भाइसमाणे, मित्तसमाणे, सवत्तिसमाणे।

—स्थानाङ्ग ४।३।३२१

चार प्रकार के श्रावक कहे हैं—

१ माता-पितासमान–एकान्त मे हितशिक्षा देकर साधुओ को सजग करनेवाले।

२ भाईसमान–साधुओ को प्रमादी देखकर चाहे ऊपर से क्रोध भी करे, किन्तु हृदय मे हित की इच्छा करनेवाले।

३ मित्रसमान–साधुओ के दोषो की उपेक्षा करके केवल गुण को लेनेवाले।

४ सपत्नीसमान–साधुओ के छिद्र देखनेवाले।

७ चतारि समणोवासगा पण्णत्ता, त जहा—अद्दागसमाणे, पडागसमाणे, खाणुसमाणे, खरकटसमाणे।

—स्थानाङ्ग ४।३।३२१

श्रावक चार प्रकार के कहे हैं—

१ दर्पण-समान—साधु के बताये हुए तत्व को यथावत् प्रतिपादन करनेवाले ।

२ पताका-समान—ध्वजावत् हवा के साथ इधर-उधर खीचे जानेवाले-अस्थिरमस्तिष्क के ।

३ स्थाणु-समान—सूखे लकडे की तरह कठोर—अपना कदाग्रह नही छोडनेवाले ।

४ कण्टक-समान—समझाने पर भी न मानकर कुवचनरूप-काँटा चुभानेवाले ।

५ श्रावक के विषय में विविध

श्रावक के चार विश्राम—

१. समणोवासगस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता, त जहा—जत्थ वि य ण सीलव्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ पडिवज्जइ, तत्थ वि य से एगे आसासे पन्नत्ते। जत्थ वि य ण सामाइय देसावगासिय सम्ममणुपालेइ, तत्थ वि य से एगे आसासे पन्नत्ते। जत्थ वि य ण चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णिमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह सम्म अणुपालेइ, तत्थ वि य से एगेआसासे पन्नत्ते। जत्थ वि य ण अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणाभूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालमणवकखमाणे विहरइ, तत्थ वि य से एगे आसासे पन्नत्ते। —स्थानाङ्ग ४।३।३१४

भारवाहक की भाँति श्रावक के चार विश्राम हैं—

१ जिन समय श्रावक पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, नवकारसी आदि प्रत्याख्यान तथा अष्टमी-चतुर्दशी आदि के दिन उपवास धारण करता है, उस समय प्रथम विश्राम होता है।

२ जब श्रावक सामायिक एव देशावकाशिक व्रत का पालन करता है, तब दूसरा विश्राम होता है।

३ चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा आदि पर्व-तिथियों

दसवीं प्रतिमा मे श्रावक अपने लिए बनाया हुआ भोजन नही करता। कोई हजामत करवाता है एव कोई शिखा भी रखता है। घरसम्बन्धी कार्यों के विषय मे पूछने पर **मैं जानता हू या नहीं जानता** इन दो वाक्यो से ज्यादा नही बोल सकता।

ग्यारहवीं प्रतिमा मे श्रावक साधु के समान वेष धारण करता है एव प्रतिलेखन आदि क्रियाए करता है, लेकिन सामारिक प्रेम व अपमान के भय से अपने स्वजन-सम्बन्धियो के घरो से ही भिक्षा लेता है तथा क्षुर मे हजामत करता है और कोई-कोई साधु की तरह लोच भी करता है।

४. श्रावक श्री रूपचन्दजी–

जन्म १६२३ जेठ सुदी १०, स्वर्गवास १६८३ फाल्गुन सुदी ७, एक घटा पांच मिनट का संथारा। स्नान मे पांच सेर जल, घटाते-घटाते अन्त मे ४५ तोला रखा। रेल मे जलपान भी नही, वि. स १६७२ के बाद रेल का त्याग। छत्ता नही, शयन मे तकिया नही। जबान के पाबन्द, स्पष्टवक्ता, कपडा ५६ हाथ, सामायिक-पौषध मे प्राय फिरते नही, सहारा लेते नही। सामायिक अन्तिम दिन तक, **आचार्य डालगणी** की विशेष कृपा।

—'श्रावक रूपचन्दजी' पुस्तक से

सामायिक

१. समानि ज्ञान-दर्शन-चारित्राणि, तेषु अयन-गमन समाय, स एव सामायिकम् ।

मोक्षमार्ग के साधन ज्ञान-दर्शन-चारित्र सम कहलाते हैं, उनमे अयन यानी प्रवृत्ति करना **सामायिक** है ।

२. समभावो सामाइय, तण-कचण-सत्तु-मित्त विसउ त्ति ।
णिरभिस्सग चित्त, उचियपवित्तिप्पहाण च ।

—पचाशक

चाहे तिनका हो, चाहे सोना, चाहे शत्रु हो, चाहे मित्र, सर्वत्र अपने मन को राग-द्वेष की आसक्ति से रहित रखना तथा पाप-रहित उचित धार्मिकप्रवृत्ति करना, 'सामायिक' है, समभाव ही सामायिक है ।

३ समता सर्वभूतेषु, सयम शुभ-कामना ।
आर्तरौद्र-परित्याग-स्तद्धि सामायिक व्रतम् ॥

सब जीवो पर समता-समभाव रखना, पाँच इन्द्रियो का संयम-नियत्रण करना, अन्तर्हृदय मे शुभभावना शुभसकल्प रखना, आर्त-रौद्र दुर्ध्यानो का त्याग करके धर्मध्यान का चिन्तन करना 'सामायिक' है ।

४ त्यक्तार्त-रौद्र ध्यानस्य, त्यक्तसावद्यकर्मण ।
मुहूर्त्त समता या ता, विदु सामायिक व्रतम् ॥

—योगशास्त्र ३।८२

आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान का त्याग करके तथा पापमय कर्मों का त्याग करके मुहूर्त-पर्यन्त समभाव मे रहना 'सामायिकव्रत' है।

५. सामाइय नाम सावज्जजोगपरिवज्जण निरवज्जजोग-पडिसेवण च। —आवश्यक-अवचूरि

सावद्य अर्थात् पापजनक कर्मों का त्याग करना और निरवद्य अर्थात् पापरहित कार्यों को स्वीकार करना 'सामायिक' है।

६ आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे। —भगवती १।६

हे आर्य! आत्मा ही सामायिक है और आत्मा ही सामायिक का अर्थ-फल है।

सामायिक का महत्त्व—

७ सामाइयम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा।
एएण कारणेण, बहुसो सामाइय कुज्जा॥
—विशेषावश्यक-भाष्य २६९०
—तथा आवश्यक-निर्युक्ति ८००।१

सामायिकव्रत भलीभाति ग्रहण करलेने पर श्रावक भी साधु जैसा हो जाता है, आध्यात्मिक-उच्चदशा को पहुच जाता है, अत श्रावक का कर्त्तव्य है कि वह अधिक से अधिक सामायिक करे।

८ सामाइय-वय-जुत्तो, जाव मणो होइ नियमसंजुत्तो।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा॥
—आवश्यकनिर्युक्ति ८००।२

चंचल मन को नियत्रण मे रखते हुए जब तक सामायिक व्रत की अखण्डधारा चालू रहती है तब तक अशुभकर्म बराबर क्षीण होते रहते हैं।

९. जे के वि गया मोक्ख, जेवि य गच्छति जे गमिस्सति ।
ते सव्वे सामाइय- पभावेण मुणेयव्व ॥

जो भी साधक अतीतकाल मे मोक्ष गये है, वर्तमान मे जा रहे हैं और भविष्य मे जायेंगे, यह सब सामायिक का प्रभाव है ।

१० किं तिव्वेण तवेण, किं जवेण किं चरित्तेण ।
समयाइ विण मुक्खो, न हु हूओ कहवि न हु होइ ॥

—सामायिकप्रवचन, पृष्ठ ७८

चाहे कोई कितना ही तीव्र तप तपे, जप-जपे अथवा मुनि-वेष धारण कर स्थूल क्रियाकाण्डरूप चारित्र पाले, परन्तु समताभाव रूप सामायिक के विना न किसी को मोक्ष हुआ है और न होगा ।

☼

७ सामायिक के विषय में विविध

१. **सामायिक के अधिकारी—**

जो समो सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य।
तस्स सामाइय होइ, इइ केवलि-भासिय ॥
जस्स सामाणिओ अप्पा सजमे णियमे तवे।
तस्स सामाइय होइ, इइ केवलि - भासिय ॥

जो साधक त्रस-स्थावररूप सभी जीवो पर समभाव रखता है, उसी का सामायिक शुद्ध होता है—ऐसा केवली-भगवान् ने कहा है।

जिसकी आत्मा सयम, तप और नियम मे सलग्न हो जाती है, उसी का सामायिक शुद्ध होता है—ऐसा केवली-भगवान् ने कहा है।

२ **सामायिक के भेद—**

दुविहे सामाइए पण्णत्ते, त जहा—आगारसामाइए चेव, अणगारसामाइए चेव। —स्थानाङ्ग २।३

सामायिक दो प्रकार का कहा है—
(१) आगारसामायिक और (२) अनगार सामायिक।

३ **सामायिक के अतिचार—**

एयस्स नवमस्स सामाइयवयस्स, पच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—मण-दुप्पणिहाणे, वय-दुप्प

णिहाणे, काय-दुप्पणिहाणे, समाइयस्स सइ-अकरणया, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

—श्रावक-आवश्यक

इस नौवें सामायिकव्रत के पाच अतिचार जानने योग्य हैं, लेकिन श्रावक के लिए वे आचरने योग्य नही । यथा—

१ मन की दुष्प्रवृत्ति, २ वचन की दुष्प्रवृत्ति, ३ काया की दुष्प्रवृत्ति, ४ सामायिक की स्मृति न रखना, ५ सामायिक को अव्यवस्थित करना ।

४. सामायिक के ३२ दोष—

१ मन के दस दोष—

अविवेक जसो-कित्ती, लाभत्थी गव्व-भय नियाणत्थी ।
ससय-रोस अविणओ, अवहुमाणए दोसा भाणियवा ॥

१ अविवेक, २ यश-कीर्ति, ३ लाभार्थ ४ गर्व ५ भय ६ निदान ७ संशय ८ रोष ९ अविनय १० अवहुमान ।

२ वचन के दस दोष—

कुवयण-सहसाकारे, सच्छंद-सखेव कलहं च ।
विगहा विहासोऽसुद्ध, निरवेक्खो मुणमुणा दस दोसा ॥

१ कुवचन २ सहसाकार, ३ स्वच्छन्द, ४ संक्षेप, ५ कलह, ६ विकथा, ७ हास्य, ८ अशुद्ध, ९ निरपेक्ष, १० मुम्मन ।

३. काय के बारह दोष—

कुआसण चलासण चलादिट्ठी,
सावज्जकिरिया-लंवणा-कुंचण-पसारण च।
आलस-मोडन-मल-विमासण,
निद्दा वेयावच्चत्ति, वारस कायदोसा॥

—सामायिकप्रवचन, पृष्ठ १२

१ कुआसन, २ चलासन, ३ चलदृष्टि, ४ सावद्य क्रिया, ५ आलंबन, ६ आकुञ्चन-प्रसारण, ७ आलस्य, ८ मोडन ९ मल, १० विमासन, ११ निद्रा, १२ वैयावृत्य।

(इनका विवेचन देखो श्रावक धर्मप्रकाश पुंज ६ में)

८ सामायिक का प्रभाव

१ **गीदड़बाहा** का एक जैनश्रावक मानसामडी से १८ हजार रुपये लेकर बस मे जा रहा था। डाकू मिले और बोले दिखाओ सब अपना-अपना सामान ! श्रावक ने मुहपत्ति पूजनी एव माला दिखाकर कहा—मेरे सामायिक का नियम है। डाकू बोले—मुहपट्टिए का चेला है। ये साधु अच्छे होते हैं, यो कहकर श्रावक को छोड दिया—अन्य सभी को लूट कर धन-माल ले गये।

२ **उदयचन्द** सुराना का पन्ने का कठा एक आदमी ले गया। समता रखी। फिर सामायिक करते समय एक दिन वापिस पहना गया।

३ डाकू आनेवाले थे, घर के सब द्वार खोलकर सेठ ने सपरिवार सामायिक ले लिया। साधु समझकर डाकू वापस लौट गये।

☼

९ नाम की सामायिक

१. सामायिक मे समता भाव, गुड की भेली कुत्ता खाय।

—राजस्थानी कहावत

● सास घर में सामायिक कर रही थी। इतने मे एक कुत्ता आया। वहू ने ध्यान नही दिया। सास से रहा नही गया और नवकार-मंत्र का जाप करती हुई कहने लगी—

लंबड़ पुंछो लंका पेटो घर मे पेठोजी ! णमो अरिहंताणं।

वहू समझ तो गई, लेकिन कुत्ते को न निकाल कर अपना काम करती रही। कुत्ता रसोई मे घुसने लगा। तब सास ने कहा—

उज्जलदन्तो काबरचित्तो रसोई को किंवाड़ खोल्यो जी ! णमो सिद्धाणं।

फिर भी वह ने गौर नहीं किया।

सास पुन वोली—

दूध-दही रा चाडा फोड्या घी कै चाडै ढूक्योजी ! णमो आयरिआण।

इतने पर भी वहू नही आई, तब झुभलाकर सास ने फिर कहा—

उजाड़ तो इण वहुलो कीघो वहुवर भेद न पायोजी ! णमो उवज्झायाणं।

आखिर हस कर वहू ने इस प्रकार मत्र की पूर्ति की—
सामायिक तो मारे पिहरे भी करता पण आ किरिया नहीं देखीजी ! णमो लोए सव्वसाहूणं ।

३. सेठ सामायिक कर रहे थे । वहू घर मे काम कर रही थी । बाहर से सेठ को पूछता हुआ एक आदमी आया । बहू ने कहा–सेठजी मोची की दुकान पर जूते खरीद रहे है । जाकर देखा तो वहां न मिले । वापिस आकर पूछा । उत्तर मिला कि अब कपडे की दुकान पर कपडा देख रहे हैं । वहा जाकर भी खाली आया । वहू बोली–वे तो इन्कम-टेक्स के दफ्तर मे गये है । इस प्रकार आगन्तुक को कई जगह घुमाकर अत मे कहने लगी अब सेठजी सामायिक कर रहे है । इतने मे सेठ सामायिक करके बाहर आये । और वहू पर क्रुद्ध होने लगे । वहू ने विनम्र शब्दो मे कहा-पिताजी ! केवल मुँह वाधने से सामायिक नही होती, बतलाइए आप सामायिक करते समय मन से मोची आदि के यहा गये थे या नही ! सेठजी चुप रहे क्यो कि वास्तव मे बहू की बात सत्य थी ।

☼

१० पौषध

१ पोप धर्मस्य धत्तो यत्, तद्भवेत् पौपधव्रतम् ।

—उपदेशप्रासाद

जो व्रत धर्म को पुष्ट बनाता है, उसे **पौषधव्रत** कहते हैं।

२. आहार-तनुसत्कारा-ऽब्रह्म-सावद्यकर्मणाम् ,
त्यागः पर्वचतुष्टय्या, तद्विदु पौपधव्रतम् ।

—धर्मसग्रह १।३७

आहार, शरीर का सत्कार, अब्रह्मचर्य, और सावद्यकार्य-चारो पर्व तिथियो (अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्य और पूर्णिमा) मे इन सबका त्याग करना **पौषधव्रत** है ।

३ बौद्ध परम्परा मे पौपध की भाँति उपोसथ का विधान है। बुद्ध के अनेक भक्त (उपासक) अष्टमी चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा को उपोसथ किया करते थे। (देखें- पेटावत्थु अट्ठकथा गाथा २०९ तथा विनयपिटक महावग्ग) उपोसथ मे उपासक निम्न आठ शीलका पालन करता है— (१) प्राणातिपात-विरति, (२) अदत्तादान-विरति, (३) काय भावना-विरति, (४) मृपावाद-विरति, (५) मादक द्रव्यो का सेवन नही करना, (६) विकाल भोजन नही करना, (७) नृप, गीत, शरीर की विभूपा आदि नही करना, (८) उच्चासन तथा महा-घगी शय्या का त्याग करना ।

—आगम और त्रिपिटक . एक अनुशीलन पृष्ठ ६५

तप

१. तापयति अष्टप्रकार कर्म इति तप ।

—आवश्यक मलयगिरि खण्ड २ अ १

जो आठ प्रकार के कर्मों को तपाता है, उसका नाम 'तप' है।

२ इन्द्रियमनसोर्नियमानुष्ठान तप ।

—नीतिवाक्यामृत १।२२

पाँच इन्द्रिय (स्पर्शन-रसना-घ्राण-चक्षु-श्रोत्र) और मन को वश मे करना या बढती हुई लालसाओ को रोकना तप है।

३ वेदस्योपनिषत् सत्य, सत्यस्योपनिषद् दम ।
दमस्योपनिषद् दानं, दानस्योपनिषत् तप ॥

—महाभारत शान्ति पर्व अ० २५१।११

वेद का सार है सत्यवचन, सत्य का सार है इन्द्रियो का संयम, सयम का सार है दान और दान का सार है 'तपस्या'।

४ तपो हि परम श्रेय , समोहमितरत्सुखम् ।

—वाल्मीकिरामायण ७।८४।९

तप ही परम कल्याणकारी है। तप से भिन्न सुख तो मात्र बुद्धि के सम्मोह को उत्पन्न करनेवाला है।

५. तपस्या जीवन की सब से बडी कला है। —गाधी

६ परक्कमिज्जा तवसंजमम्मि। —दशवैकालिक ८।४१

तप-सयम मे पराक्रम करना चाहिए।

१२ तप से लाभ

१. तवेण परिसुज्झइ । —उत्तराध्ययन २८।३५

तपस्या से आत्मा पवित्र होती है ।

२. तवेण वोदाण जणयइ । —उत्तराध्ययन २९।२७

तपस्या से व्यवदान अर्थात् कर्मो की शुद्धि होती है ।

३. भवकोडीसचिय कम्म, तवसा निज्जरिज्जइ ।

—उत्तराध्ययन २०।६

करोडो भवो के संचित कर्म तपस्या से जीर्ण होकर झड जाते हैं ।

४. तपसा प्राप्यते सत्त्व सत्त्वात् सप्राप्यते मन ।
मनसा प्राप्यते त्वात्मा, ह्यात्मापत्त्या निवर्त्तते ॥

—मैत्रायणी आरण्यक १।४

तप द्वारा सत्त्व (ज्ञान) प्राप्त होता हैं, सत्त्व से मन वश मे आता है, मन वश मे आने से आत्मा की प्राप्ति होती है और आत्मा की प्राप्ति हो जाने पर ससार से छुटकारा मिल जाता है ।

५. तपसैव महोग्रेण, यद्दुराप तदाप्यते ।

—योगवाशिष्ठ ३।९८।१४

जो दुष्प्राप्य वस्तुए हैं, वे उग्रतपस्या से ही प्राप्त होती हैं ।

६. यद्दुस्तर यद्दुराप, यद्दुर्ग यच्च दुष्करम् ।
सर्वं तु तपसा साध्य, तपो हि दुरतिक्रमम् ॥

—मनुस्मृति ११।२३८

जो दुस्तर है, दुष्प्राप्य है, दुर्गम है, और दुष्कर है—वह सब तप द्वारा सिद्ध किया जा सकता है, क्योंकि तप दुरतिक्रम है। इसके आगे कठिनता जैसी कोई चीज नही है।

७. तपसा च कृत शुद्धो, देहो न स्यान्मलीमस ।

—हिंगुलप्रकरण

तपस्या से शुद्ध किया हुआ शरीर फिर मैला नही होता।

८. तवसा अवहट्टलेस्सस्स, दंसण परिसुज्झइ।

—दशाश्रुत स्कन्ध ५।६

तपस्या से लेश्याओ को सवृत करनेवाले व्यक्ति का दर्शन-सम्यक्त्व परिशोधित होता है।

☸

१२ तप से लाभ

१. तवेण परिसुज्झइ । —उत्तराध्ययन २८।३५

तपस्या से आत्मा पवित्र होती है ।

२. तवेण वोदाणं जणयइ । —उत्तराध्ययन २९।२७

तपस्या से व्यवदान अर्थात् कर्मों की शुद्धि होती है ।

३. भवकोडीसंचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ।

—उत्तराध्ययन ३०।६

करोडों भवों के संचित कर्म तपस्या से जीर्ण होकर झड़ जाते हैं ।

४. तपसा प्राप्यते सत्त्वं सत्त्वात् संप्राप्यते मनः ।
मनसा प्राप्यते त्वात्मा, ह्यात्मापत्त्या निवर्त्तते ॥

—मैत्रायणी आरण्यक १।४

तप द्वारा सत्त्व (ज्ञान) प्राप्त होता है, सत्त्व से मन वश में आता है, मन वश में आने से आत्मा की प्राप्ति होती है और आत्मा की प्राप्ति हो जाने पर संसार से छुटकारा मिल जाता है ।

५. तपसैव महोग्रेण, यद्दुरापं तदाप्यते ।

—योगवाशिष्ठ ३।९८।१४

जो दुष्प्राप्य वस्तुएं हैं, वे उग्रतपस्या से ही प्राप्त होती हैं ।

६. यद्दुस्तरं यद्दुरापं, यद्दुर्गं यच्च दुष्करम् ।
सर्वं तु तपसा साध्यं, तपो हि दुरतिक्रमम् ॥

—मनुस्मृति ११।२

जो दुस्तर है, दुष्प्राप्य है, दुर्गम है, और दुष्कर है—वह सब तप द्वारा सिद्ध किया जा सकता है, क्योकि तप दुरतिक्रम है। इसके आगे कठिनता जैसी कोई चीज नही है।

७. तपसा च कृत शुद्धो, देहो न स्यान्मलीमस।

—हिंगुलप्रकरण

तपस्या से शुद्ध किया हुआ शरीर फिर मैला नही होता।

८ तवसा अवहट्टलेस्सस्स, दसणं परिसुज्झइ।

—दशाश्रुत स्कन्ध ५।६

तपस्या मे लेश्याओ को सवृत करनेवाले व्यक्ति का दर्शन-सम्यक्त्व परिशोधित होता है।

१३ तप कैसे और किसलिये ?

१. बल थाम च पेहाए, सद्धामारोग्गमप्पणो ।
खेत्त काल च विन्नाय तहप्पाण निजुजए ॥

—दशवैकालिक ८।३५

अपना बल, दृढता, श्रद्धा आरोग्य तथा क्षेत्र-काल को देखकर आत्मा को तपश्चर्या मे लगाना चाहिए ।

२ तदेव हि तप कार्यं, दुर्ध्यान यत्र नो भवेत् ।
ये न योगा न हीयन्ते, क्षीयन्ते नेन्द्रियाणि च ।

—तपोष्टक (यशोविजयकृत)

तप वैसा ही करना चाहिए, जिसमे दुर्ध्यान न हो, योगो मे हानि न हो और इन्द्रियां क्षीण न हो ।

३. नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा ।

—दशवैकालिक ९।४

केवल कर्म-निर्जरा के लिए तपस्या करना चाहिए । इहलोक-परलोक व यश कीर्ति के लिए नहीं ।

४. णो पूयण तवसा मावहेज्जा ।

—सूत्रकृताग ७।२७

तपस्या द्वारा पूजा की इच्छा न करनी चाहिए ।

५. तेसिं पि न तवो सुद्धो ।

—सूत्रकृतांग ८।२४

जो कीर्ति आदि की कामना से तप करते हैं, उनका तप शुद्ध नहीं है ।

६. न हु बालतवेण मुक्खुत्ति ।

—आचारांग निर्युक्ति २१४

अज्ञान-तप से कभी मुक्ति नहीं मिलती ।

१४ तप के भेद

१. सो तवो दुविहो वुत्तो, वाहिरब्भितरो तहा ।
वाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भितरो तवो ॥

—उत्तराध्ययन ३०।८

तप दो प्रकार का है—वाह्य और आभ्यन्तर । वाह्यतप अनशन आदि छः प्रकार का है एव आभ्यन्तर तप के प्रायश्चित्त आदि छ भेद हैं ।

२. अणसणमूणोयरिया, भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ ।
कायकिलेसो सलीणया य, वज्झो तवो होइ ।
पायच्छित्त विणओ, वेयावच्च तहेव सज्झाओ ।
झाण च विउस्सग्गो, एस अब्भितरो तवो ।

—उत्तराध्ययन ३०

वाह्य तप के छः भेद हैं— १ अनशन, २ ऊनोदरी, ३ भिक्षाचरी, ४ रसपरित्याग, ५ कायक्लेश, ६ प्रतिसलीनता ।

आभ्यन्तरतप के छ भेद हैं— १ प्रायश्चित्त, २ विनय, ३ वैयावृत्त्य, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान, ६ कायोत्सर्ग ।

३. देव-द्विज-गुरु-प्राज्ञ-पूजन शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च, शारीर तप उच्यते ॥ १४ ॥
अनुद्वेगकरं वाक्यं, सत्य प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव,वाङ्मयं तप उच्यते॥ १५ ॥

मन प्रसाद सौम्यत्व, मौनमात्मविनिग्रह ।
भावसशुद्धिरित्येतत्, तपो मानसमुच्यते ॥ १६ ॥
श्रद्धया परया तप्त, तपस्तत्त्रिविध नरै ।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तै, सात्त्विक परिचक्षते ॥ १७ ॥
सत्कारमानपूजार्थ, तपो दम्भेन चैव यत् ।
क्रियते तदिह प्रोक्त, राजस चलमध्रुवम् ॥ १८ ॥
मूढाग्रहेणात्मनो यत्, पीडया क्रियते तप ।
परस्योत्सादनार्थ वा, तत्तामसमुदाहृतम् ॥ १९ ॥

—गीता १७।

देवता ब्राह्मण, गुरु एव ज्ञानीजनो का पूजन, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा—ये शारीरिक तप है।

दूसरो को उद्विग्न न करनेवाले सत्य, प्रिय हितकारी वचन और सत्-शास्त्रो का अध्ययन-वाचिक(-वाणी का) तप कहलाता है।
मन की प्रसन्नता, शान्तभाव, मौन, आत्मसयम और भावो की पवित्रता मानसिक(-मन का) तप कहा जाता है।

पूर्वोक्त तीनो प्रकार का तप यदि फल की आकाक्षा किए विना परम श्रद्धापूर्वक किया जाए तो वह सात्विक कहलाता है, यदि वह तप सत्कार, मान एव पूजा-प्राप्ति के लिए दंभपूर्वक किया जाए तो वह राजस कहा गया है, उसके फलस्वरूप क्षणिक-भौतिक सुख मिल जाता है। अविवेकियो द्वारा दुराग्रहवश जो शरीर को पीडित किया जाता है अथवा दूसरो का नाश करने के लिए जो तप किया जाता है वह तामस कहा गया है।

☼

१५ अनशन

१. तपोनानशनात् परम् ।

यद्धि पर तपस्तद् दुर्धर्पम् तद् दुराधर्पम् ॥

—मैत्रायणी आरण्यक १०।६२

अनशन मे वढकर कोई तप नही है, साधारण साधक के लिए यह परम तप दुर्धर्प है अर्थात् सहन करना वडा ही कठिन है ।

२ आहार पच्चक्खाणेण जीवियाससप्पओगं वोच्छिदइ ।

—उत्तराध्ययन २६।३५

आहार प्रत्याख्यान अर्थात् अनशन से जीव आशा का व्यवछेद करता है यानी जीवन की लालसा से छूट जाता है ।

३. विपया विनिवर्तन्ते, निराहारस्य देहिन ।

—गीता २।५६

आहार का त्याग करनेवाले व्यक्ति से शव्दादि इन्द्रियो के विपय निवृत्त हो जाते हैं ।

४. अणसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–इत्तरिए य, आवकहिए य इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते, त जहा—चउत्थे भत्ते, छट्ठे भत्ते .... जाव छम्मासिए भत्ते ।

आवकहिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—

पाओवगमणे य, भत्तपच्चक्खाणे य । —भगवती २५·७

अनशन—आहार त्याग दो प्रकार का कहा है—
(१) इत्वरिक (२) यावत्कथिक।

इत्वरिक के अनेक भेद हैं—चतुर्थभक्त—उपवास, षष्ठभक्त—वेला, यावत् षाण्मासिकभक्त (छ महिनो का तप)।

यावत्कथिक—यावज्जीवन आहारत्याग दो प्रकार का कहा है—
(१) पादपोपगमन (२) भक्तप्रत्याख्यान।

५ जो सो इत्तरिओ तवो, सो समासेण छव्विहो।
सेढितवो पयरतवो,घणो य तह होइ वग्गो य ॥ १० ॥
तत्तो य वग्गवग्गो, पचम छट्ठओ पइण्णतवो।
मणइच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥ ११ ॥
—उत्तराध्ययन अ० ३०

इत्वरिक तप सक्षिप्तरूप मे छः प्रकार का है—
(१) श्रेणितप, (२) प्रतरतप, (३) घनतप, (४) वर्गतप, (५) वर्ग-वर्गतप, (६) प्रकीर्णतप—यह इत्वरिक तप मन-इच्छित फल देनेवाला है।

६ सवच्छरं तु पढम, मज्झिमगाणट्ठमासिय होई।
छम्मासं पच्छिमस्स उ, माण भणिय तवुक्कोस ॥
—व्यवहारभाष्य उ० १

प्रथमतीर्थंकर का एक वर्ष, मध्यतीर्थंकरो का अष्टमास एव चरमतीर्थंकर का उत्कृष्ट तप षट्मास था।

१६. उपवास

१ चतुर्विधाशनत्याग उपवासो मतो जिनै ।

—सुभाषितरत्न-सदोह

अशन आदि चारो प्रकार के आहार का त्याग करना भगवान के द्वारा उपवास माना गया है ।

२. उपवास स विज्ञेय:, सर्वभोगविवर्जित ।

—मार्गशीर्ष-एकादशी

सभी भोगो का त्याग करना उपवास नामक व्रत है ।

३ आरोग्य रक्षा का मुख्य उपाय है उपवास ।

४ मर्यादा मे रहकर उपवास करने से बहुत लाभ होता है ।

५. साधु एक उपवास मे जितने कर्म खपाता है, उतने कर्म हजारो वर्ष मे भी नरक के जीव नही खपा सकते । बेले मे साधु जितने कर्मो का नाश करता है, नारक-जीव लाखो वर्षो मे उतने कर्म नही खपा सकते । साधु तेले मे जितनी कर्म-निर्जरा करता है, नारक-जीव उतनी कर्म-निर्जरा करोडों वर्षो मे भी नही कर सकते । साधु चोले मे जितने कर्म नष्ट करता है, नारक-जीव कोटि-कोटि वर्षो मे भी उतने कर्म नष्ट नही कर सकते ।

—भगवती १६।४

६. **(क) उपवास से पहले तीन बातें मत करो—**

(१) गरिष्ठ भोजन, (२) अधिक भोजन, (३) चटपटा सुस्वादु भोजन।

(ख) उपवास में तीन बातें मत करो।

(१) क्रोध, (२) अहंकार, (३) निन्दा।

(ग) उपवास मे तीन बातें अवश्य करो!

१ ब्रह्मचर्य का पालन, २ शास्त्र का पठन, ३ आत्म-स्वरूप का चिन्तन।

(घ) तीन को उपवास नहीं करना चाहिए—

१ गर्भवती स्त्री को, २ दूध पीते बच्चे की माता को, ३ दुर्बल-अजीर्ण के रोगी को।

—'तीन बातें' नामक पुस्तक से

१७ प्रायश्चित्त

१. प्राय' पाप विनिर्दिष्टं, चित्त तस्य विशोधनम् ।

—धर्मसंग्रह ३ अधिकार

प्राय का अर्थ पाप है और चित्त का अर्थ उम पाप का शोधन करना है अर्थात् पाप को शुद्ध करनेवाली क्रिया का नाम प्रायश्चित्त है ।

२. अपराधो वा प्राय चित्त-शुद्धि प्रायस चित्त प्रायश्चित्त—अपराध-विशुद्धि ।

—राजवार्तिक ६।२२।१

अपराव का नाम प्राय है और चित्त का अर्थ शोधन है । प्रायश्चित्त अर्थात् अपराव की शुद्धि ।

३. पावं छिंदइ जम्हा, पायच्छित्त ति भण्णइ तेण ॥

—पचाशक सटीक विवरण १६।३

पाप का छेदन करता है अत प्राकृत भाषा मे इसे 'पायच्छित्त' कहते हैं ।

४. प्रायइत्युच्यते लोक-स्तस्य चित्त मनो भवेत् ।
तच्चित्त-ग्राहकं कर्म, प्रायश्चित्तमिति स्मृतम् ॥

—प्रायश्चित्तसमुच्चयवृत्ति

प्राय: का अर्थ लोक-जनता है एवं चित्त का अर्थ मन है । जिस क्रिया के द्वारा जनता के मन मे आदर हो, उस क्रिया का नाम प्रायश्चित्त है ।

५. पाप को शुद्धहृदय से मान लेना भी प्रायश्चित्त है।
गांधी जी ने कर्जदार से तग आकर एक बार घर से एक तोला सोना चुराकर कर्ज तो चुका दिया, किंतु चोरी के अपराध से हृदय झुलसने लगा। लज्जावश सामने कहने का साहस न होने से पिता को एक पत्र लिखा एव भविष्य मे ऐसा काम न करने का दृढसकल्प किया। पिता ने माफी दे दी।

६ **प्रायश्चित्त की तीन सीढ़ियां होती हैं—**
१ आत्मग्लानि, २ पाप न करने का निश्चय, ३ आत्मशुद्धि।
—जुन्नेद बगदादी

प्रायश्चित से लाभ—

१ पायच्छित्तकरणेण पावकम्मविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ। सम्म च ण पायच्छित्त पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफल च विसोहेइ, आयार च आयारफल च आराहेइ।
—उत्तराध्ययन २६।१६

प्रायश्चित्त करने से जीव पापो की विशुद्धि करता है एव निर-तिचार-निर्दोष बनता है। सम्यक् प्रायश्चित्त अगीकार करने से जीव सम्यक्त्व एवं सम्यक्त्व के ज्ञान को निर्मल करता है तथा चारित्र एव चारित्रफल-मोक्ष की आराधना करता है।

प्रायश्चित्त के भेद

१. पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते, त जहा—आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे,विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेदारिहे, मूलारिहे, अणवट्ठप्पारिहे, पारचियारिहे।

—स्थानाङ्ग १०।७३० तथा भगवती २५।७।७९९

प्रायश्चित्त के दस भेद कहे हैं—

१ आलोचनार्ह, २ प्रतिक्रमणार्ह, ३ तदुभयार्ह, ४ विवेकार्ह, ५ व्युत्सर्गार्ह, ६ तपार्ह, ७ छेदार्ह, ८ मूलार्ह, ९ अनवस्थाप्यार्ह, १० पाराञ्चिकार्ह ।

(१) आलोचनार्ह—

सयम मे लगे हुए दोष को गुरु के समक्ष स्पष्ट वचनो से सरलतापूर्वक प्रकट करना आलोचना है। आलोचना मात्र से जिस दोष की शुद्धि हो जाए, उसे **आलोचनार्ह-दोष** कहते हैं। ऐसे दोष की आलोचना करना **आलोचनार्ह-प्रायश्चित्त** है। गोचरी—पञ्चमी आदि में लगे हुए अतिचारो की जो गुरु के पास आलोचना की जाती है, वह इसी प्रायश्चित्त का रूप है।

(२) प्रतिक्रमणार्ह—

किए हुए दोष से पीछे हटना अर्थात् उसके पश्चाताप स्वरूप मिच्छामिदुक्कड "मेरे पाप-मिथ्या (निष्फल) हो" ऐसा

भावना प्रकट करना **प्रतिक्रमण** है। हा तो जिस दोष की मात्र प्रतिक्रमण से (मिच्छामिदुक्कडं कहने से) शुद्धि हो जाए, वह **प्रतिक्रमणार्ह-दोष** एव उसके लिए प्रतिक्रमण करना **प्रतिक्रमणार्ह-प्रायश्चित्त** है। समिति-गुप्ति मे अकस्मात् दोष लग जाने पर 'मिच्छामिदुक्कड' कह कर उक्त प्रायश्चित्त लिया जाता है। फिर गुरु के पास आलोचना करने की आवश्यकता नही रहती।

(३) तदुभयार्ह—

आलोचना और प्रतिक्रमण दोनो करने से जिस दोष की शुद्धि हो उसके लिए आलोचना-प्रतिक्रमण करना **तदुभयार्ह-प्रायश्चित्त** है। एकेन्द्रियादि जीवो का सघट्टा होने पर साधु द्वारा उक्त प्रायश्चित्त लिया जाता है, अर्थात् मिच्छा-मिदुक्कड बोला जाता है एव बाद मे गुरु के पास इस दोष की आलोचना भी की जाती है।

(४) विवेकार्ह—

किसी वस्तु के विवेक-त्याग से दोष की शुद्धि हो तो उसका त्याग करना **विवेकार्ह-प्रायश्चित** है। जैसे—आधाकर्म आदि आहार आ जाता है तो उसको अवश्य परठना पडता है, ऐसा करने से ही दोष की शुद्धि होती है।

(५) व्युत्सर्गार्ह—

व्युत्सर्ग करने से जिस दोष की शुद्धि हो, उसके लिए व्युत्सर्ग करना (शरीर के व्यापार को रोककर ध्येयवस्तु मे उपयोग लगाना) व्युत्सर्गार्ह-प्रायश्चित्त है। नदी आदि पार करने के बाद यह प्रायश्चित्त लिया जाता है अर्थात् कायोत्सर्ग किया जाता है।

(६) तपार्ह—

तप करने से जिस दोष की शुद्धि हो, उसके लिए तप करना

तपार्ह-प्रायश्चित्त कहलाता है। इस प्रायश्चित्त मे निर्विकृति-आयम्बिल-उपवास-बेला-पाचदिन दस-दिन-पन्द्रहदिन मास-चार मास एवं छ मास तक का तप किया जाता है।

(७) छेदार्ह—

दीक्षापर्याय का छेद करने से जिस दोष की शुद्धि होती है, उसके लिये दीक्षापर्याय का छेदन करना छेदार्ह-प्रायश्चित्त है। इसके भी मासिक, चातुर्मासिक आदि भेद हैं। तपरूप प्रायश्चित्त से इसका काम बहुत कठिन हैं, क्योकि छोटे साधु सदा के लिए बडे बन जाते हैं। जैसे—किसी ने छेदरूप चातुर्मासिक प्रायश्चित्त लिया तो उसकी दीक्षा के बाद चार महीनो मे जितने भी व्यक्ति दीक्षित हुए हैं, वे सब सदा के लिए उससे बडे हो जायेंगे, क्योकि उसका चार मास का साधुपना काट लिया गया।

(८) मूलार्ह—

जिस दोष की शुद्धि चारित्रपर्याय को सर्वथा छेदकर पुन महाव्रतो के आरोपण से होती है, उसके लिए वैसा करना अर्थात् दुबारा दीक्षा देना मूलार्ह-प्रायश्चित्त है [मनुष्य-गाय-भैस आदि की हत्या, हो जाए ऐसा झूठ, शिष्यादि की चोरी एव ब्रह्मचर्य-भङ्ग जैसे महान् दोषो का सेवन करने से उक्त प्रायश्चित्त आता है]

(९) अनवस्थाप्यार्ह—

जिस दोष की शुद्धि संयम से अनवस्थापित—अलग होकर विशेष तप एवं गृहस्थ का वेष धारकर फिर से नई दीक्षा लेने पर होती है, उसके लिए पूर्वोक्त कार्य करना-अनवस्थाप्यार्ह-प्रायश्चित्त है।

(१०)पाराञ्चिकार्ह—

जिम महादोष की शुद्धि पाराञ्चिक अर्थात् वेप और क्षेत्र का त्यागकर महातप करने मे होती है, उमके लिए वैसा करना पाराञ्चिकार्ह-प्रायश्चित्त है।

स्थानाङ्ग ५।१।३९८ मे पाराञ्चिक-प्रायश्चित्त के पाँच कारण कहे गए हैं, यथा—

(१) गण मे फूट डालना, (२) फूट डालने के लिए तत्पर रहना, (३) साधु आदि को मारने की भावना रखना, (४) मारने के लिए छिद्र देखते रहना, (५) वार-वार असयम के स्थानरूप मावद्य अनुष्ठान की पूछताछ करते रहना अर्थात् अङ्गुष्ठ-कुड्य आदि प्रश्नो का प्रयोग करना, (इन प्रश्नो मे दीवार या अगूठे मे देवता वुलाया जा सकता है।) इन पाँच कारणो के मिवा माध्वी या राजरानी का शीलभङ्ग करने पर भी यह प्रायश्चित्त दिया जाता है। इमकी शुद्धि के लिए छ माम मे लेकर वारह वर्ष तक गण, साधुवेष एवं अपने क्षेत्र को छोड कर जिनकल्पिक-साधु की तरह कठोर तपस्या करनी पड़ती है एव उक्त कार्य सम्पन्न होने के वाद नई दीक्षा दी जाती है।

टीकाकार कहता है कि यह महापराक्रमवाले आचार्य को ही दिया जाता है। उपाध्याय के लिए नौवें प्रायश्चित्त तक और सामान्य साधु के लिए आठवें प्रायश्चित्त तक का विधान है।

यह भी कहा गया है कि जव तक चौदह-पूर्वधारी एवं वज्र-ऋषभ-नाराच-सहननवाले साधु होते हैं, तभी तक ये दसो प्राय-श्चित्त रहते हैं। उनका विच्छेद होने के वाद केवल आठ प्राय-श्चित्त रहते है, अस्तु।

☼

१९ आलोचना

१. आ अभिविधिना सकलदोषाणां, लोचना-गुरुपुरत प्रकाशना आलोचना।
—भगवती २५।७ टीका

मर्यादा मे रहकर निष्कपटभाव से अपने सभी दोपो को गुरु के आगे प्रकट कर देने का नाम आलोचना है।

२ छत्तीसगुण-समन्नागएण, तेणवि अवस्सकायव्वा।
परसक्खिया विसोहि, सुट्ठु वि ववहारकुसलेण ॥
जह सुकुसलो वि विज्जो, अन्नस्स कहइ अत्तणो वाहिं।
विज्जुवएस सुच्चा, पच्छा सो कम्ममायरइ।
—गच्छाचार प्रकीर्णक १२-१३

आचार्य के छत्तीसगुणयुक्त एव ज्ञान-क्रिया-व्यवहार मे विशेष-निपुण मुनि को भी पाप की शुद्धि परसाक्षी से करनी चाहिए। अपने-आप नही। जैसे—परमनिपुण वैद्य भी अपनी बीमारी दूसरे वैद्य से कहता है एव उसके कथानुसार कार्य करता है।

३. आलोयणयाएणं माया - नियाण - मिच्छादसणसल्लाणं मोक्खमग्ग-विग्घाणं अणतसंसारवड्ढणाणं उद्धरण करेइ, उज्जुभावं च जणयइ। उज्जुभावपडिवन्ने वि य ण जीवे। अमाई इत्थीवेय नपुसगवेय च न बधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।
—उत्तराध्ययन २९।५

आलोचना से जीव मोक्षमार्ग-विघातक, अनन्तससार-वर्धक—ऐसे माया, निदान एव मिथ्यादर्शन शल्य को दूर करता है और ऋजु-भाव को प्राप्त करता है। ऋजुभाव मे मायारहित होता हुआ स्त्रीवेद और नपु सकवेद का वन्ध नही करता। पूर्वबन्ध की निर्जरा कर देता है।

४ उद्धरियसव्वसल्लो, आलोइय-निंदिओ गुरुसगासे।
होइ अतिरेगलहुओ, ओहरियभारोव्व भारवहो॥
—ओघनिर्युक्ति ८०६

जो साधक गुरुजनो के समक्ष मन के समस्त शल्यो (काँटो) को निकाल कर आलोचना, निन्दा (आत्मनिन्दा) करता है, उसकी आत्मा उसी प्रकार हल्की हो जाती है, जैसे—सिर का भार उतार देने पर भारवाहक।

५ जह वालो जपतो, कज्जमकज्ज च उज्जय भणई।
त तह आलोएज्जा, माया-मयविप्पमुक्को उ॥
—ओघनिर्युक्ति ८०१

वालक जो भी उचित या अनुचित कार्य कर लेता है, वह सव सरलभाव से कह देता है। इसीप्रकार साधक को भी गुरुजनो के समक्ष दभ और अभिमान से रहित होकर यथार्थ-आत्मालोचना करनी चाहिये।

६. आलोयणापरिणओ, सम्म सपट्ठिओ गुरुसगासे।
जइ अतरा उ काल, करेज्ज आराहओ तह वि॥
—आवश्यकनिर्युक्ति ४

कृतपापो की आलोचना करने की भावना से जाता हुआ व्यक्ति यदि बीच मे मर जाए तो भी वह आराधक है।

७. लज्जाए गारवेण य, जे नालोयति गुरु-सगासमि।
घतपि सुय-समिद्धा, न हु ने आराहगा हुति ॥
—मरणसमाधिप्रकीर्णक १०३

लज्जा या गर्व के वश जो गुरु के समीप आलोचना नही करते वे श्रुत से अत्यन्त समृद्ध होते हुए भी आराधक नही होते।

८. जो साधु आलोचना किए विना काल कर जाता है, वह आराधक नही होता एवं जो साधु कृतपापो की आलोचना करके काल करता है, वह सयम का आराधक होता है।
—भगवती १०।२

२०   आलोचना के विषय में विविध

१. **आलोचना करने न करने के कारण—**

तीन कारणो से व्यक्ति कृतपापो की आलोचना करता है। वह सोचता है कि आलोचना नही करने से इहलोक परलोक एवं आत्मा निंदित होते है तथा सोचता है कि आलोचना करने मे ज्ञान-दर्शन-चरित्र की शुद्धि होती है। तीन कारणो से मायी-पुरुष कृतपापो की आलोचना नही करता। वह सोचता है कि मैंने भूतकाल मे दोप-सेवन किया है, वर्तमान मे कर रहा हूँ और भविष्य मे भी किए विना नही रह सकता तथा यह सोचता है कि आलोचना आदि करने से मेरे कीर्ति, यश, एव पूजा-सत्कार नष्ट हो जायेंगे।

—स्थानाङ्ग ३।३

२ **आलोचना कौन करता है ?**

दसहि ठाणेहि सम्पन्ने अणगारे अरिहइ अत्तदोसे आलोइत्तए, त जहा—१ जाइसपन्ने, २ कुलमपन्ने ३ विणयसपन्ने ४ णाणमपन्ने, ५ दंसणसंपन्ने, ६ चरित्तसम्पन्ने, ७ खंते, ८ दंते, ९ अमाई, १० अपच्छाणुतावी।

—भगवती २५।७।७९९ तथा स्थानाङ्ग १०।७४३

४

दस गुणो से युक्त अनगार अपने दोषो की आलोचना करने योग्य होता है, वे इस प्रकार हैं—

१ जातिसम्पन्न– उच्चजातिवाला, यह व्यक्ति, प्रथम तो ऐसा बुरा काम करता ही नही, भूल से कर लेने पर वह शुद्धमन से आलोचना कर लेता है।

२ कुलसम्पन्न– उत्तमकुलवाला, यह व्यक्ति अपने द्वारा लिए गए प्रायश्चित को नियमपूर्वक अच्छी तरह से पूरा करता है।

३ विनयसम्पन्न– विनयवान्, यह बडो की बात मानकर हृदय से आलोचना कर लेता है।

४ ज्ञानसम्पन्न– ज्ञानवान्, यह मोक्षमार्ग की आराधना के लिए क्या करना चाहिए और क्या नही, इस बात को भलीप्रकार समझकर आलोचना कर लेता है।

५ दर्शनसम्पन्न– श्रद्धावान्, यह भगवान के वचनो पर श्रद्धा होने के कारण यह शास्त्रो मे बताई हुई प्रायश्चित मे होने-वाली शुद्धि को मानता है एव आलोचना कर लेता है।

६ चारित्रसम्पन्न– उत्तमचरित्रवाला, यह अपने चारित्र की शुद्ध करने के लिए दोषो की आलोचना करता है।

७ क्षान्त– क्षमावान्, यह किसी दोष के कारण गुरु से भर्त्सना या फटकार मिलने पर क्रोध नही करता, किन्तु अपना दोष स्वीकार करके आलोचना कर लेता है।

८ दान्त– इन्द्रियो को वश मे रखनेवाला, यह इन्द्रियों के विषयो मे अनासक्त होने के कारण कठोर से कठोर प्राय-श्चित को भी शीघ्र स्वीकार कर लेता है एवं पापो की आलोचना भी शुद्धहृदय से करता है।

९ अमायी– माया-कपटरहित, यह अपने पापो को विना छिपाये खुले दिल मे आलोचना करता है।

१० अपश्चात्तापी– आलोचना कर लेने के बाद पश्चात्ताप न करनेवाला, यह आलोचना करके अपने आपको धन्य एवं कृतपुण्य मानता है।

२१ आलोचना के दोष

१ दस आलोयणादोस पण्णत्ता, त जहा—
आकंपयित्ता-अणुमाणइत्ता, ज दिट्ठं बायर च सुहुम वा।
छन्न सद्दाउलयं, बहुजण अव्वत्त तस्सेवी।

—भगवती २५।७।७९५ तथा स्थानाङ्ग १०।७३३

जानते या अजानते लगे हुए दोष को आचार्य या बडे साधु के सामने निवेदन करके उसके लिए उचित प्रायश्चित्त लेना 'आलोचना' है। आलोचना का शब्दार्थ है, अपने दोषो को अच्छी तरह देखना। आलोचाना के दस दोष हैं अर्थात् आलोचना करते समय दस प्रकार का दोष लगता है यथा—

१ आकंपयित्ता—प्रसन्न होने पर गुरु थोडा प्रायश्चित्त देंगे, यह सोचकर उन्हे सेवा आदि से प्रसन्न करके फिर उनके पास दोषो की आलोचना करना।

२ अणुमाणइत्ता—पहले छोटे से दोष की आलोचना करके, आचार्य कितना-क दण्ड देते हैं, यह अनुमान लगाकर फिर आलोचना करना अथवा प्रायश्चित्त के भेदो को पूछकर दण्ड का अनुमान लगा लेना एवं फिर आलोचाना करना।

३ दिट्ठं (दृष्ट)—जिस दोष को आचार्य आदि ने देख लिया हो, उसी की आलोचना करना।

४ बायरं (स्थूल)—सिर्फ बड़े बडे दोषो की आलोचना करना।

५ सुहुमं (सूक्ष्म)—जो अपने छोटे-छोटे अपराधो की भी आलो-

चना करता है, वह वडे दोषोको कैसे छिपा सकता है—यह विश्वास उत्पन्न करने के लिए केवल छोटे-छोटे दोषो की आलोचना करना ।

६ छन्न (प्रच्छन्न)—लज्जालुता का प्रदर्शन करते हुए प्रच्छन्नस्थान मे आचार्य भी न सुन सकें—ऐसी आवाज से आलोचना करना ।

७ सद्दाउलय (शब्दाकुल)—दूसरो को सुनाने के लिए जोर-जोर से वोलकर आलोचना करना ।

८ वहुजण (वहुजन)—एक ही दोष की वहुत से गुरुओ के पास आलोचना करना, प्राय प्रशसार्थी होकर ऐसा किया जाता है ।

९ अव्वत्त (अव्यक्त)—किस अतिचार का क्या प्रायश्चित्त दिया जाता है, इस वात का जिसे ज्ञान नही हो, ऐसे अगीतार्थ साधु के पास आलोचना करना ।

१० तस्सेवी (तत्सेवी)—जिस दोष की आलोचना करनी हो, उसी दोष को सेवन करनेवाले आचार्यादि के पास, यह सोचते हुए आलोचना करना कि स्वय दोषी होने के कारण उलाहना न देगा और प्रायश्चित्त भी कम देगा ।

२. प्रतिसेवना के दस प्रकार हैं—

दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता, त जहा—
दप्प-प्पमाद-ऽणाभोगे, आउरे आवतीति य,
सकिण्णे सहसक्कारे, भय-प्पओसा य वीमसा ।

—भगवती २५।७ तथा स्थानाङ्ग १०।७३३

पाप या दोषो के सेवन से होनेवाली संयम की विराधना को प्रतिसेवना कहते है, वह दर्प आदि दस कारणो से होती है अत दस प्रकार की कही गई है ।

१. दर्पप्रतिसेवना— अहकार से होने वाली संयम की

विराधना।

२. **प्रमादप्रतिसेवना**—मद्यपान, विषय, कसाय, निद्रा और विकथा—इन पांच प्रकार के प्रमाद के सेवन से होनेवाली सयम की विराधना।

(३) **अनाभोगप्रतिसेवना**— अज्ञान के वश होनेवाली संयम की विराधना।

(४) **आतुरप्रतिसेवना**— भूख, प्यास आदि किसी पीडा मे व्याकुल होकर की गई सयम की विराधना।

(५) **आपत्प्रतिसेवना**— किसी आपत्ति के आने पर संयम की विराधना करना। आपत्ति चार प्रकार की होती है :—

(क) **द्रव्यापत्ति**— प्रासुक आहारादि न मिलना।

(ख) **क्षेत्रापत्ति**— अटवी आदि भयकर जगल मे रहना पडे।

(ग) **कालापत्ति**— दुर्भिक्ष आदि पड जाए।

(घ) **भावापत्ति**— बीमार हो जाना, शरीर का अस्वस्थ होना।

(६) **संकीर्णप्रतिसेवना**— स्वपक्ष एव परपक्ष से होनेवाली जगह की तगी के कारण समय का उल्लघन करना अथवा **सङ्कित-प्रतिसेवना** ग्रहण करने योग्य आहार आदि मे किसी दोष की शङ्का होजाने पर भी उसे ले लेना।

(७) **सहसाकारप्रतिसेवना**— अकस्मात् अर्थात् बिना सोचे-समझे किसी अनुचित काम को कर लेना।

(८) **भयप्रतिसेवना**- भय से संयम की विराधना करना, जैसे-

लोकनिन्दा एव अपमान से डरकर झूठ बोल जाना, संयम को छोड कर भाग जाना और आत्महत्या आदि कर लेना।

(९) **प्रद्वेषप्रतिसेवना**- किसी के प्रद्वेप या ईर्ष्या से (झूठा कलङ्क आदि लगाकर) संयम की विराधना करना। यहाँ प्रद्वेष से क्रोधादि चारो कषायो का ग्रहण किया गया है।

(१०) **विमर्शप्रतिसेवना**- शिष्यादि की परीक्षा के लिए (उसे धमकाकर या उस पर झूठा आरोप लगाकर) की गई विराधना।

इस प्रकार दस कारणो से चारित्र मे दोष लगता है। इनमे से दर्प, प्रमाद और द्वेष के कारण जो दोष लगाए जाते हैं, उनमे चारित्र के प्रति उपेक्षा का भाव और विषय-कषाय की परिणति मुख्य है। भय, आपत्ति और सकीर्णता मे चारित्र के प्रति उपेक्षा तो नही, किन्तु परिस्थिति की विषमता-सकटकालीन अवस्था को पारकर उत्सर्ग की स्थिति पर पहुँचने की भावना है। अनाभोग और अकस्मात् मे तो अनजानेपन से दोष का सेवन हो जाता है और विमर्श मे चाहकर दोष लगाया जाता है। यह भावी हिताहित को समझने के लिए है। इनमे भी चारित्र की उपेक्षा नहीं होती।

(२) **आलोचनादाता के आठ गुण**—

अट्ठहि ठाणेहि सम्पन्ने अणगारे अरिहइ आलोयणं पडिच्छि-

त्ताए, तजहा-आयारवं, आहारवं, ववहारव, उव्वीलए, पकुव्वए, अपरिस्सावी निज्जवए अवायदंसी।

—भगवती २५।७ तथा स्थानाङ्ग ८।६०४

आठ गुणों से युक्त साधु आलोचना सुनने के योग्य होता है—

(१) **आचारवान्**—ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तप-आचार, एवं वीर्याचार, जो इन पाँचो आचारो से सम्पन्न हो।

(२) **आधारवान्**—(अवधारणावान्) -आलोचक के बतलाए हुए दोषो को बराबर याद रख सकनेवाला हो, क्योंकि गम्भीर अतिचारो को दो या तीन बार सुना जाता है एव आगमानुसार उनका प्रायश्चित्त दिया जाता है। प्रायश्चित्त देते समय आलोचनादाता को आलोचक के दोषो का स्मरण बराबर रहना चाहिए ताकि प्रायश्चित्त कम-ज्यादा न दिया जाए।

(३) **व्यवहारवान्**—आगम आदि पाँचो व्यवहारो का ज्ञाता एव उचित विधि मे प्रवर्तनकर्ता हो। मोक्षाभिलाषी आत्माओ की प्रवृत्ति-निवृत्ति को एवं तत्कारणभूत ज्ञान-विशेष को व्यवहार कहते हैं।

—स्थानाङ्ग ५।३।४२१ मे

व्यवहार के पाँच भेद किए गए हैं—(१) आगम-व्यवहार, (२) श्रुत-व्यवहार, (३) आज्ञा-व्यवहार, (४) धारणा-व्यवहार, (५) जीत-व्यवहार।[1]

---

१. लेखक द्वारा लिखी पुस्तक 'मोक्ष प्रकाश' पुंज १० प्रश्न ६ मे इसका विस्तृत विवेचन देखिए।

(४) अप्रवीड़क- लज्जावश अपने दोषो को छिपानेवाले शिष्य की मधुर वचनो से लज्जा दूर करके अच्छी तरह आलोचना करानेवाला हो।

(५) प्रकुर्वक- आलोचित अपराध का तत्काल प्रायश्चित्त देकर अतिचारो की शुद्धि कराने मे समर्थ हो। तत्त्व यह है कि प्रायश्चित्तदाता को प्रायश्चित्तविधि पूरी तरह याद होनी चाहिए। अपराधी के मागने के बाद प्रायश्चित्त देने मे विलम्ब करना निषिद्ध है।

(६) अपरिस्रावी—आलोचना करनेवाले के दोषो का दूसरे के सामने प्रकट नही करनेवाला हो। शास्त्रीय विधान है कि यदि आलोचनादाता आलोचना के दोषो को दूसरो के सामने कह देता है तो उसे उतना ही प्रायश्चित्त आता है, जितना उसने आलोचनाकर्ता को दिया था।

(७) निर्यापक—अशक्ति या और किसी कारणवश एक साथ पूरा प्रायश्चित्त लेने में असमर्थ साधु को थोड़ा-थोड़ा प्रायश्चित्त देकर उसका निर्वाह करनेवाला हो।

(८) अपायदर्शी- आलोचना करने मे सकोच करनेवाले व्यक्ति को आगमानुसार परलोक का भय एव अन्य दोष दिखाकर उसे आलोचना लेने का इच्छुक बनाने मे निपुण हो।

४. आलोचना किसके पास ?

आलोचना सर्वप्रथम अपने आचार्य-उपाध्याय के पास

करनी चाहिए, वे न हो तो अपने साभोगिक बहुश्रुतसाधु के पास, उनके अभाव मे समानरूपवाले बहुश्रुतसाधु के पास, उनके अभाव मे पच्छाकडा (जो संयम से गिरकर श्रावकव्रत पाल रहा है, किन्तु पूर्वकाल मे सयम पाला हुआ होने से उसे प्रायश्चित्तविधि का ज्ञान है—ऐसे) श्रावक के पास एव उनके अभाव मे जिनभक्त बहुश्रुत यक्षादि देवो के पास अपने दोपो की आलोचना करनी चाहिए। भावी-वश इनमे से कोई भी न मिले तो ग्राम या नगर के बाहर जाकर पूर्व-उत्तरदिशा (ईशानकोण) मे मुख करके विनम्र-भाव से अपने अपराधो को स्पष्टरूप से बोलते हुए अरि-हन्त-सिद्ध भगवान की साक्षी से अपने आप प्रायश्चित्त लेकर शुद्ध हो जाना चाहिए।

—व्यवहार उ० १ बोल ३४ से ३९

५. आलोचना के भेद—

(क) एक्केक्का चउकन्ना दुवग्ग-सिद्धावसाणा।

—ओघनिर्युक्ति गाथा १२

आलोचना के अनेक भेद है—जैसे चतुष्कर्णा, पट्कर्णा एव अष्टकर्णा।

यदि साधु-साधु से या साध्वी-साध्वी से आलोचना करे तो वह आलोचना चतुष्कर्णा चार कानोवाली होती है, क्योकि तीसरा व्यक्ति उनके पास नही होता।

यदि साध्वी स्थविर साधु के पास आलोचना करे तो उस साध्वी के साथ ज्ञानदर्शन-सम्पन्न एव प्रौढवयवाली एक

साध्वी अवश्य रहती है, अत तीन व्यक्ति होने से यह आलोचना षट्कर्णा। छः कानोवाली कहलाती है। यदि आलोचना करानेवाला साधु युवा-जवान हो तो उसके निकट प्रौढवयवाला एक साधु भी अवश्य रहता है। अतः दो साधु और दो साध्वियो के समक्ष होने से यह आलोचना अष्टकर्णा आठ कानोवाली मानी जाती है। [यह विवेचन गम्भीर दोषो की अपेक्षा से समझना चाहिए]

(यह विवेचन बृहत्कल्पभाष्य गाथा ३९५, ३९६ के आधार पर किया गया है।)

[ख] सेयणमचित्त दव्व, जणवय मद्धाणे होइ खेत्त मि।
दिण-निसि सुभिक्ख-दुभिक्ख, काले भावमि हेट्ठियरे॥

द्रव्यादि की अपेक्षा से आलोचना के चार प्रकार हैं —

द्रव्य से—अकल्पनीयद्रव्य का सेवन किया हो—फिर वह चाहे अचित्त हो, सचित्त हो या मिश्र हो।

क्षेत्र से—ग्राम, नगर, जनपद व मार्ग में दोषसेवन किया हो।
काल से—दिन-रात में या दुर्भिक्ष-सुभिक्ष में दोषसेवन किया हो।

भाव से—प्रमत्त-अप्रमत्त, अहंकार एवं ग्लानि आदि किसी भी परिस्थिति से दोषसेवन किया हो। सभी प्रकार के दोषों की आलोचना करके शुद्ध बन जाना चाहिए।

९ मिच्छामि दुक्कडं—

'मि' त्ति मिउ-मद्दवत्ते
'छ' त्ति दोसाणच्छादणे होइ।

'मि' त्ति य मेराइठिओ,
'दु' त्ति दुगछामि अप्पाण ॥६८६॥
'क' त्ति कडं मे पाव,
'ड' त्ति डेवेमि त उवसमेणं ।
एसो 'मिच्छादुक्कड'-
पयक्खरत्थो समासेण ॥६८७॥

—आवश्यकनिर्युक्ति

'नामैकदेशे नामग्रहणम', इस न्याय के अनुसार 'मि' कार मृदुता-कोमलता तथा अहंकार रहित होने के लिए है। 'छ' कार दोषो को त्यागने के लिए है। 'दु' कार पापकर्म करनेवाली अपनी आत्मा की निन्दा के लिए है। 'क' कार कृत-पापो की स्वीकृति के लिए है। और 'ड' कार उन पापो का उपशमन करने के लिए है—यह 'मिच्छामिदुक्कड' पद के अक्षरो का अर्थ है।

☼

२२

१. समणेण सावएण य, अवस्स कायव्व हवइ जम्हा ।
अतो अहोनिसस्स य, तम्हा आवस्सयं नाम ॥
—अनुयोगद्वार आवश्यकाधिकार

दिन-रात की संधि के समय साधु-श्रावक को यह अवश्य करना होता है। इसलिए इसका नाम आवश्यक है ।

२. जे भिक्खू कालाइक्कमेण वेलाइक्कमेण समयाइक्कमेणं आलसायमाणे आणोवओगे पमत्ते अविहीए अन्नेसिं व असद्ध उप्पायमाणो अन्नयरमावस्सग पमाइयम .. सेणगोयमा ! महापायच्छित्ती भवेज्जा ।
—महानिशीथस्य अ. ७

जो भिक्षु आवश्यक-सम्बंधी काल, वेला एवं समय का अतिक्रमण करके आलस्य, उपयोगशून्यता, प्रमाद और अविधि के सेवन द्वारा अन्य साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाओं मे अश्रद्धा उत्पन्न करता हुआ छः आवश्यकों में से किसी एक आवश्यक को भी यदि प्रमाद-वश नहीं करता तो हे गौतम ! वह महाप्रायश्चित्त का भागी होता है ।

३ आवस्सग चउव्विह पण्णत्त, तं जहा—
नामावस्सय, ठवणावस्सय, दव्वावस्सय, भावावस्सयं ।
—अनुयोगद्वार आवश्यकाधिकार

आवश्यक चार प्रकार का कहा है—

१ नाम-आवश्यक, २ स्थापना-आवश्यक, ३ द्रव्य-आवश्यक
४ भाव-आवश्यक।

प्रतिक्रमण—

४ स्वस्थानाद् यत् परस्थानं, प्रमादस्य वशाद् गत ।
तत्रैव क्रमण भूय, प्रतिक्रमणमुच्यते ॥
क्षायोपशमिकाद् भावा-दौदयिकस्य वश गत ।
तत्रापि च स एवार्थ प्रतिकूलगमात् स्मृत ॥

—आवश्यक. ४

प्रमादवश अपने स्थान को छोडकर दूसरे स्थान—हिंसा आदि मे गये हुए आत्मा का लौटकर अपने स्थान—आत्मगुणो मे आ जाना प्रतिक्रमण है तथा क्षायोपशमिकभाव मे औदयिकभाव मे गये हुये आत्मा का पुनः मूलभाव मे आजाना प्रतिक्रमण है।

५. पचविहे पडिक्कमणे, पण्णत्ते, त जहा—आसवदार-पडिक्कमणे, मिच्छत्तपडिक्कमणे, कसायपडिक्कमणे, जोगपडिक्कमणे, भावपडिक्कमणे।

—स्थानाङ्ग ५।३।४६७
तथा आवश्यक हरिभद्रीय अ ४

पाँच प्रकार का प्रतिक्रमण कहा है—

१ आसवद्वार—हिंसाआदि का प्रतिक्रमण २ मिथ्यात्व-प्रतिक्रमण ३ कषाय-क्रोधादिका प्रतिक्रमण ४ योग-अशुभयोगो का प्रतिक्रमण ५. भाव-प्रतिक्रमण ("मिच्छामि दुक्कडं" बोलकर पुन वही दुष्कृत्य करते रहना द्रव्य-प्रतिक्रमण है और दुबारा उसका सेवन न करना भाव-प्रतिक्रमण है।)

६ पडिसिद्धाण करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमण,
असद्दहणे य तहा, विवरीय परूवणाए य।
—आवश्यक निर्युक्ति १२६८

हिंसादि निषिद्ध कार्य करने का, स्वाध्याय प्रतिलेखनादि कार्य न करने का, तत्त्वो मे अश्रद्धा उत्पन्न होने का एव शास्त्र-विरुद्ध प्ररूपणा करने का प्रतिक्रमण किया जाना चाहिए।

७ पडिक्कमणेणं वयछिद्दाणि पीहेइ। —उत्तराध्ययन २९।१

प्रतिक्रमण करने से जीव व्रतो के छिद्रो को ढक देता है।

८. सपडिक्कमणो धम्मो, पुरिमस्स पच्छिमस्स य जिणस्स।
मज्झिमयाण जिणाण, कारणजाए पडिक्कमण ॥३४७॥
गमणागमण-वियारे, सायं पाओ य पुरिम-चरिमाण।
नियमेण पडिक्कमणं, अइयारो होइ वा मा वा ॥३४८॥
—बृहत्कल्पभाष्य-६

प्रथम और अन्तिम तीर्थकरो का सप्रतिक्रमण धर्म है। मध्यम-बाइस तीर्थंकरो के समय स्खलना होने पर प्रतिक्रमण करने का विधान है। प्रथम अन्तिम तीर्थंकरो के साधुओं के गमन-आगमन मे एव उच्चार आदि परठने मे चाहे स्खलना हो या न हो, उन्हे सुबह-शाम षडावश्यकरूप प्रतिक्रमण अवश्य करना ही चाहिए।

वैदिक सध्या—

६ ओउम् सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्य· पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या [यदह्ना] पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्या पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत् किञ्चिद् दुरित मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥ —नित्यकर्म विधि पृष्ठ ३२

हे सूर्यनारायण ! यक्षपति और देवताओ मेरी प्रार्थना है कि यक्ष विषयक तथा क्रोध मे किए हुए पापो मे मेरी रक्षा करे ! दिन-रात्रि मे मन, वाणी, हाथ, पैर, उदर और शिश्न-लिङ्ग मे जो पाप हुए हो, उन पापो को मैं अमृतयोनि सूर्य मे होम करता हूँ। इसलिए उन पापो को नष्ट करें !

संध्या के तीन अर्थ हैं–

१ उत्तम प्रकार से परमेश्वर का ध्यान करना।

२ परमेश्वर से मेल करना।

३ दिन-रात की सन्धि मे किया जानेवाला कर्म।

वैयावृत्त्य

२३

१. वैयावृत्त्यम्-भक्तादिभिर्धर्मोपग्रहकारिवस्तुभिरुपग्रह-करणे
—स्थानांग ५।१ टीका

धर्म मे सहारा देनेवाली आहार आदि वस्तुओ द्वारा उपग्रह-सहा-
यता करने के अर्थ मे वैयावृत्त्य शब्द आता है।
(वैयावृत्त्य अर्थात् सेवा)

२. दसविहे वेयवच्चे पण्णत्ते, त जहा— १ आयरियवेयावच्चे,
२ उवज्झायवेयावच्चे, ३ थेरवेयावच्चे, ४ तवस्सिवेयावच्चे,
५ गिलाणवेयावच्चे ६ सेहवेयावच्चे ७ कुलवेयावच्चे
८ गणवेयावच्चे ९ सघवेयावच्चे १० साहम्मियवेयावच्चे।
—स्थानांग १०।४४९

दस प्रकार की वैयावृत्त्य कही है— १ आचार्य की वैयावृत्त्य,
२ उपाध्याय की वैयावृत्त्य, ३ स्थविर की वैयावृत्त्य, ४ तपस्वी
की वैयावृत्त्य, ५ ग्लानमुनि की वैयावृत्त्य, ६ नवदीक्षित मुनि की
वैयावृत्त्य, ७ कुल [एक आचार्य की सतति या चन्द्र आदि साधु
समुदाय] की वैयावृत्त्य, ८ गण [कुलो का समूह] की वैयावृत्त्य, ९ सघ [गणो का समूह] की वैयावृत्त्य,
१० सार्मिक-साधु की वैयावृत्त्य।

३. सन्तो पागो नवगानगो (य), पडिनिद्द-[illegible] मद्दाणो।
राया तेणो द[illegible]-गादि [illegible]।
—व्यवहारभाष्य ३। १० गा० १२

५

आचार्य आदि को—१ आहार देना, २ पानी देना, ३ शय्या देना, ४ आसन देना, ६ उनका पडिलेहण करना, ५ पाव पूंछना, ७ नेत्ररोगी हो तो औषध-भेषज लाकर देना, ८ मार्ग मे (विहार-आदि के समय) सहारा देना, ९ राजा के क्रुद्ध होने पर उनकी रक्षा करना, १० चोर आदि से उन्हे बचाना, ११ अतिचार-सेवन कर के आएं हो तो उन्हे दण्ड देकर शुद्ध करना, १२ रोगी हो तो उनके लिए आवश्यक वस्तुओ का सपादन करना, १३ लघुशङ्का-निवाणार्थ पात्र उपस्थित करना।

उपर्युक्त १३ प्रकार से आचार्य आदि की वैयावृत्त्य की की जाती है।

(४) वेयावच्चेण तित्थयरनाम गोय कम्मं निबंधेइ।

—उत्तराध्ययन २९। ३

आचार्यादि की वैयावृत्त्य करने से जीव तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्म का उपार्जन करता है।

(५) जे भिक्खू गिलाणं सोच्चा णच्चा न गवेसइ,
न गवेसंतं वा साइज्जइ आवज्जइ
चउम्मासिय परिहारठाण अणुग्घाइय।

—निशीथभाष्य १०।३७

यदि कोई समर्थ साधु किसी साधु को बीमार सुनकर एव जानकर बेपरवाही से उसकी सार-सभाल न करे तथा न करनेवाले की अनुमोदना करे तो उसे गुरु चातुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है।

दूसरा कोष्ठक

१ ध्यान

१ ध्यानं तु विषये तस्मिन्नेकप्रत्ययसंततिः ।

—अभिधानचिन्तामणि १।८४

ध्येय में एकाग्रता का हो जाना ध्यान है ।

२ चित्तस्सेगग्गया हवइ झाणं । —आवश्यकनिर्युक्ति १४५६

किसी एक विषय पर चित्त को एकाग्र-स्थिर करना ध्यान है ।

३ एकाग्रचिन्ता योगनिरोधो वा ध्यानम् ।

—जैनसिद्धान्तदीपिका ५।२८

एकाग्रचिन्तन एवं मन-वचन-काया की प्रवृत्तिरूप योगों को रोकना ध्यान है ।

४. उपयोगे विजातीय-प्रत्ययाव्यवधानभाक् ।
शुभैकप्रत्ययो ध्यानं, सूक्ष्माभोगसमन्वितम् ।

—द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशिका १८।११

स्थिर दीपक की लौ के समान मात्र शुभलक्ष्य में लीन और विरोधी लक्ष्य के व्यवधानरहित ज्ञान, जो सूक्ष्म विषयों के आलोचनसहित हो, उसे ध्यान कहते हैं ।

५. मुहूर्त्तान्तर्मनःस्थैर्यं, ध्यानं छद्मस्थ-योगिनाम् ।

—योगशास्त्र ४।११५

अन्तर्मुहूर्त तक मन को स्थिर रखना छद्मस्थयोगियो का ध्यान है ।

६. स्वात्मान स्वात्मनि स्वेन, ध्याते स्वस्मै स्वतो यत ।
षट्कारकमयस्तस्माद्, ध्यानमात्मैव निश्चयात् ।

—तत्त्वानुशासन ७४

आत्मा का आत्मा मे, आत्मा द्वारा, आत्मा के लिए, आत्मा मे ही ध्यान करना चाहिए । निश्चयनय मे षट्कारकमय-यह आत्मा ही ध्यान है ।

७. निश्चयाद् व्यवहाराच्च, ध्यान द्विविधमागमे ।
स्वरूपालम्बन पूर्व, परालम्बनमुत्तरम् ।

—तत्त्वानुशासन ९६

निश्चयदृष्टि से और व्यवहारदृष्टि से ध्यान दो प्रकार का है । प्रथम मे स्वरूप का आलम्बन है एवं दूसरे मे परवस्तु का आलम्बन है ।

८. ध्यानमुद्रा—

अन्तश्चेतो बहिश्चक्षु-रध स्थाप्य सुखासनम् ।
समत्व च शरीरस्य, ध्यानमुद्रेति कथ्यते ।

—गोरक्षाशतक-६५

चित्त को अन्तर्मुखी बनाकर, दृष्टि को नीचे की ओर नासाग्र पर स्थापित करके सुखासन से बैठना तथा शरीर को सीधा रखना ध्यानमुद्रा कहलाती है ।

९. खेचरीमुद्रा:—

कपालकुहरे जिह्वा, प्रविष्टा विपरीतगा ।
भ्रुवोरन्तर्गता दृष्टि-र्मुद्रा भवति खेचरी ।

न रोगो मरण तस्य, न निद्रा न क्षुधा तृषा।
न च मूर्च्छा भवेत्तस्य, मुद्रा यो वेत्ति खेचरीम्।

—गोरक्षाशतक ६६-६७

जीभ को उलटकर कपालकुहर-तालु मे लगाना और दृष्टि को दोनो भौंहो के बीच मे स्थापित करना खेचरीमुद्रा होती है। जो खेचरीमुद्रा को जानता है, वह न बीमार होता, न मरता, न सोता, न उसे भूख-प्यास लगती और न ही मूर्च्छा उत्पन्न होती।

१० ध्यान के आलम्बन भूत सात कमल-चक्र —

चतुर्दल स्यादाधार, स्वाधिष्ठान च षड्दलम्,
नाभौ दशदल पद्म, सूर्यसख्यादलं हृदि।
कण्ठे स्यात् षोडशदल, भ्रूमध्ये द्विदल तथा।
सहस्रदलमाख्यात, ब्रह्मरन्ध्रे महापथे।

ध्यान करने के लिए सात कमलरूप चक्रो की कल्पना भी की गई है। उनका रहस्य समझने के लिए पृष्ठ ७० के चार्ट को देखें।

☼

सात कमल रूप चक्र—

नाम	स्थान	वर्ण	पंखुड़ियाँ	अक्षर (पँखुड़ियो पर अक्षरो की स्थापना)
मूलाधारचक्र	गुदा	अग्निवर्ण	४	व श. ष स.
स्वाधिष्ठानचक्र	लिंगमूल	सूर्यवर्ण	६	ब भ म य. र. ल
मणिपूरकचक्र	नाभि	रक्तवर्ण	१०	ड ढ ण त थ. द ध न प. फं.
अनाहतचक्र	हृदय	सुवर्णवर्ण	१२	कं ख ग घ ङ च. छ ज. झ. ञ ट ठ
विशुद्धिचक्र	कण्ठ	चन्द्रवर्ण	१६	अ. आ इ ई उ. ऊ ऋ ॠ. ऌ. ॡ ए ऐ ओ औ अं अः
आज्ञाचक्र	भ्रूमध्य	लालवर्ण	२	ह क्ष
ब्रह्मरन्ध्रचक्र	दशमद्वार	स्फटिकवर्ण	१०००	निरतर सच्चिदानन्द ज्योतिस्वरूप

● निर्दिष्ट स्थानो मे कमल-चक्रो की अग्नि आदि वर्णमय कल्पना करके उपरोक्त पंखुड़ियाँ बनानी चाहिए एवं उनपर निर्दिष्ट अक्षरो का ध्यान करना चाहिए।

नोट— १ अथर्ववेद १०/२/३१ मे आठचक्रो का कथन है, वहाँ जिह्वामूल मे एक ललनाचक्र अधिक कहा गया है।

२ ध्यान सम्बन्धी विशेष जानकारी के लिए लेखक द्वारा लिखी पुस्तक मनोनिग्रह के दो मार्ग देखिए।

११. ध्यान के आलम्बनरूप चार ध्येय—

[क] पिण्डस्थं च पदस्थं च, रूपस्थं रूपवर्जितम् ।
चतुर्धा ध्येयमाम्नातं, ध्यानस्यालम्बनं बुधैः ।

—योगशास्त्र ७।८

ज्ञानी-पुरुषों ने ध्यान के आलम्बनरूप ध्येय को चार प्रकार का माना है–१ पिण्डस्थ, २ पदस्थ, ३. रूपस्थ, ४ रूपातीत ।

[ख] पार्थिवी स्यादथाग्नेयी, मारुती वारुणी तथा ।
तत्त्वभूः पञ्चमी चेति, पिण्डस्थे पञ्चधारणा ।

—योगशास्त्र ७।९

पिण्डस्थ अर्थात् शरीर में विद्यमान आत्मा । उसके आलम्बन से जो ध्यान किया जाता है, वह पिण्डस्थध्यान है । उसकी पाँच धारणाएँ हैं– १ पार्थिवी, २ आग्नेयी, ३ मारुती, ४. वारुणी, ५ तत्त्वभू[1] ।

[ग] यत्पदानि पवित्राणि, समालम्ब्य विधीयते ।
तत्पदस्थं समाख्यातं, ध्यानं सिद्धान्तपारगैः ।

—योगशास्त्र ८।१

ध्येय में चित्त को स्थिररूप से बाँध लेने का नाम धारणा है ।
पवित्र-मन्त्राक्षर आदि पदों का अवलम्बन करके जो ध्यान किया जाता है, उसे सिद्धान्त के पारगामी पुरुष पदस्थध्यान कहते हैं ।

[घ] अर्हतो रूपमालम्ब्य, ध्यानं रूपस्थमुच्यते ।

—योगशास्त्र ९।७

---

१ धारणा तु क्वचिद् ध्येये, चित्तस्य स्थिरबन्धनम् ।
—अभिधानचिन्तामणि १।८४

अरिहंत भगवान के रूप का सहारा लेकर जो ध्यान किया जाता है। उसे रूपस्थध्यान कहते हैं।

[ड] निरञ्जनस्य सिद्धस्य, ध्यानं स्याद्रूपवर्जितम्।
—योगशास्त्र १०।१

निरञ्जन सिद्ध भगवान का ध्यान रूपातीतध्यान है।

१२. ध्यान की सामग्री—

सगत्याग कषायाणां, निग्रहो व्रतधारणम्।
मनोऽक्षाणां जयश्चेति, सामग्री ध्यानजन्मनि।
—तत्त्वानुशासन ७५

परिग्रह का त्याग, कषाय का निग्रह, व्रतधारण करना तथा मन और इन्द्रियों को जीतना—ये सब कार्य ध्यान की उत्पत्ति में सहायता करनेवाली सामग्री है।

१३. ध्यान के हेतु—

वैराग्य तत्वविज्ञानं, नैर्ग्रन्थ्य समचित्तता।
परिग्रह जयश्चेति, पञ्चैते ध्यानहेतवः॥
बृहद्द्रव्यसंग्रह संस्कृतटीका, पृ० २८१

१ वैराग्य, २ तत्त्वविज्ञान, ३ निर्ग्रन्थता, ४ समचित्तता, ५. परिग्रहजय—ये पाँच ध्यान के हेतु हैं।

१४. चार ध्यान एवं धर्म ध्यान के भेद-प्रभेद—

चत्तारि झाणा पण्णत्ता, तं जहा—अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे।
धम्मे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—आणाविजए, अवायविजए, विवागविजए, संठाणविजए।
धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—

वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—
आणारुई, णिसग्गरुई, सुत्तरुई ओगाढरुई।

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ-
पण्णत्ताओ तं जहा—
एगाणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा, असरणाणुप्पेहा
संसाराणुप्पेहा। —स्थानाङ्ग ४।१।२४७

चार ध्यान कहे हैं– १ आर्तध्यान, २ रौद्रध्यान, ३ धर्मध्यान, ४. शुक्लध्यान।

धर्मध्यान के चार प्रकार है– १ आज्ञाविचय, २ अपायविचय, ३ विपाकविचय, ४ संस्थानविचय

धर्मध्यान के चार आलम्बन कहे हैं– १ वाचन, २ प्रतिपृच्छा, ३ अनुप्रेक्षा, ४ धर्मकथा।

धर्मध्यान के चार लक्षण हैं– १ आज्ञारुचि, २ निसर्गरुचि, ३ सूत्ररुचि, ४ अवगाढरुचि।

धर्मध्यान की चार अनुप्रेक्षाएं हैं– १ एकत्वानुप्रेक्षा, २ अनित्यानुप्रेक्षा, ३ अशरणानुप्रेक्षा, ४, संसारानुप्रेक्षा।

२ ध्यान से लाभ

१. मोक्ष कर्मक्षयादेव स, चात्मज्ञानतो भवेत् ।
ध्यानसाध्यं मतं तच्च, तद्ध्यान हितमात्मन: ।

—योगशास्त्र ४।११३

कर्म के क्षय से मोक्ष होता है, आत्मज्ञान से कर्म का क्षय होता है और ध्यान मे आत्मज्ञान प्राप्त होता है। अत ध्यान आत्मा के लिए हितकारी माना गया है।

२. झाणणिलीणो साहू, परिचाग कुणइ सव्वदोसाण ।
तम्हा दु झाणमेव हि, सव्वदिचारस्स पडिक्कमण ॥

—नियमसार ९३

ध्यान मे लीन हुआ साधक सब दोषो का निवारण कर सकता है। इसलिए ध्यान ही समग्र अतिचारो (दोषो) का प्रतिक्रमण है।

३. ध्यानयोगरतो भिक्षु प्राप्नोति परमा गतिम् ।

—शखस्मृति

ध्यान-योग मे लीन मुनि मोक्षपद को प्राप्त करता है।

४. वीतरागो विमुच्येत, वीतराग विचिन्तयन् ।

—योगशास्त्र ९।१३

ध्यान करता हुआ योगी स्वय वीतराग होकर कर्मो से या वासनाओ से मुक्त हो जाता है।

५. ध्यानाग्नि-दग्धकर्मा तु, सिद्धात्मा स्यान्निरञ्जन: ।

—योगशास्त्र

शुक्लध्यानरूप अग्नि मे कर्मों को जला देनेवाला व्यक्ति सिद्ध भगवान् बन जाता है।

६. काउस्सग्गेण तीयपडुप्पन्नपायच्छित्त विसोहेइ विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरियभारुव्व भारवाहे पसत्थज्झाणोवगए सुह सुहेण विहरइ।

—उत्तराध्ययन २९।१२

कायोत्सर्ग (ध्यान अवस्था मे समस्त चेष्टाओं का परित्याग) करने से जीव अतीत एव वर्तमान के दोषों की विशुद्धि करता है और विशुद्ध-प्रायश्चित्त होकर सिर पर से भार के उतर जाने से एक भारवाहकवत हल्का होकर सद्ध्यान मे रमण करता हुआ सुख-पूर्वक विचरता है।

३ ध्याता (ध्यान करनेवाला)

१. यस्य चित्त स्थिरीभूत, स हि ध्याता प्रशस्यते ।

—ज्ञानार्णव पृ० ८४

जिसका चित्त स्थिर हो, वही ध्यान करनेवाला प्रशसा के योग्य है ।

२ जितेन्द्रियस्य धीरस्य, प्रशान्तस्य स्थिरात्मन· ।
सुखासनस्य नाशाग्र-न्यस्तनेत्रस्य योगिन ॥

—ध्यानाष्टक ६

जो योगी जितेन्द्रिय है, धीर है, शान्त है, स्थिरआत्मावाला है, वह ध्यान करने के योग्य होता है ।

३. ध्याता ध्यान फल ध्येय, यस्य यत्र यदा यथा ।
इत्येतदत्र बोद्धव्य, ध्यातु कामेन योगिना ॥

—तत्त्वानुशासन ३७

ध्यान के इच्छुक योगी को योग के आठ अगो को अवश्य जानना चाहिए, यथा—

१ ध्याता—इन्द्रिय और मन का निग्रह करने वाला ।

२ ध्यान—इष्टविषय मे लीनता ।

३ फल—सवर-निर्जरारूप ।

४ ध्येय—इष्टदेवादि ।

५ यस्य—ध्यान का स्वामी ।

६ यत्र—ध्यान का क्षेत्र।

७ यदा—ध्यान का समय।

८ यथा—ध्यान की विधि।

४ मा मुज्झह ! मा रज्जह ! मा दुस्सह ! इट्ठ निट्ठअट्ठेसु।
थिरमिच्छह जइ चित्तं, विचित्तझाणप्पसिद्धीए।
मा चिट्ठह ! मा जपह ! मा चितह ! किं वि जेण होइ थिरो।
अप्पा अप्पमि रओ इणमेव परं हवे झाणं !

—द्रव्यसग्रह

हे साधक ! विचित्र ध्यान की सिद्धि से यदि चित्त को स्थिर करना चाहता है, तो इष्ट-अनिष्ट पदार्थों मे मोह, राग और द्वेष मत कर !

किसी भी प्रकार की चेष्टा, जल्पन व चिन्तन मत कर, जिससे मन स्थिर हो जाये। आत्मा का आत्मा मे रक्त हो जाना ही उत्कृष्ट ध्यान है।

५ ध्यानमेकाकिना द्वाभ्या, पठन गायन त्रिभिः।
चतुर्भिर्गमन क्षेत्र पञ्चभिर्बहुभी रणम् ॥

—चाणक्यनीति ४।१२

ध्यान अकेले का, पढना दो का, गाना तीनो का, चलना चारो का, खेती करना पाँचो का और युद्ध बहुत व्यक्तियो का अच्छा माना गया है।

४ स्वाध्याय-ध्यान की प्रेरणा

१. स्वाध्यायाद् ध्यानमध्यास्ता, ध्यानात् स्वाध्यायमामनेत् ।
ध्यान स्वाध्यायसपत्त्या, परमात्मा प्रकाशने ।।८१।।
यथाभ्यासेन शास्त्राणि, स्थिराणि सुमहान्त्यपि ।
तथाध्यानपिस्थैर्य, लभतेऽभ्यासवर्तिनाम् ।।८२।।

—तत्त्वानुशासन

स्वाध्याय से ध्यान का अभ्यास करना चाहिए और ध्यान मेस्वाध्याय को चरितार्थ करना चाहिए स्वाध्याय एव ध्यान की सप्राप्ति मे परमात्मा प्रकाशित होता है—अर्थात् अपने अनुभव मे लाया जाता है। अभ्यास से जैसे महान् शास्त्र स्थिर हो जाते हैं, उसी प्रकार अभ्यास करने वालो का ध्यान स्थिर हो जाता है।

२. जपश्रान्तो विशेद् ध्यान, ध्यानश्रान्तो विशेज्जपम् ।
द्वाभ्या श्रान्त पठत् स्तोत्र-मित्येव गुरुभिः स्मृतम् ।।

—श्राद्धविधि, पृ०७६, श्लोक-३

जाप मे श्रान्त होने पर ध्यान एव ध्यान मे श्रान्त होने पर जाप करना चाहिए तथा दोनों मे श्रान्त हो जाने पर स्तोत्र पढ़ना चाहिए। ऐसे ही गुरुदेव ने कहा है।

३. ओमित्येव ध्यायथ ! आत्मान स्वस्ति च,
पाराय तमसः परास्तात् । मुण्डकोपनिषद् २।२।६

उस आत्मा का ध्यान ओ३म् के रूप मे करो ! तुम्हारा कल्याण

होगा अन्धकार दूर करने का यह एक ही साधन है।

४ अकारो वासुदेव स्यादुकारस्तु महेश्वर ।
मकार प्रजापति स्यात्, त्रिदेवो ॐ प्रयुज्यते ॥

'अ' का अर्थ विष्णु है, 'उ' का अर्थ महेश है और 'म' का अर्थ ब्रह्मा है अत तीनों देवों के अर्थ मे ॐ का प्रयोग किया जाता है।

५ अरिहन्ता असरीरा, अयरिय-उवज्भाय-मुणिणो ।
पढमक्खरनिप्फन्नो, ॐकारो पञ्चपरमिट्ठी ॥

—बृहद्द्रव्यसग्रहटीका, पृष्ठ १८२

जैनाचार्यों के मतानुसार 'ॐ' का अर्थ इस प्रकार है— अरिहन्त का 'अ' सिद्धों का दूसरा नाम अशरीरी भी है। अत अशरीरी का भी 'अ' आचार्यों का 'आ' उपाध्याय का 'उ' और साधु का दूसरा नाम मुनि भी है, इसीलिए मुनि का 'म' लिया। फिर इन सबकी सन्धि करने से ओम् बन गया। जैसे— अ+अ=आ, आ+आ=आ, आ+उ=ओ, ओ+म्=ओम्।

६ बच्चा जन्मते समय आ-आ-आ, कुछ बडा होने पर उ-उ-उ अधिक बढने पर म-म-म, करने लगता है।

—स्वामी रामतीर्थ

स्वामीजी का कहना है कि ॐ स्वाभाविक शब्द है। अतएव बच्चो के मुंह मे भी इसके अश (अ. उ. म) स्वभाव से ही निकलते है।

७ मकार च टकार च लोपयित्वा प्रयुज्यते ।

मकार और टकार का लोप करने से ॐ रह जाता है, इस लोक मे 'म' और 'ट' का लोप करके ॐ का प्रयोग किया जाता है। प्रकार मंत्रों मे भी ॐ का प्रयोग किया जाता है।

☼

५ समाधि

१ समाधिर्नाम राग-द्वेषपरित्यागः। —सूत्रकृताग चूर्णि १।२।२

राग द्वेष का त्याग ही समाधि है।

२. कुसलचित्तेकग्गता समाधि। —विसुद्धिमग्ग ३।२

कुशल (पवित्र) चित्त की एकाग्रता ही समाधि है।

३. सुखिनो चित्त समाधीयति। —विसुद्धिमग्ग ३।४

सुखी का चित्त एकाग्र होता है।

४ समाहित वा चित्त थिरतर होति। —विसुद्धिमग्ग ४।३६

समाहित (एकाग्र हुआ) चित्त ही पूर्ण स्थिरता को प्राप्त करता है।

५ समाहियस्सऽग्गिसिहा व तेयसा,

तवो य पन्ना य जसो पवड्ढइ। —आचाराङ्ग श्रु० २।१६।५

अग्नि-शिखा के समान प्रदीप्त एव प्रकाशमान रहनेवाले समाधि-युक्त साधक के तप प्रज्ञा और यश निरन्तर बढते रहते है।

६. लाभालाभेन मथिता, समाधि नाधिगच्छन्ति।

—थेरगाथा १।१०२

जो लाभ या अलाभ से विचलित हो जाते है, वे समाधि को प्राप्त नही कर सकते।

७. समाहिकारए ण तमेव समाहिं पडिलब्भइ। —भगवती ७।१

समाधि देनेवाला समाधि पाता है।

अन्न—

१ अन्नं वै विशः। —शतपथब्राह्मण ६।७।३।७

अन्न ही प्रजा का आधार है।

२ अन्नं हि प्राणः। —ऐत्तिरीय-ब्राह्मण-३२।१०

अन्न ही प्राण है।

३ अन्नेन वाव सर्वे प्राणा महीयन्ते।

—तैत्तिरीयउपनिषद् १।५।१

अन्न से ही सब प्राणों की महिमा बनी रहती है।

४ अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्। —तैत्तिरीयआरण्यक ९।२

यह अच्छी तरह जान लीजिए कि अन्न ही ब्रह्म है।

५. अन्नसमं रत्नं न भूतं न भविष्यति। —वैद्यरसराज-समुच्चय

अन्न के समान रत्न न तो हुआ और न कभी होगा।

६. नास्ति मेघसमं तोयं, नास्ति चात्मसमं बलम्।
नास्ति चक्षुःसमं तेजो, नास्ति चान्नसमं प्रियम्।

—चाणक्यनीति ५।१७

मेघजल के समान जल नहीं, आत्मबल के समान बल नहीं, आँख के समान तेज नहीं और अन्न के समान कोई प्रिय वस्तु नहीं।

७. अन्न न निन्द्यात् । —तैत्तिरीयउपनिषद् ३।७

अन्न की निन्दा मत करो।

८. अन्नेन हीद सर्व गृहीतम्, तस्मात् यावन्तो नोऽशनमश्नन्ति तेन सर्वे गृहीता भवन्ति। —शतपथब्राह्मण ४।६।५।४

अन्न ने सब को पकड रखा है अत जो भी हमारा भोजन करता है, वही हमारा हो जाता है।

९. अन्नं हि भूताना ज्येष्ठम् । तस्मात सर्वोपधमुच्यते ।
अन्नाद् भूतानि जायन्ते । जातान्यन्नेन वर्धन्ते ।

—तैत्तरीयउपनिषद् ८।२

प्राणि जगत मे अन्न ही मुख्य है। अन्न को समग्र रोगो की ओपध कहा है, (क्योकि सब ओपधियो का सार अन्न मे है) अन्न मे ही प्राणी पैदा होते हैं और अन्न से ही बढते हैं।

१०. अन्न वहु कुर्वीत तद व्रतम् । —तैत्तिरीयउपनिषद् ३।६

अन्न अधिकाधिक उपजाना-बढाना चाहिए, यह एक व्रत (राष्ट्रीय-प्रण) है।

११ सर्वसग्रहेपु धान्यसग्रहो महान्, यतस्तन्निबन्धनम् ,
जीवित सकलप्रयासश्च ।

—नीतिवाक्यामृत ८।१८

सभी संग्रहो मे धान्य का सग्रह बडा हैं, क्योंकि जीवन तथा सारे प्रयासों का कारण धान्य ही हैं।

१२. अन्न मुक्ता र घी जुक्ता। —राजस्थानी कहावत

१३ हमारे बडे-बूढे कहा करते थे कि अनाज महगा और रुपया सस्ता हो, वह जमाना 'खराब' और अनाज सस्ता और

रुपया महगा हो, वह जमाना 'अच्छा', कारण अन्न से ही प्राण टिकते हैं।

१४ एक सेठ किसी कारणवश मकान मे रह गया। बाहर से बन्द करके आरक्षक दूसरे गाँव चले गए। वहा हीरे, पन्ने, माणिक-मोती आदि जवाहरात काफी पडा था, लेकिन खाद्यवस्तु बिल्कुल नही थी। भूखा-प्यासा सेठ आखिर मर गया। प्राण निकलते समय उसने एक कागज पर लिखा कि "जवाहर से ज्वार का दाना बेहतर है।" तुलसीदासजी ने भी कहा है—

तुलसी तब ही जानिए, राम गरीब निवाज।
मोती-कण महगा किया, सस्ता किया अनाज।

७ **भोजन**

१ शतं विहाय भोक्तव्य, सहस्रं स्नानमाचरेत् ।

सौ काम छोडकर खाना चाहिए और हजार काम छोडकर नहाना चाहिए ।

२. चढी हाडी ने ठोकर नही मारणी ।

३ और वात खोटी, सिरै दाल-रोटी । —राजस्थानी कहावतें

४ यदि भोजन मिलता रहे तो सब दुःख सहे जा सकते है ।

५. चारु कदेई हारू को हुवैनी । —राजस्थानी कहावत

६ तीन महीनो में मनुष्य अपने शरीर के वजन जितना भोजन कर लेता है । —एक अनुभवी

७. **भोजन का पाचनकाल :—**

पदार्थ	घंटे	पदार्थ	घंटे
उबले चावल	१	कच्चा-दूध	२।
जौ	२	मक्खन	३
साबूदाना	१।।।	आलू	३।।
दूध	२	गोभी	४
		गाजर, मूली, मटर	३

८ आहारो, मैथुन, निद्रा, सेवनात् तु विवर्धते ।

आहार, मैथुन और निद्रा, सेवन करने से इन तीनों में वृद्धि होती है ।

७

भोजन

१ शतं विहाय भोक्तव्य, सहस्रं स्नानमाचरेत् ।

सौ काम छोडकर खाना चाहिए और हजार काम छोडकर नहाना चाहिए ।

२. चढ़ी हाडी ने ठोकर नही मारणी ।

३. और वात खोटी, सिरै दाल-रोटी । —राजस्थानी कहावतें

४. यदि भोजन मिलता रहे तो सव दुःख सहे जा सकते है ।

५. चारु कदेई हारू को हुवैनी । —राजस्थानी कहावत

६. तीन महीनो मे मनुष्य अपने शरीर के वजन जितना भोजन कर लेता है । —एक अनुभवी

७. **भोजन का पाचनकाल :–**

पदार्थ	घंटे	पदार्थ	घंटे
उबले चावल	१	कच्चा-दूध	२।
जौ	२	मक्खन	३
साबूदाना	१॥।	आलू	३॥
दूध	२	गोभी	४
		गाजर, मूली, मटर	३

८ आहारो, मैथुन, निद्रा, सेवनात् तु विवर्धते ।

आहार, मैथुन और निद्रा, सेवन करने से इन तीनो मे वृद्धि होती है ।

८

भोजन की विधि

१. पूजयेदशनं नित्य-मद्याच्चैतदकुत्सयन् ।
दृष्ट्वा हृष्येत्प्रसीदेच्च, प्रतिनन्देच्च सर्वशः ॥५४॥
पूजितं ह्यशनं नित्यं, बलमूर्जं च यच्छति ।
अपूजितं तु तद्भुक्त-मुभयं नाशयेदिदम् ॥५५॥
नोच्छिष्टं कस्यचिद्दद्यान्नाद्याच्चैव तथान्तरा ।
न चैवात्यशनं कुर्याद्, न चोच्छिष्टः क्वचिद्व्रजेत् ॥५६॥

—मनुस्मृति २

जो कुछ भोज्यपदार्थ मनुष्य को प्राप्त हो, वह उसे सदा आदर की दृष्टि से देखे । दोष न निकालता हुआ उसे खाए । उसे देखकर हर्ष, प्रसन्नता एवं उमंग का अनुभव करे ॥ ५४ ॥

सत्कार किया हुआ अन्न बल और शक्ति को देता है एवं तिरस्कार की भावना से खाया हुआ अन्न उन दोनों का नाश कर देता है ॥ ५५ ॥

जूठा भोजन किसी को न दें । प्रातः भोजन करने के बाद सायंकाल से पहले बीच में कुछ न खाएं । अधिक न खावें और जूठे मुंह कहीं न जावें ॥ ५६ ॥

२. [illegible], न भुञ्जीत विचक्षणः ।
[illegible] न तर्जनीम् ।

—विवेक-विलास

विचक्षण पुरुष अपवित्रता की अवस्था मे भोजन न करे । अति-लोलुपता से न खाए तथा तर्जनी (अगूठे के पासवाली अगुली को ऊचा करके भी न खाए ।

३. उष्णं स्निग्ध मात्रावत् जीर्णे वीर्याविरुद्ध इष्टे देशे, इष्टसर्वोपकरण नातिद्रुत नातिविलम्बित अजल्पन् अहसन् तन्मना भुञ्जीत । आत्मानमभिसमीक्ष्य सम्यक् ।

—चरकसहिता, विमानस्थान १।२४

उष्ण, स्निग्ध, मात्रापूर्वक पिछला भोजन पच जाने पर, वीर्य के अविरुद्ध, मनोनुकूल स्थान पर, अनुकूलसामग्रियो से युक्त, न अतिशीघ्रता मे, न अतिविलम्ब मे, न ही बोलते हुए, न ही हसते हुए, आत्मा की शक्ति का विचार करके एव आहार-द्रव्य मे मन लगाकर भोजन करना चाहिए ।

४ ईर्ष्या-भय-क्रोधपरिक्षतेन, लुब्धेन रुग्दैन्यनिपीडितेन । प्रद्वेषयुक्तेन च सेव्यमान-मन्न न सम्यक् परिणाममेति ।

—सुश्रुत

ईर्ष्या, भय, क्रोध, लोभ, रोग, दीनता, एव द्वेष—इन से युक्त मनुष्य द्वारा जो भोजन किया जाता है, उसका परिणाम अच्छा नहीं होता ।

५ विरोधी-आहार का सेवन नही करना चाहिए, उसके देश-विरुद्ध, कालविरुद्ध, अग्निविरुद्ध, मात्राविरुद्ध, कोष्ठविरुद्ध, अवस्थाविरुद्ध एव विधिविरुद्ध आदि अनेक भेद है ।

—चरकसहिता-सूत्रस्थान २७

६ साथ न खाने के खाद्य पदार्थ—

(१) गर्म रोटी आदि के साथ दही ।

(२) पानी मिला दूध और घी ।

(३) बराबर-बराबर घी-मधु (शहद) ।

(४) चाय के पीछे ठण्डा पानी-ककड़ी-तरबूज आदि ।

(५) खरबूजा और दही ।

(६) मूली और खरबूजे के साथ मधु ।

—कविराज हरनामदास

७ स्नानं कृत्वा जले शीते-ष्णं भोक्तुं न युज्यते ।

—विवेकविलास

ठण्डे जल से स्नान करके गरम-द्रव्य न खाए ।

८ ठंडो न्हावे तातो खावे, ज्यारे वैद कदे नहीं आवे ।

९ ऊभो मूते सूतो खावे, तिणरो दलदर कदे न जावे ।

—राजस्थानी कहावत

६

भोजन कैसा हो ?

१. स भार सौम्य ! भर्तव्यो, यो नरं नावसादयेत् ।
तदन्नमपि भोक्तव्यं, जीर्यते यदनामयम् ।

—वाल्मीकिरामायण ३।५०।१८

हे सौम्य ! उसी भार को उठाना चाहिए, जिससे मनुष्य को कष्ट न हो । उसी अन्न को खाना चाहिए जो रोग पैदा किए बिना पच जाए ।

२. हित मित सदाश्नीयाद्, यत् सुखेनैव जीर्यते ।
धातु प्रकुप्यते येन, तदन्न वर्जयेद्यति ।

—अत्रिस्मृति

सदा हितकारी एव परमित भोजन करना चाहिए, जो सुखपूर्वक हजम हो जाए ।

३. षट् त्रिंशत सहस्राणि, रात्रीणा हितभोजन ।
जीवत्यनातुरो जन्तु-र्जितात्मा समत सताम् ॥

—चरकसंहिता, सूत्रस्थान २७।३४८

हितकारी भोजन करनेवाला प्राणी छत्तीस हजार रात्रि पर्यन्त अर्थात् १०० वर्ष तक जीवित रहता है तथा वह आत्मविजयी, नीरोग एवं सत्पुरुषों द्वारा सम्मानित होता है ।

४. पचे सोई खाइयो, रुचे सोई बोलियो । —राजस्थानी कहावत

पाचन शक्ति के अनुसार खाना खाना चाहिए और रुचि के अनुसार बोलना चाहिए।

५. सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः,
सुशासिता स्त्री नृपतिः सुसेवितः।
सुचिन्त्य चोक्तं सुविचार्य यत्कृतं,
सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम्॥

—हितोपदेश १।२२

पचा हुआ भोजन, विचक्षण पुत्र, आज्ञा में रहनेवाली स्त्री, सुसेवित राजा, सोचकर कहा हुआ वचन और विचारपूर्वक किया हुआ काम—ये लम्बे समय तक विकार को प्राप्त नहीं होते।

६. अजीर्णे भोजनं विषम्।

—चाणक्यनीति ४।१५

अजीर्ण के समय किया हुआ भोजन विष के समान काम करता है।

७. तक्रान्तं खलु भोजनम्।

—सुभाषितरत्नखण्डमंजूषा

भोजन के अन्त में तक्र (छाछ) पीना चाहिए।

८. पुष्ट [illegible] बिना [illegible], [illegible] बिनाग।
तन [illegible] बनी बिना, कैसे [illegible] निराग?

—दोहा-संदोह ८३

९. [illegible] किसो।

—[illegible]

१०. मथुरा का पेडा अरु जयपुर की कलाकन्द,
बूंदी का लड्डू सब लड्डू से सवाया है।
उज्जैन की माजम, अजमेर की रेवडी रु,
काबुल सा मेवा और काहू न दिखाया है।
बनारस की शक्कर टक्कर सभी से लेत,
सिंध सा सिंघाडा स्वाद और न बनाया है।
कहत सजान बीकानेर की अधिकताई,
मिसरी, मतीरा, भुजिया तीनू ही सराया है॥

हृदय को पुष्ट बनानेवाले भोज्यपदार्थ सात्त्विक-प्रकृतिवाले मनुष्यो को प्रिय होते है अत ये सात्त्विक कहलाते हैं।

अतिकडुवे, अतिखट्टे, अतिनमकीन, अतिउष्ण, तीखे, रूखे, जलन पैदा करनेवाले दु ख-शोक एव रोग उत्पन्न करनेवाले भोज्यपदार्थ राजस-प्रकृतिवाले मनुष्यो को प्रिय होते है अत ये **राजस** कहलाते हैं।

बहुत देर का रखा हुआ, रसहीन, दुर्गन्धित, बासी, जूठा, अमेध्य-अपवित्र भोजन तामस-प्रकृतिवाले मनुष्यो को प्रिय होता हैं अत यह **तामस** कहलाता हैं।

४. नामं ठवणा दविए, खेत्ते भावे य होति बोधव्वो।
एसो खलु आहारो, निक्खेवो होइ पंचविहो॥
दव्वे सचित्तादि, खेत्ते नगरस्स जणवओ होइ।
भावाहारो तिविहो, ओए लोमे य पक्खेव॥

—सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ३ निर्युक्ति

आहार का नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, और भाव—ऐसे पाच प्रकार मे निक्षेप होता है।

किसी वस्तु का नाम आहार रखना नामआहार है एवं आहार की स्थापना करना स्थापनाआहार हैं।

द्रव्यआहार तीन प्रकार का है—१ सचित्त २ अचित्त ३ मिश्र। जिस क्षेत्र मे आहार किया जाता है, उत्पन्न होता है अथवा आहार का व्याख्यान होता है, उस क्षेत्र को क्षेत्रआहार कहते है अथवा नगर का जो देश, धन-धान्यादि द्वारा उपभोग मे आता है, वह क्षेत्रआहार है।

क्षुधावेदनीयकर्म के उदय मे भोजनरूप मे जो वस्तु ली जाती है, उसे भावआहार कहते है। वह तीन प्रकार का है—

१ ओजआहार—जन्म के प्रारम्भ में लिया जानेवाला, २ लोम-आहार—त्वचा या रोम द्वारा लिया जानेवाला, ३ प्रक्षिप्तआहार—मुख अथवा इन्जेक्शन आदि द्वारा लिया जानेवाला।

४ णेरइयाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा-इंगालोवमे, मुम्मुरोवमे, सीयले, हिमसीयले।

तिरिक्खजोणियाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा-कंकोवमे, बिलोवमे, पाणमंसोवमे पुत्तमंसोवमे।

मणुस्साणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा-असणे, पाणे, खाइमे, साइमे।

देवाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा-वण्णमंते, गंधमंते रसमंते फासमंते। —स्थानांग ४।४।३४०

नैरयिकों का आहार चार प्रकार का कहा है—

(१) अंगारों के समान—थोड़ी देर तक जलानेवाला।

(२) मुर्मुर के समान—अधिक समय तक दाह उत्पन्न करनेवाला।

(३) शीतल—सर्दी उत्पन्न करनेवाला।

(४) हिमशीतल—हिम के समान अत्यन्त शीतल।

तिर्यञ्चों का आहार चार प्रकार का कहा है—

(१) कंक के समान—सुभक्ष्य और सुखकारी परिणामवाला।

(२) बिल के समान—बिल में वस्तु की तरह (रस का स्वाद दिये बिना) शीघ्र पेट में जानेवाला।

(३) पाणमांस के समान—[illegible] घृणा पैदा करनेवाला।

(४) पुत्रमांस के समान—[illegible] कष्ट से खाया जानेवाला।

मनुष्यो का आहार चार प्रकार का कहा है—

(१) असन—दाल-रोटी-भात आदि।

(२) पान—पानी आदि पेय पदार्थ।

(३) खादिम—फल-मेवा आदि।

(४) स्वादिम—पान-सुपारी आदि मुंह साफ करने की चीजें।

देवताओ का आहार चार प्रकार का कहा है–

(१) अच्छे वर्णवाला, (२) अच्छी गन्धवाला, (३) अच्छे रसवाला, (४) अच्छे स्पर्शवाला।

९ नव विगईओ पण्णत्ताओ, त जहा—खीर, दहि, णवणीय, सप्पि, तिल्ल, गुलो, महु, मज्ज, मस। —स्थानांग ९।६७४

नव विकृत्तिया-विगय कही हैं–१ खीर-(दूध), २ दही ३ मक्खन, ४ घी, ५ तेल, ६ गुड, ७ मधु-शहद ८ मद्य, ९ मांस। मक्खन मद्य, मांस, मधु—इन चारो को महाविगय भी कहा है।

११ भोजन में आवश्यक तत्त्व

[१] प्रोटीन—मांस जातीय-पौष्टिकपदार्थ।

[२] फेट्स—चर्बीले पदार्थ घी-तेल आदि।

[३] खनिज—लवण सदृश पदार्थ।

[४] कार्बोहाइड्रेट्स—शर्कराजातीय-चीनी आदि पदार्थ।

[५] कैलशियम—चूना-फासफोरस आदि।

[६] लोहा—लोहयुक्त पदार्थ।

[७] पानी—पेय पदार्थ।

[८] कैलोरी—शरीर को गर्मी और शक्ति देनेवाले तत्त्व।

किस खाद्य में प्रोटीन आदि प्रतिशत कितनी हैं एवं कैलोरीशक्ति प्रतिसहस्र कितनी है—यह निम्नलिखित चार्ट से समझ लीजिए।

मांसाहारी-खाद्य

पदार्थ	प्रोटीन	फैट्स	खनिज लवण	कार्बोहाइड्रेट्स	कैलशियम्	लोहा	पानी	कैलोरी
—	%	%	%	%	%	%	%	%Grs
मुर्गी का अंडा	१३ ३	१३ ३	१ ०	—	० ०६	२ १	७३ ७	१७३
बत्तख का अंडा	१३·५	१३·७	१ ०	० ७	० ०७	३ ०	७१ ०	१८०
कलेजी (भेड़)	१९ ३	७ ५	१·५	१ ४	०·०१	६ ३	७० ४	१५०
बकरी का गोश्त	१८ ५	१३·३	१ ३	—	० १५	२ ५	७१ ५	१९४
सूअर का गोश्त	१८·७	४ ४	१ ०	—	० ०३	२ ३	७७ ४	११४
गाय का गोश्त	२२·६	२ ६	१ ०	—	०·०१	० ८	७३ ४	११४
मछली	२२·६	०·६	० ८	—	० ०२	० ९	७८ ४	९१

---

१ भारत सरकार द्वारा प्रकाशित हेल्थ-बुलेटिन न०-२३ से साभार।

- प्रकाशक—श्री केवलनन्द जैन, जनकल्याण समिति, १४८३, मालीवाड़ा-दिल्ली।
- (मांसाहार-खाद्य से शाकाहारी-खाद्य की श्रेष्ठता दिखाने के निमित्त।

वन्दगोभी, मूली के पत्ते), टमाटर, सहिजन की पत्तियां।

विटामिन 'डी'—सूरज की किरणे, दूध और दूध की बनी चीजें, मछली का तेल तथा अण्डे।[1]

—हिन्दुस्तान, १२ अप्रेल, १९७१

प्रोटीन आदि तत्त्व तथा विटामिन के लोभ मे मास मछली और अण्डो का सेवन करनेवाले व्यक्तियो को पुस्तक पृष्ठ ९६ से १०० तक का चार्ट और विटामिन का विवेचन ध्यान से पढकर मासाहार परित्याग कर देना चाहिए।

—धनमुनि

---

१ भारत सरकार की तरफ से जनता के हित मे पौष्टिक और स्वादिष्ट मार्डनब्रेड के निर्माता मार्डन बेकरीज की ओर से

भोजन का ध्येय

१. खुराक स्वाद के लिए नहीं परन्तु शरीर को दास की तरह पालने के लिए है। —गांधी

२. जीने के लिए खाना किसी एक दृष्टि से जरूरी है, किन्तु खाने के लिए जीना (स्वादलोलुप होना) सभी प्रकार से मूर्खता है।

३. स्वाद के लिए खाना अज्ञान, जीने के लिए खाना आवश्यकता और संयम की रक्षा के लिए खाना साधना है।

४. उनदूणा खाटी, दूणा माटी। —राजस्थानी कहावत

५. प्रतिदिन दस लाख रक्त के लालपरमाणु नष्ट होते हैं। उनकी पूर्ति आहार से ही की जा सकती है।

भोजन की शुद्धि

१. आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धि , सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृति ,
स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीना विप्रमोक्ष. ।

—छान्दोग्योपनिषद् ७।२६।२

आहार की (इन्द्रियो द्वारा ग्रहण किये गये विषयो की) शुद्धि होने से सत्त्व-अन्त करण की शुद्धि होती है। उससे स्थायी स्मृति का लाभ होता है । स्मृति के लाभ से अर्थात् जागरूक असूढज्ञान की प्राप्ति से मनुष्य की सब ग्रन्थियां खुल जाती हैं ।

२. आहार सुधारिये । स्वास्थ्य अपने-आप सुधर जायेगा ।

—गाधीजी

३. कुभोज्येन दिन नष्टम् ।

—सुभाषितरत्नखण्ड मंजूषा

कुभोजन करने से दिन को नष्ट हुआ समझो ।

४. जिसो अन्न खावै, विसी ही डकार आवै ।

—राजस्थानी कहावत

५. जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन्न ।
जैसा पीवे पानी, वैसी बोले बानी ॥

—हिंदी कहावत

६. दीपो हि भक्षयेद् ध्वान्त, कज्जल च प्रसूयते ।
यदन्न भक्ष्यते नित्य, जायते तादृशी प्रजा: ॥

—चाणक्यनीति ८।३

जो जैसा अन्न खाता है उसके वैसी ही सन्तान पैदा होती है। दीपक काले अन्धेरे का भक्षण करता है तो उसकी सन्तान भी काली (कज्जल) होती है ।

(अवसर्पिणीकाल में पहले आरे के मनुष्य तीन दिन से, दूसरे आरे के दो दिन से, तीसरे आरे के एक दिन से, चौथे आरे के दिन मे एक वार और पाँचवे आरे के दिन मे दो वार भोजन किया करते है, किन्तु छठे आरेवाले मनुष्य आहार के विपय मे मर्यादाहीन है अर्थात् उन्हे भूख वहुत लगती है ।)

देवो के आहार के विपय मे ऐसा माना गया है कि दस हजार वर्ष की आयुवाले देवता एक दिन मे, पल्योपम की आयुवाले दो दिन मे यावत् नौ दिन से, एक सागर की आयुवाले एक हजार वर्प से एव तेतीससागर की आयु-वाले देवता तैंतीस हजार वर्प मे, भोजन के इच्छुक होते हैं।

(प्रज्ञापनापद २८ के आधार से)

१६ भोजन के समय दान

—यजुर्वेद ४०।१

१. त्यक्तेन भुञ्जीथाः ।

कुछ त्याग करके खाओ ।

—ऋग्वेद १०।११७।१६

२. केवलाघो भवति केवलादी ।

अतिथि आदि को दिये बिना अकेला भोजन करनेवाला केवल पाप का भागी होता है ।

३. एकः स्वादु न भुञ्जीत, एकश्चार्थान्न चिन्तयेत् ।
एको न गच्छेदध्वानं, नैकः सुप्तेषु जागृयात् ॥

—विदुरनीति १।५१

मनुष्य को चाहिए कि कभी भी अकेला स्वादिष्ट भोजन न करे, अकेला किसी विषय का निश्चय न करे, चलने के समय अकेला न चला [illegible] सबके सो जाने के बाद अकेला जागता न रहे।

—अथर्ववेद ९।६।७

४. अशितावत्यतिथावश्नीयात् ।

अतिथि के खाने के बाद ही खाना चाहिए ।

५. [illegible] ॥८४॥
[illegible]
[illegible] ॥८५॥

[illegible]

का चिन्तन करे—यदि आचार्य और साधु मुझ पर अनुग्रह करें (मेरे द्वारा लाया हुआ आहार लें) तो मैं निहाल हो जाऊँ—मानूं कि उन्होंने मुझे भवसागर से तार दिया।

इस प्रकार विचारकर मुनि प्रेमपूर्वक साधुओं को यथाक्रम निमन्त्रण दे। उन निमन्त्रित साधुओं में से यदि कोई साधु भोजन करना चाहे तो उनके साथ भोजन करे।

६. **खानेवाले दो प्रकार के होते हैं—**
कुत्तों की तरह छीना-झपटी करके खानेवाले,
कौवे की तरह सभी साथ बैठकर खानेवाले।
—श्रीरामकृष्ण

भोजन के समय मौन—

१. भोजन करते समय खाद्यपदार्थों की निन्दा या प्रशंसा करने से कर्मों का बन्ध होता है अत. उस समय प्राय. मौन कर लेना चाहिए।
—धनमुनि

२ ये तु संवत्सर पूर्ण, नित्यं मौनेन भुञ्जते।
युगकोटिसहस्रं तै, स्वर्गलोके महीयते॥
—चाणक्यनीति ११।६

जो भोजन करते समय एक वर्ष तक पूर्ण मौन रखते हैं, वे हजार-कोटि युग तक स्वर्ग में पूजे जाते हैं।

भोजन के बाद

१. भुक्त्वा राजवदासीत, यावदन्नक्लमो गतः,
ततः पादशतं गत्वा, वामपार्श्वेन संविशेत्। —सुश्रुत

खाने के बाद जब तक शरीर में अन्न की क्लान्ति रहे, तब तक राजा की तरह प्रसन्नमुद्रा में बैठना चाहिए। फिर सौ कदम टहल कर कुछ समय लेट जाना चाहिए।

२. ऑफ्टर डिनर रेस्ट ए व्हाइल, ऑफ्टर सपर वाक ए माइल।
—अंग्रेजी कहावत

मध्याह्न भोजन के बाद कुछ आराम करना चाहिए और सायंकाल भोजन के बाद कुछ घूमना चाहिए।

३. खाय-पीय कर सो जाणा, मार-कूट कर भाग जाणा।
—राजस्थानी कहावत

४. भुक्त्वा व्यायाम-व्यवायौ सद्यो व्यापत्तिकारणम्।
—नीतिवाक्यामृत २५।३०

खाते ही व्यायाम करना एवं मैथुन करना तत्काल हानिकारक है।

☼

का चिन्तन करे—यदि आचार्य और साधु मुझ पर अनुग्रह करें (मेरे द्वारा लाया हुआ आहार लें) तो मैं निहाल हो जाऊँ—मानूँ कि उन्होंने मुझे भवसागर से तार दिया।

इस प्रकार विचारकर मुनि प्रेमपूर्वक साधुओं को यथाक्रम निमन्त्रण दे। उन निमन्त्रित साधुओं में से यदि कोई साधु भोजन करना चाहे तो उनके साथ भोजन करे।

६. **खानेवाले दो प्रकार के होते हैं—**
कुत्तों की तरह छीना-झपटी करके खानेवाले,
कौवे की तरह सभी साथ बैठकर खानेवाले।

—श्रीरामकृष्ण

भोजन के समय मौन—

१. भोजन करते समय खाद्यपदार्थों की निन्दा या प्रशंसा करने से कर्मों का बन्ध होता है अतः उस समय प्रायः मौन कर लेना चाहिए। —धनमुनि

२. ये तु संवत्सरं पूर्णं, नित्यं मौनेन भुञ्जते।
युगकोटिसहस्रं तैः, स्वर्गलोके महीयते॥

—चाणक्यनीति ११।६

जो भोजन करते समय एक वर्ष तक पूर्ण मौन रख लेते हैं, वे हजार-कोटि युग तक स्वर्ग में पूजे जाते हैं।

☼

अधिक होने पर हानि करता है और कम होने पर पुष्टि नहीं करता।

७ कैलोरी—हम जो भोजन करते हैं, वह ईधन का काम करता है। वह धीरे-धीरे जलता रहता है और हमारे जीवित रहने के लिये आवश्यक गर्मी और शक्ति प्रदान करता है। कौनसा भोजन शरीर को कितनी गर्मी प्रदान करता है, इसे कैलोरियो मे गिना जाता है। जैसे एक औंस लौकी मे ८ कैलोरियाँ और एक औंस बादाम मे ८० कैलोरियाँ होती हैं। बच्चो को अधिक कैलोरीयुक्त भोजन की जरूरत होती है। अगर उनकी अवस्था ६ से १२ वर्ष तक की है तो उन्हे प्रतिदिन २५०० कैलोरियो की आवश्यकता पड़ेगी।

—विश्वकोश भाग ३

८. भारत मे खाद्य पदार्थों के प्रति व्यक्ति उपभोग की कैलारी प्रतिदिन १७५१ से बढकर २१८५ हो गई। अनाज की प्रति व्यक्ति सप्लाई १३ ८ औंस से बढकर १५४ औंस प्रतिदिन हो गई।

—हिन्दुस्तान ३१ अगस्त १९६६

१९ मित भोजन

१. यो मितं भुङ्क्ते, स बहु भुङ्क्ते ।

—नीतिवाक्यामृत २५।३८

जो परिमित खाता है, वह बहुत खाता है ।

२. गुणाश्च षड्मितभुजं भजन्ते, आरोग्यमायुश्च बलं सुखं च
अनाविलं चास्य भवत्यपत्यं, न चैनमाद्यून इति क्षिपन्ति ।

—विदुरनीति ५।३४

परिमित भोजन करनेवाले को ये छह गुण प्राप्त होते हैं—आरोग्य, आयु, बल और सुख तो मिलते ही हैं । उसकी सन्तान सुन्दर होती है तथा यह बहुत खानेवाला है, ऐसे कहकर लोग उसपर आक्षेप नहीं करते ।

३. हियाहारा मियाहारा, अप्पाहारा य जे नरा ।
न ते विज्जा चिगिच्छंति, अप्पाणं ते तिगिच्छगा ॥

—ओघनिर्युक्ति ५७८

जो मनुष्य हितभोजी, मितभोजी एवं अल्पभोजी हैं, उनको वैद्यों की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं होती । वे अपने-आप ही चिकित्सक (वैद्य) होते हैं ।

४. कालं क्षेत्रं मात्रां स्वात्म्यं द्रव्य-गुरुलाघवं स्वबलम् ।
ज्ञात्वा योऽभ्यवहार्यं, भुङ्क्ते किं भेषजैस्तस्य ॥

—प्रशमरति १३७

जो काल, क्षेत्र, तथा आत्मा का हित, द्रव्य की गुरुता-लघुता एवं अपने बल का विचार कर भोजन करता है, उसे दवा की जरूरत नहीं रहती।

५ बीमारियों की अधिकता पर यदि आपको आश्चर्य हो तो अपनी थाली गिनिये। —सिनेका

२०

अतिभोजन

१. अनारोग्यमनायुष्य-मस्वर्ग्यं चातिभोजनम् ।

—मनुस्मृति २।५७

अधिक भोजन करना अस्वास्थ्यकर है। आयु को कम करने-वाला और परलोक को बिगाडनेवाला है।

२ मधुरमपि बहुखादितमजीर्णं भवति।

अधिक मात्रा मे खाया हुआ मधुर पदार्थ की बदहजमी पैदा कर देता है।

३. अतिमात्रभोजी देहमग्निं विधुरयति।

—नीतिवाक्यामृत १६।१२

मात्रा से अधिक खानेवाला जठराग्नि को मन्द करता है।

४ बहुभोजी एवं बहुभोगी बहुरोगी होता है।

—डायोजिनिस

५. भूखो मर जाना विवशता है और खाकर मरना मूर्खता।

—आचार्य तुलसी

—राजस्थानी कहावत

६ आहार मारै या भार मारै।

७. मनमां आवे तेम बोलवू नहि ने भावे तेटलूं खावूं नहि।

अन्न पारकुं छे पण पेट कंई पारकूं नथी।

—गुजराती कहावत

८. एकबार खानेवाला महात्मा, दो बार समलकर खानेवाला

बुद्धिमान और दिन भर बिना विवेक खानेवाला पशु।

—बुद्ध

९ बार-बार खानेवालों की अपेक्षा कम बार खानेवाले विशेष सुखी होते हैं।

१० पाँचवें आँखवाले मनुष्यों की अपेक्षा ४-३-२-१ आँखवाले मनुष्य एवं देवता क्रमशः अधिक सुखी हैं, क्योंकि वे कम खाते हैं।

११. थोवाहारो थोवभणियो य, जो होइ थोवनिद्दो य।
थोवोवहि-उवगरणो, तस्स देवावि पणमंति॥

—आवश्यकनिर्युक्ति १२६५

जो साधक थोड़ा खाता है, थोड़ा बोलता है, थोड़ी नींद लेता है और थोड़ी ही धर्मोपकरण की सामग्री रखता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

१२. कम खाना और गम खाना अक्लमंदी है।

—हिन्दी कहावत

२१ अधिक खानेवाले आदमी

१ वालोत्तरा (मारवाड) में एक मन घी को तेरह आदमी खा जाते थे एव वे मण के तेरिये कहलाते थे। नये हाकिम ने उनको देखना चाहा। लोगो ने कहा—हजूर घटती का जमाना है। अत अब तो नौ ही रह गये अर्थात् नौ आदमी ही मन घी खा जाते हैं।

२ वीकानेर मे एक सेठानी ने खीर-पूडे का श्राद्ध किया, सूंसा, तेजा एव उनकी वहन लाज तीनो भाई-वहन सवा मन दूध की खीर खा गये।

३. कलकत्ते मे एक राजस्थानी ब्राह्मण ने खाना खाकर ठाकुर से दो पापड मागे। ठाकुर ने कहा—फुलके चाहे जितने ले लो, पापड दो नही मिल सकते। विवाद बढा ब्राह्मण ने ५६ फुलके खाए। ठाकुर ने माफी मांगी एवं दूसरा पापड देकर पल्ला छुडाया।

४. हरियाणा के एक खिलाडी ने परस्पर विवाद करके ६० रोटियां खाई। विस्मित लोगो के पूछने पर कहा—ये कोई रोटिया थोडी ही हैं, ये तो बुरकियां है।

—हिन्दुस्तान, ३० मार्च, १९७?

तब जयाचार्य ने कहा, बर्फी कहाँ से मिलेगी ? छोटूजी बोले, बर्फी न सही, दो रोटी तो मिलेगी।

११ बैंगकाक के सीमावर्ती नगर लोश्रपुर से आया हुआ एक ४२ वर्षीय ग्रामीण सामान्यतया खानेवाले ३० मनुष्य के बराबर भोजन खा जाता है। एक बार में तीन गेलन पानी या सोडा-लैमन जैसे मधुरपेय की तीन-तीन पेटियाँ पी जाता है। —नवभारत टाइम्स, २४ मई, सन् १९६५

१२. विश्व में अधिक गेहूँ खानेवाला देश फ्रांस है और अधिक चीनी खानेवाला पंजाब है।

४. एक डाक्टर ने मुआयना करके बताया कि फ्रांस के एम० डिलेयर का पेट गाय के जैसा था। वह दो घण्टो मे ४२० पिन्ट जल पी जाता था। दस मिनटो मे सौ गिलास बीयर पी जाता था। उसने दो दिनो मे पावरोटी के २१० टु डे खा लिये थे। अपना आहार बदल-बदल कर लेने के शौक मे वह जिन्दा मछलिया, कछुए तथा मेढक खा जाता था।

—हिन्दुस्तान, ११ जुलाई, १९७०

६. भोजनं कुरु दुर्बुद्धे ! मा शरीरे दयां कुरु ।
परान्नं दुर्लभं लोके, शरीराणि पुनः-पुनः ॥

अरे मूर्ख ! भोजन करले, शरीर पर दया मत कर, क्योंकि संसार मे पराया अन्न दुर्लभ है, शरीर तो फिर-फिर के मिलता ही रहता है।

माले मुफ्त दिले बेरहम । —उर्दू कहावत

मुफ्त री मुर्गी काजीजी ने हलाल । –राजस्थानी कहावत

मुफ्त का चन्दन घस वे लाला ।
तू भी घस, तेरे बाप को बुलाला । –हिन्दी कहावत

२४ रात्रिभोजन-निषेध

१ घोरान्धकार रुद्धाक्षै, पतन्तो यत्र जन्तवः ।
नैव भोज्ये निरीक्ष्यन्ते, तत्र भुञ्जीत को निशि ॥

—योगशास्त्र ३।४९

रात्रि मे घोर अन्धकार के कारण भोजन मे गिरते हुए जीव आँखो से दिखाई नही देते, उस समय कौन समझदार व्यक्ति भोजन करेगा ।

२ नैवाहुतिर्न च स्नानं, न श्राद्ध देवतार्चनम् ।
दानं वा विहितं रात्रौ, भोजनं तु विशेषतः ॥

—योगशास्त्र ३।५६

अन्यमत मे कहा है कि रात्रि मे होम, स्नान, श्राद्ध देवपूजन या दान करना भी उचित नही है, किन्तु भोजन तो विशेषरूप से निषिद्ध है ।

३. देवैस्तु भुक्त पूर्वाह्णे, मध्याह्ने ऋषिभिस्तथा ।
अपराह्णे च पितृभिः, सायाह्ने दैत्य-दानवैः ॥
सन्ध्याया यक्ष-रक्षोभि, सदा भुक्तं कुलोद्वह !
सर्ववेला व्यतिक्रम्य रात्रौ भुक्तमभोजनम् ॥

—योगशास्त्र ३।५८-५९

हे युधिष्ठिर दिन के पूर्वभाग मे देवो ने, मध्याह्न मे ऋषियो ने

अपराह्न में पितरों ने, सायंकाल में दैत्यों-दानवों ने, तथा सन्ध्या-दिन रात की सन्धि के समय यक्षों-राक्षसों ने भोजन किया है। इन सब भोजनवेलाओं का उल्लंघन करके रात्रि में भोजन करना अभक्ष्य-भोजन है।

४. हृन्नाभिपद्मसंकोचश्चण्डरोचिरपायतः ।
अतो नक्तं न भोक्तव्यं, सूक्ष्मजीवादनादपि ।

—योगशास्त्र ३।६०

आयुर्वेद का अभिमत है कि शरीर में दो कमल होते हैं—हृदय-कमल और नाभिकमल। सूर्यास्त हो जाने पर ये दोनों कमल संकुचित हो जाते हैं अतः रात्रि-भोजन निषिद्ध है। इस निषेध का दूसरा कारण यह भी है कि रात्रि में पर्याप्त प्रकाश न होने से छोटे-छोटे जीव भी खाने में आ जाते हैं। इसलिए रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिए।

५ अत्थंगयम्मि आइच्चे, पुरत्था य अणुग्गए।
आहारमाइयं सव्वं, मणसा वि न पत्थए।

—दशवैकालिक ८।२८

सूर्य के अस्त हो जाने पर और प्रातःकाल सूर्य के उदय न होने तक सब प्रकार के आहारादि की साधु मन से भी इच्छा न करे।

६. रात्रि के समय यदि भोजन का उद्गार (गुचलकी) आ जाए तो थूक देना चाहिए। न थूककर वापिस-निगल जानेवाले साधु-साध्वी को गुरु-चातुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है।

—निशीथ १०।३५

७ सूर्य उदय हुआ जान कर साधु यदि आहार को लाकर खाने लगे, फिर यदि पता लग जाए कि सूर्य उदय नहीं हुआ

तो आहार को परठ देना चाहिए। चाहे मुह मे हो, हाथों मे हो या पात्र मे हो। न परठनेवाले साधु-साध्वी को गुरु-चातुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है।

—निशीथ १०।३१-३२

८ जे भिक्खू राइ भोयणस्स वन्न वदई वदतं वा साइज्जई।

—निशीथ ११।७६

जो साधु रात्रिभोजन की प्रशसा करे एव प्रशसा करते हुए का अनुमोदन करे तो उसे मासिक-प्रायश्चित्त आता है।

९ किं जैनै रजनीभोजनं भजनीयम्।

क्या जैनलोगो को रात्रिभोजन करना चाहिए? नही-नही, कदापि नही।

१० नोदकमपि पातव्यं, रात्रौ नित्यं युधिष्ठिर।
तपस्विना विशेषेण, गृहिणा च विवेकिनाम्॥

हे युधिष्ठर? रात के समय पानी भी नही पीना चाहिए, फिर भोजन का तो कहना ही क्या? यह बात साधुओ को और विवेकी गृहस्थो को विशेष ध्यान देने योग्य है।

११ मृते स्वजनमात्रेऽपि, सूतक जायते किल।
अस्त गते दिवानाथे, भोजनं क्रियते कथम्?
अस्त गते दिवानाथे, आपो रुधिरमुच्यते।
अन्न मांससमं प्रोक्तं, मार्कण्डेयमहर्षिणा॥
रक्तीभवन्ति तोयानि, अन्नानि पिशितानि च।
रात्रौ भोजनसक्तस्य, ग्रासे तन्मांसभक्षणात्॥

स्वजन के मरने पर भी सूतक होता है तो फिर सूर्य के अस्त होने पर (मर जानेपर) भोजन कैसे किया जाए ?

सूर्य अस्त होने के बाद मार्कण्डेय ऋषि ने पानी को खून एव अन्न को मास के समान कहा है, क्योकि रात्रिभोजन मे आगन्तुक व्यक्ति के ग्रास मे किसी जीव का मास खाया जाने से पानी खून एव अन्न मासवत् हो जाता है।

२५ रात्रि भोजन से हानि

१ मेधा पिपीलिका हन्ति, यूका कुर्याज्जलोदरम् ।
कुरुते मक्षिका वान्ति, कुष्ठरोग च कोलिक ॥५०॥
कण्टको दारुखण्ड च, वितनोति गलव्यथाम् ।
व्यञ्जनान्तर्निपतित-स्तालु विद्‌ध्यति वृश्चिक ॥५१॥
विलग्नश्च गले वाल , स्वरभङ्गाय जायते ।
इत्यादयो दृष्टदोषा , सर्वेषा निशि भोजने ॥५२॥

—योगशास्त्र ३

भोजन के साथ चिउटी खाने मे आ जाय तो वह बुद्धि का नाश करती है, जू जलोदर रोग उत्पन्न करती है, मक्खी से वमन हो जाता है और कोलिक-छिपकली से कोढ उत्पन्न होता है ॥५०॥ कॉटे और लकडी के टुकडे से गले मे पीडा उत्पन्न होती है, शाक आदि व्यजनो मे बिच्छू गिर जाए तो वह तालु को वेध देता है ॥५१॥

गले मे बाल फस जाए तो स्वर भग हो जाता है। रात्रि भोजन मे पूर्वोक्त अनेक दोष प्रत्यक्ष दिखाई देते है ॥५२॥

२. उलूक-काक-मार्जार-गृध्र-शम्बर-शूकरा ।
अहि-वृश्चिक-गोधाश्च, जायन्ते रात्रिभोजनात् ॥

—योगशास्त्र ३।६७

रात्रिभोजन करने से मनुष्य मरकर उल्लू, काक, बिल्ली,

गीध, सम्बर, शूकर, सर्प, बिच्छू और गोह आदि अधम गिने जानेवाले तिर्यञ्चो के रूप मे उत्पन्न होते है।

३. इन्दौर मे पुजारी का दूध सॉप पैठ गया, रात को उसे पीने से पुजारी मर गया।

४. उत्तरप्रदेश मे राधते समय खीर में सांप गिर जाने से काफी बराती मर गए।

५. मुजफ्फरनगर के गांव मे रात को पानी पीते समय बिच्छू आ गया एव गले में डंक मारने से, पानी पीनेवाला व्यक्ति मर गया।

६. गोगुदा (उदयपुर) मे रात को खाते समय एक भाई के मुह मे आम के आचार की जगह मरी हुई चुहिया आ गई।

☼

२६ रात्रिभोजन के त्याग से लाभ

१ ये रात्रौ सर्वदाहार, वर्जयन्ति सुमेधस ।
तेषा पक्षोपवासस्य, फल मासेन जायते ।

जो रात्रि भोजन का सदा त्याग कर देते हैं, उनको महीने मे पन्द्रह दिनो के उपवास का फल यही मिल जाता है।

२. एक भक्ताशनान्नित्य-मग्निहोत्रफल भवेत् ।
अनस्तभोजनो नित्य, तीर्थयात्राफल लभेत् ।

रात्रिभोजन का त्याग करनेवाले को अग्निहोत्र का एव तीर्थ-यात्रा का फल हमेशा मिलता रहता है।

☼

१. छुहासमा वेयरणा नत्थि ।

भूख के समान कोई भी दूसरी वेदना-पीड़ा नहीं है ।

२. नास्ति क्षुधासमं दुःखं, नास्ति रोगः क्षुधासमः ।

भूख जैसा कोई दुःख नहीं और भूख जैसी कोई बीमारी नहीं ।

३. जिघच्छा परमा रोगा । —धम्मपद १५।७

भूख सबसे बड़ा रोग है ।

४. आहारमग्निः पचति, दोषानाहारवर्जितः ।
धातून् क्षीणेषु दोषेषु, जीवितं धातुसंक्षये । —आयुर्वेद

जठराग्नि आहार को पचाती है । आहार के अभाव में दोषों को, उनके अभाव में धातुओं को और उनके क्षीण होने पर जीवन को खा जाती है ।

५. या सद्रूप विनाशिनी श्रुतहरी पञ्चेन्द्रियोत्कर्षिणी,
चक्षुः-श्रोत्र-ललाट-दैन्यकरणी वैराग्यमुत्पादिनी ।
बन्धूनां त्यजनी विदेशगमनी चारित्रविध्वंसिनी,
सेयं वाध्यति पञ्चभूतदमनी क्षुत् प्राणसंहारिणी ।
—चन्द्रचन्द्रीराम

जो रूप का विनाश करनेवाली है, ज्ञान का हरण करनेवाली

है, पाच इन्द्रियो का उत्कर्षण करनेवाली है, आख-कान-नाक को हीन-दीन बनानेवाली है, वैराग्य को उखाड फेंकनेवाली है, स्वजन बन्धुओ से दूर करनेवाली है,विदेशो मे भटकानेवाली है, चारित्र का ध्वंस करनेवाली है और पाचो भूतो का दमन करनेवाली है। वह प्राण-संहारिणी यह क्षुधा सारे जगत को पीडित कर रही है।

६ अशनाया वै पाप्मा मति । —ऐतरेय-ब्राह्मण २।२

भूख ही सब पापो की जड एव बुद्धि को नष्ट करनेवाली है।

७ आगी बडवागि मे बडी है भूख पेट की। —तुलसी कवितावली

८ भूख राड भूडी, आख जाय ऊंडी।
पग थाय पाणी, हैडे नो आवे वाणी॥
बाजरानो रोटलो, तादला नी भाजी।
एटला वाना जस तो मन थाय राजी॥ —गुजराती पद्य

९ काम न देखे जात-कुजात, भूख न देखे वासी भात।
नीद न देखे टूटी खाट, प्यास न देखे धोबी घाट।
—हिन्दी कहावत

१० ऊघ न जुवे साथरो, भूख न जुवे भाखरो।
—गुजराती कहावत

११ छुहा जाव सरीर, ताव अत्थि। —आचाराङ्ग चूलिका १।२।२
जब तक शरीर है, तब तक भूख है।

१२. बुभुक्षा जयते यस्तु, स स्वर्ग जयते ध्रुवम्।
—महाभारत-अश्वमेधपर्व ६०।६१

जो भूख को जीत लेता है, वह निश्चितरूप मे स्वर्ग को जीत लेता है।

भूख मे स्वाद

१. सब सू मीठी भूख । —राजस्थानी कहावत

२. भोजन के लिये सबसे अच्छी चटनी भूख है । —सुकरात

३. भूख मीठी क लापसी । —राजस्थानी कहावत

४ सम्पन्नतरमेवान्नं, दरिद्रा भुञ्जते सदा,
क्षुत् स्वादुता जनयति, साचाढ्येषु सुदुर्लभा ।
—विदुरनीति २।५०

गरीब व्यक्ति जो कुछ खाते है, स्वादिष्ट ही खाते हैं। भूख भोजन को स्वादिष्ट बना देती है। धनिको को वह भूख दुर्लभ है। उन्हे प्राय भूख कम लगती हैं।

५. तरुण सर्षपशाकं, नवौदनपिच्छलानि च दधीनि ।
अल्पव्ययेन सुन्दरि ! ग्राम्यजनो मिष्ठमश्नाति ॥

ताजा सरसो का शाक और थिरकी सहित दही मे बनाये हुए नये भातो के भोजन खाकर ग्रामीण लोग थोडे ही खर्चे मे मीठा भोजन कर लेते हैं।

६. दि फुल स्टमक लूथ्स दि हनी कोम्ब । —अंग्रेजी कहावत
भरे पेट पर शक्कर खारी ।

७. अमीर भूख की खोज करता है, गरीब रोटी की खोज करता है । —डेनिस कहावत

८ एक वे, जिनके पास भूख से ज्यादा भोजन है।
दूसरे वे, जिनके पास भोजन से ज्यादा भूख है।
—निकोलस चेम्फर्ट

९ खावे जीती भूख, सोवे जीती नीद। —राजस्थानी कहावत

१० मारवाड का एक चारण २६ रोटिया खाता था। दुष्काल पडा। घरवाले उससे नाराज होने लगे। ठाकुर साहब के कहने पर उसने सात-सात दिन से एक-एक रोटी घटानी शुरू कर दी। आखिर तीन रोटी पर आ गया।

भूखा

१. भूखा सो रूखा।

—राजस्थानी कहावत

२ भूख्ये भक्ति न थाय मुरारी, न थाय जरारी।

—गुजराती कहावत

३. भूखा भजन न होय गोपाला,
ले ले अपनी कंठी-माला।

—राजस्थानी कहावत

४ ढिड ना पईया रोटीया, सबे गल्ला खोटीया।

—पंजाबी कहावत

५ भूखी कुतरी भोटीला खाय।

६ भूख्यानें शु लूखु।

—गुजराती कहावतें

७ कोफतारा नानेतिही कोफतस्त।

—पारसी कहावत

भूखे के लिये सूखी रोटी भी मिठाई के बराबर है।

भूखो धाया पतीजे।

—राजस्थानी कहावत

भूखो मारवाडी गावे, भूखो गुजराती सूवे,
भूखो बगाली भात-भात पुकारे।

हाथ सूको र टाबर भूखो।

—राजस्थानी कहावतें

बुभुक्षित· किं द्विकरेण भुड्क्ते।
भूखा क्या दो हाथो से खाता है!

३०   भूखा क्या नहीं करता ?

१ त्यजेत् क्षुधार्ता महिला स्वपुत्र,
खादेत् क्षुधार्ता भुजगी स्वमण्डम् ।
बुभुक्षित किं न करोति पाप,
क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति ॥ —हितोपदेश ४।५६

क्षुधा से पीडित स्त्री अपने पुत्र को त्याग देती है, सर्पिणी अपने अण्डो को खा जाती है । भूखा व्यक्ति क्या पाप नही करता ? क्षीण-पुरुष निर्दय हो जाते हैं ।

२ अजीगर्त सुत हन्तु-मुपासर्पद् बुभुक्षित । —मनुस्मृति १०।१०५

भूख से व्याकुल अजीगर्त ऋषि ने अपने पुत्र शुन शेप को यज्ञ मे होम करने के लिए बेचा ।

३ क्षुधार्तश्चात्तुमभ्यागाद् विश्वामित्र श्वजाघनीम् ।
चाण्डालहस्तादादाय, धर्माधर्म-विचक्षण ॥
—मनुस्मृति १०।५८

भूख से व्याकुल विश्वामित्र ऋषि चाण्डाल के हाथ से लेकर कुत्ते की जाघ का मास खाने को तैयार हुए ।

४ भूख से पीडित होकर मृत बालिका को उसके बाप-भाई खा गये । —ज्ञातासूत्र अ० १

५ सन् १९४५ के लगभग बगाल मे खाद्याभाव के कारण एक माता अपने बच्चे को पकाकर खा गई ।

३१ पेट

१. पांव दिये चलने-फिरने कहुँ,
हाथ दिये हरिकृत्य करायो।
कान दिये सुनिये प्रभु को यश
नैन दिये तिन मार्ग दिखायो॥
नाक दियो मुख सोभन कारन,
जीभ दई प्रभु को गुण गायो।
सुन्दर साझ दियो परमेश्वर,
पेट दियो कहा पाप लगायो॥

२. वडे पेट के भरन को, है रहीम दुख बाढि।
यातें हाथी हिहर के, दिये दांत द्वै काढि॥

३ अस्य दग्धोदरस्यार्थे, किं न कुर्वन्ति मानवा.।
वानरीमिव वाग्देवी, नर्तयन्ति गृहे-गृहे॥
इस पापी पेट के लिए मनुष्य क्या नही करते! सरस्वतीदेवी को भी वे वानरी की तरह घर-घर नचा रहे हैं।

४. कथन कला वोह कूर, किता मुख होय कवीश्वर,
सुत दासी नो सोय, न्याय-सुत्र होय नरेश्वर।
कायर नै सूरा कहै, कहै सूम नै दाता,
नरां घणा री नार, कहै आ लिछमी माता।

जाचवा काज जिण-जिण विधे, हुलस हाथ हेठै धरै ।
दुभर पेट भरवा भणी, करम एह मानव करै ॥१॥
रचण प्रवहण रचै, वोह नर वाहण वैसे,
अथग नीर - आगमे, पूर जोखा मे पैसे ।
किणहिक वाय-कुवाय, कोर कालेजा कंपै,
उत्थ न को आधार, जीव दुख किण सू जपै ।
जल मे नाव डूबै जरै, बिरलो कोइक ऊबरै ।
दुभर पेट भरवा भणी, करम एह मानव करै ॥२॥
राते परघर जाय, गीत गावै गीतेरण ।
रावण का गेवणा अधिक सीखे ऊगेरण ॥
खासै बैठो कन्त, मेल्ह पर-मंदिर जावै ।
ऊँची चढ आवास, पुरुप पारका मल्हावै ॥
ऊँचो साद तागे अधिक, एक पईसा ऊपरै ।
दुभर पेट भरवा भणी, करम एह मानव करै ॥३॥

५ सौ मणनी कोठी भराय पण सवा सेर नी कोठी नु पुरू न थाय ।

६ दरिया नु ताग आवै पण छ तसु छाती नु ताग न आवै ।

७ पेट माटे लका जवु पडे ।

८ पेट भर्‌यु एटले पाटण भर्‌यु ।

९. आप जम्या एटले जगत जम्या ।

१० सोनु हाथ मोमणी बले । —गुजराती कहावतें

—अंग्रेजी कहावत

११. बेली टीचेज ऑल आर्ट्‌स ।
पेट सब हुन्नर सिखा देता है ।

१२ पेट थी सहु हेठ, पेट करावे वेठ ।

१३. पेहली पेट नें पछी सेठ ।

—गुजराती कहावतें

१४ पहली पेट पूजा, पछै देव दूजा । —राजस्थानी कहावत

१५. लज्जा स्नेह स्वरमधुरता बुद्धयो यौवनश्री ,
कान्ता सग स्वजनममता, दु खहानिर्विलास ।
धर्मः शास्त्र, सुरगुरुमति शौचमाचारचिन्ता ,
पूर्णे सर्वे जठर पिठरे प्राणिना सभवन्ति ॥

—पञ्चतंत्र ५।९२

लज्जा, स्नेह, स्वर का मिठास, काम करने मे बुद्धि, जवानी की शोभा, स्त्री सग, स्वजनो का अपनत्व, दु ख नाश, खेलकूद आदि विलास, क्षमा आदि धर्म, वेद आदि शास्त्र, कर्त्तव्य का विवेचन करनेवाली बुद्धि, बाह्याभ्यन्तर शुद्धि और सदाचरण की चिन्ता ये सब बातें उदररूपी कुंड भर जाने पर ही सभवित होती हैं ।

१६. जब पेट भरा होता है तभी–
आदमी को धर्म और ईमान सूझता है ,
जब मन भरा होता है तभी–
आदमी को दर्शन और विज्ञान सूझता है ,
आत्मा परमात्मा मानवता और
नैतिकता की बातें यू बहुत अच्छी हैं,
लेकिन हकीकत यह है कि–
भूखे पेट को रोटी मे ही भगवान सूझता है ।

—'खुले आकाश मे' से

१७ काकडी-चीभड कापी ने जोवाय पण चोरी ने जोवाय नही।

—गुजराती कहावत

१८ जठर को न विभर्ति केवलम्।

मात्र पेट को कौन नही भरता? कुत्ते भी भर लेते हैं।

३२ पानी

१. पानी समदर्शी है, इसकी दृष्टि में ऊच-नीच, गरीब-अमीर का कोई भेद-भाव नही होता। यह समानरूप से सब की प्यास बुझाता है।

२. पानी मिलनसार है। यह जिसके साथ मिलता है, उसी के अनुरूप बन जाता है।

३. पानी से बिजली पैदा होती है तथा इसमे कभी खड्डा नही पडता। चाहे नीचे कितना ही गहरा खड्ढा हो, पानी ऊपर बराबर रहेगा।

४. पानी औषधि है। अगुली आदि कटने पर या तेज बुखार होने पर इसकी पट्टी लगाई जाती है।

ऋगवेद १०।१३।७।६ मे कहा है—

आप इद्वा भेपजी आपो अमी वा चात नो'।
आप सर्वस्वय भेपजी स्ताम्तेकण्वतु भेपजम् ॥

जल औपधि है, वही रोगनाश का कारण है, वही सकल व्याधियो की औपधि है। हे जल ! तुम लोगो की औपधि बनो।

५. अजीर्णे भेपज वारि, जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजनेचामृतवारि, भोजनान्ते विप जलम् ॥

—चाणक्यनीति ८।७

जलपान अजीर्ण मे औषधि है, पचजाने पर वल देनेवाला है, भोजन के वीच मे अमृत है, किन्तु भोजन के अन्त मे जहर के समान अनिष्ट करनेवाला है।

६ प्रातकाल खटिया तै उठिके, पिये तुरत जो पानी।
ता घर वैद्य कवहुँ न आवै, वात घाघ कहे जानी॥

—घाघकवि

७ पृथिव्या त्रीणि रत्नानि जलमन्न सुभाषितम्।

—चाणक्यनीति १४।१

पृथ्वी मे तीन रत्न हैं—जल, अन्न और सुभाषित।

८ पानी के विना ससार मे कुछ भी नही है—

एक वार वादशाह ने पूछा– २७ नक्षत्रो मे से वर्षा के १० नक्षत्र निकाल दें तो शेष कितने रहे ? वीरवल ने कहा—शून्य। तत्त्व यह है कि दस नक्षत्रो मे ही वर्षा होती है। उनके अभाव मे वर्षा न होगी और ससार शून्य हो जायगा।

९ शैत्य नाम गुणस्तवैव सहज, स्वाभाविकी स्वच्छता,
किं ब्रूम शुचिता व्रजन्त्यशुचय, सङ्गेन यस्यापरे।
किं चात परमस्ति ते स्तुतिपद, त्व जीवित देहिना,
त्व चेन्नीच पथेन गच्छसि पय ! कस्त्वा निरोद्धु क्षम॥

हे जल ! तेरे मे सहज शीतलता है, स्वाभाविक स्वच्छता है। तेरी पवित्रता के लिए क्या कहे ! तेरा सग होते ही अशुचि पदार्थ दूर हो जाते हैं। इससे वढकर तेरा क्या पवित्र पद हो ! तू ही देहधारियो का जीवन है। हे जल ! इतना कुछ होने पर

भी यदि तू नीचे की ओर जाता है, तो अब तुझे कौन रोक सकता है ?

१० वटेमार्गु ने दाणी रोके, के पाणी रोके।

—गुजराती कहावत

११. फारस की खाडी के उत्तर कुवेत रियासत मे यन्त्र द्वारा दस लाख गैलन खारा पानी मीठा वनाया जाता है।

—नवभारतटाइम्स, १ मई, १९५५

१२. सबसे ऊँचा झरना अफ्रीका मे जो आउमान पर्वत से झरता है, एक मील ऊँचा है।

१३. दुनियाँ की सबसे वडी झील अमरीका मे लेकसुपीरियर है तथा भारत राजस्थान मे जयसमंद (५४ वर्गमील) है।

१४. फिलस्तीन की डेडसी नामक झील का पानी वेहद खारा होने के कारण इतना भारी है कि आदमी उसमें तैर नही सकता और डूब भी नही सकता।

—सर्जना, पृष्ठ ३३

१५ एक एकड भूमि मे होनेवाली एक इन्च वर्षा के पानी का भार लगभग २२६५१२ पौंड होता है।

—पजाबकेसरी, ६ दिसम्वर १९७०

१६ न्यूजीलेंड मे एक विचित्र झरना है, जिसका प्रवाह वद हो तो थोडा सा सावुन फैंकने से वह गरजता हुआ २०० फुट तक ऊँचा उठता है, लेकिन पत्थर आदि फैंकने से हिलना भी नही। —दैनिक हिंदुस्तान, ३० मई, सन् १९७१

तओ समुद्दा पगईए उदगरसेण, पण्णत्ते त जहा—कालोदे, पुक्खरोदे, सयभुरमणे। तओ समुद्दा बहुं मच्छकच्छ भाइण्णा पण्णत्ता, त जहा—लवणे, कालोदे, सय भुरमणे।

—स्थानाङ्ग ३।२

तीन समुद्र स्वभाव से ही सामान्य पानी के समान स्वादवाले हैं—(१) कालोदधि (२) पुष्करोदधि (३) स्वयभूरमणसमुद्र। तीन समुद्र मच्छ-कच्छप आदि जलजन्तुओ से अधिक भरे हुए हैं—(१) लवणसमुद्र, (२) कालोदधि, (३) स्वयमूरमणसमुद्र।

☸

तीसरा कोष्ठक

मोक्ष-(मुक्ति)

१

—स्थानाग १।१

१. एगे मोक्खे ।

आठो कर्मों के नाशरूप मोक्ष एक है ।

२ पांच प्रकार की मुक्ति :—

१. सालोक्य – भगवान के समान लोक-प्राप्ति ।

२ सार्ष्टि.– भगवान् के समान ऐश्वर्य-प्राप्ति ।

३. सामीप्य – भगवान् के समीप स्थान-प्राप्ति ।

४ सारूप्य·– भगवान् के समान स्वरूप-प्राप्ति ।

५ सायुज्य – भगवान् मे लय-प्राप्ति ।

—भागवत ३।२६।१३

२

मोक्ष की परिभाषाएँ

१ विवेगो मोक्खो। —आचाराङ्ग चूर्णि १।७।१

वस्तुत विवेक ही मोक्ष है।

२ सव्वारंभ-परिग्गहणिक्खेवो, सव्वभूतसमया य।
एक्कग्गमणसमाहाणया य, अह एत्तिओ मोक्खो॥

—बृहत्कल्पभाष्य ४५८५

सब प्रकार के आरम्भ और परिग्रह का त्याग, सब प्राणियो के प्रति समता और चित्त की एकाग्ररूपसमाधि—बस इतना मात्र मोक्ष है।

३ कृत्स्नकर्मक्षयादात्मन स्वरूपावस्थान मोक्ष।

—जैनसिद्धातदीपिका ५।३९

समस्त कर्मों का फिर बन्धन हो-ऐसा जडामूल से कर्मक्षय होने पर आत्मा जो अपने ज्ञान-दर्शनमय-स्वरूप मे अवस्थित होती है, उसका नाम मोक्ष है।

४. अज्ञानहृदयग्रन्थि—नाशो मोक्ष इतिस्मृत। —शिवगीता

हृदय मे रही हुई अज्ञान की गांठ का नाश हो जाना ही मोक्ष कहा गया है।

५. आत्मन्येवलयो मुक्ति-र्वेदान्तिक मते मता। —विवेकविलास

वेदान्तिकमत के अनुसार परब्रह्मस्वरूप ईश्वरीय शक्ति मे लीन हो जाना मुक्ति है।

६. भोगेच्छा मात्र कोबन्ध-स्तत्त्यागो मोक्ष उच्यते ।
—योगवाशिष्ठ ४।३५।

भोग की इच्छामात्र बन्ध है और उसका त्याग करना मोक्ष है

७. प्रकृति वियोगो मोक्ष ः । —षड्दर्शन-समुच्चय ४३

साख्यदर्शन के अनुसार आत्मारूप पुरुपतत्त्व मे प्रकृतिरूप पुग्प तत्त्व भौतिकतत्त्व का अलग होजाना मोक्ष है ।

८. कामाना हृदये वास ः, ससार इति कीर्तित ।
तेषा सर्वात्मना नाशो, मोक्ष उक्तो मनीपिभि ॥

हृदय मे कामो-शब्दादि विषयो का होना ससार है एव उनका समूल नष्ट हो जाना मोक्ष है—इस प्रकार मनीपियो ने कहा है ।

९. चित्तमेव हि ससारो, रागादिक्लेशवासितम् ।
तदेव तैर्विनिर्मुक्तं, भवान्त इति कथ्यते ॥
—बौद्ध

रागादि क्लेशयुक्त चित्त ही ससार है । वह यदि रागादिमुक्त हो जाय तो उसे भवान्त अर्थात् मोक्ष कहते हैं ।

१०. नाशाम्बरत्वे न सिताम्बरत्वे, न तर्कवादे न च तत्त्ववादे ।
न पक्षसेवाश्रयरगेन मुक्ति ः, कषायमुक्ति किलमुक्तिरेव ॥
—हरिभद्रसूरि

मुक्ति न तो दिगम्बरत्व मे है, न श्वेताम्बरत्व मे, न तर्कवाद मे है, न तत्त्ववाद मे तथा न ही किसी एक पक्ष क सेवा करने मे है । वास्तव मे क्रोध आदि कषायो मे मुक्त होना ही मुक्ति है ।

☼

३ मोक्ष-स्थान

१. अत्थि एग धुव ठाणं, लोगग्गमि दुरारुह ।
नत्थि जत्थ जरा-मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥ ८१ ॥
निव्वाणंति अवाहति, सिद्धीलोगग्गमेव य ।
खेम सिव अणावाह, ज चरंति महेसिणो ॥ ८३ ॥

—उत्तराध्ययन २३

लोक के अग्रभाग पर एक ऐसा दुरारोह-ध्रुवस्थान है, जहाँ जरा, मृत्यु, व्याधि और वेदना नही है ॥८१॥
वह स्थान निर्वाण, अव्यावाध, सिद्धि, लोकाग्र, क्षेम, शिव और अनावाध नाम से विख्यात है । उसे महर्षि लोग प्राप्त करते है ॥८३॥

२. त ठाण सासय वास, ज सपत्ता न सोयति ।

—उत्तराध्ययन २३।८४

वह मोक्षस्थान शाश्वत निवासवाला है, जिसे पाकर आत्माएं शोकरहित हो जाती हैं ।

३. अविच्छिन्न सुख यत्र, स मोक्ष परिपठ्यते । —शुभचन्द्राचार्य
जहाँ शाश्वत सुख है, उसे मोक्ष कहते हैं ।

४. न मोक्षो योऽपुनर्भव । —भागवत

जहाँ जाने के बाद फिर कभी जन्म नही होता, वह मोक्ष है ।

५ अभिलापापनीतं यत्, तज् ज्ञेय परम पदम् —मोक्षाष्टक

आशा, तृष्णा, मूर्च्छा आदि सभी प्रकार की विकृत भावनाओ का जहाँ अभाव है, वह परमपद मोक्ष है।

६ अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्त-स्तमाहु परमा गतिम् ।
य प्राप्य न निवर्तन्ते, तद्धाम परम मम ॥

—गीता ८।२३

जो भाव अव्यक्त एव अक्षर है, उसे परमगति कहते हैं। जिस सनातन-अव्यक्त भाव को प्राप्त होकर मनुष्य वापिस ससार मे नही आते, वह मेरा परमधाम है।

७ न तद् भासयते सूर्यो, न शशाङ्को न पावक ।
यद् गत्वा न निवर्तन्ते, तद्धाम परमं मम ॥

—गीता १५।६

जिस स्वय प्रकाशमय परमपद को न तो सूर्य प्रकाशित कर सकता है, न चन्द्रमा एव अग्नि प्रकाशित कर सकते हैं तथा जिस पद को पाकर मनुष्य पुन. ससार मे नही आते, वह मेरा परमधाम है।

८. ससार भाडे का घर है, वह समय होने पर सबको (चाहे देवता भी हो) खाली करना ही पडता है। मुक्ति अपना निजी घर है, जहाँ निवास करने के बाद कभी निकलना नही पडता।

☼

४

मोक्ष-मार्ग

१ पणए वीरे महाविहिं, सिद्धिपहं णेयाउय धुव ।

—सूत्रकृतांग श्रुतस्कन्ध २।१।२१

मुक्तिमार्ग महान् विधिरूप है। न्याययुक्त एवं शाश्वत है। वीरपुरुष नम्र होकर उस पर चलता है।

२ नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एसमग्गुत्ति पन्नत्तो, जिणेहि वरदंसिहि ॥

—उत्तराध्ययन २८।२

सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक्चारित्र एवं सम्यक्तप मुक्ति का यह मार्ग विशिष्टज्ञानी जिनेश्वरों ने कहा है।

३ सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः ।

—तत्त्वार्थसूत्र १।१

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, एवं सम्यक्चारित्र-यह मोक्ष-मार्ग है।

५ मोक्ष के साधन

१. मोक्खसब्भूयसाहणा, नाण च दसण चेव, चरित्तं चेव ।

—उत्तराध्ययन २३।३३

सम्यग् ज्ञान-दर्शन-चारित्र—ये मोक्ष के साधन है ।

२. णाण पयासगं, सोहओ तवो, संजमो य गुत्तिकरो ।
तिण्हपि समाजोगे, मोक्खो जिणसासणे भणिओ ।।

—आवश्यक निर्युक्ति १०३

ज्ञान प्रकाश करता है, तप विशुद्धि करता है एवं संयम पापों का निरोध करता है । तीनों के समयोग से ही मोक्ष होता है । यही जिनशासन का कथन है ।

३. नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं ।।

—उत्तराध्ययन ३२।२

सम्पूर्ण ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान एवं मोह के विवर्जन से तथा राग-द्वेष के क्षय से आत्मा एकान्तसुखमय मोक्ष को प्राप्त होती है ।

४. नाण-किरियाहिं मोक्खो । —विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ३

ज्ञान एव क्रिया (आचार) से ही मुक्ति होती है ।

५. जे जत्ति आ अ हेउ भवस्स, ते चेव तत्तिया मुक्खे ।

—ओघनिर्युक्ति ५३

जो और जितने हेतु संसार के हैं, वे और उतने ही हेतु मोक्ष के हैं।

६. मोक्षद्वारे द्वारपाला-श्चत्वार परिकीर्त्तिता· ।
शमो विचारः सतोप-श्चतुर्थ साधुसगम ॥

—योगवाशिष्ठ २।१६।५८

मुक्तिमहल के चार द्वारपाल हैं—(१) शान्ति, (२) सद्विचार, (३) सन्तोष, (४) साधुसंगति ।

७ मुक्तिमिच्छसि चेत् तात ! विषयान् विपवत् त्यज ।
क्षमार्जव-दया-शौचं, सत्य पीयूषवत् पिव ॥

—चाणक्यनीति ९।१

यदि मुक्ति पाने की इच्छा है, तो विषयो को विपतुल्य समझकर छोडो और क्षमा, सरलता, दया, पवित्रता एव सत्य का अमृतवत् पान करो ।

मोक्षगामी कौन ?

१. णाणस्स दंसणस्स य, सम्मत्तस्स चरित्तजुत्तस्स।
जो काही उवओग, ससाराओ विमुच्चिहिति ॥
—आतुरप्रत्याख्यान ८०

जो ज्ञान, दर्शन और चारित्र का उपयोग करेगा, वह संसार से छुटकारा पायेगा—मुक्त बनेगा।

२. ज किच्चा निव्वुडा एगे, निट्ठ पावति पडिया।
—सूत्रकृताग १५।११

जिन सम्यग् ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना करके अनेक महापुरुष निर्वाण को प्राप्त हुए हैं, उन्ही की आराधना द्वारा विद्वान सिद्धि को प्राप्त करते हैं।

३. सयं वोच्छिद काम-संचय, कोसारकीडेव जहाइ बधण।
—ऋषिभाषित

जैसे—रेशम का कीड़ा अपने बन्धनो को तोड़ता है, उसी प्रकार आत्मा स्वयमेव कर्मबन्धनो को तोड़कर मुक्त होती है।

४. निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा.।
द्वन्द्वैर्विमुक्ता सुख-दुःखसज्ञैर्गच्छन्त्यमूढा पदमव्यय तं ॥
—गीता १५।५

वे ज्ञानीपुरुष ही अव्यय पद-मोक्ष को प्राप्त होते है, जो मान-मोह से रहित है, आसक्तिदोष को जीतनेवाले है, सदा अध्यात्म

भाव मे स्थित है, कामनाओ से निवृत्त हैं और सुख-दुःख नाम के द्वन्द्वो से मुक्त हो चुके हैं।

५ य इत् तद्विदुस्ते अमृतमानशुः। —अथर्ववेद ६।१०।२

जो उस उम ब्रह्म को जान लेते हैं, वे मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

६ य स्नाति मानसे तीर्थे, स वै मोक्षमवाप्नुयात्।

—गरुडपुराण

जो सत्य, शील, क्षमा, अहिंसा आदि मानसतीर्थ मे स्नान करता है, वही मोक्ष को प्राप्त होता है।

७ सकाम स्वर्गमाप्नोति, निष्कामो मोक्षमाप्नुयात्॥

—अत्रिस्मृति

फलप्राप्ति की भावना मे धर्म करनेवाला स्वर्ग एव निष्काम-भाव से धर्म करनेवाला मोक्ष पाता है।

८ मोक्ष जाते समय भौतिक चीजे तो छोडनी पडती ही हैं, लेकिन साधनभूत (घोडे की तरह) धर्मक्रिया भी छोडनी पडती है।

७ मुक्त आत्मा

१. न सुखाय सुखं यस्य, दु ख दु खाय यस्य नो ।
अन्तर्मुखमतेर्यस्य, स मुक्त इति उच्यते ॥

—योगवाशिष्ठ ६।२।१६६।१

जो अन्तर्मुखी बुद्धिवाला सुख को सुख एवं दु,ख को दु,ख नही मानता, वह 'मुक्त' कहलाता है।

२. नोदेति नास्तमायाति, सुखे-दु खे मुखप्रभा ।
यथाप्राप्तस्थितेर्यस्य स जीवन्मुक्त उच्यते ।

—योगवाशिष्ठ ५।१६ २१

जो कुछ प्राप्त हो उसी मे प्रसन्न रहनेवाला वह व्यक्ति जीवन्-मुक्त कहलाता है, जिसकी मुखकान्ति सुख मे बढती नही एव दु ख मे घटती नही ।

३. अस्तुति-निन्दा नाहि जहि, कचन-लोह समान ।
कहे नानक सुन रे मना ! ताहि मुक्त तू जान ॥

८ • सिद्ध भगवान

१. उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असगा य । ॥२०॥

सिद्ध आत्माएँ कर्म कवच से मुक्त हैं, अजर हैं, अमर हैं और असग हैं ।

निच्छिन्नसव्वदुक्खा, जाइ-जरा-मरण-वंधणविमुक्का ।
अव्वावाह सोक्खं, अणुहोति सासय सिद्धा । ॥२१॥

जिन्होंने शारीरिक-मानसिक दु खो को छेद डाला है, जो जन्म-जरा-मरण के बन्धनो से मुक्त हो गये हैं, ऐसे सिद्ध-मुक्त आत्माएँ अव्यावाध शाश्वतसुखो का अनुभव करते हैं ।

सव्वमणागयमद्ध, चिट्ठति सुही सुहप्पत्ता ।
—औपपातिक सूत्र सिद्धवर्णन, ॥२२॥

सिद्ध आत्माएँ सदाकाल शाश्वत सुखो मे स्थिर रहती हैं ।

२. एतस्मान्न पुनरावर्तन्ते । —प्रश्नोपनिषद्

उस स्थान से मुक्त आत्माएँ पुन संसार मे नही आती ।

३. तेषु ब्रह्मलोकेषु परापरावतो वसन्ति,
तेषा न पुनरावृत्ति । —बृहदारण्यकोपनिषद्

उन ब्रह्मलोको मे मुक्त आत्माएँ अनन्तकाल तक निवास करती है । उनका पुन ससार मे आगमन नही होता ।

सिद्धों के १५ भेद—

४. सिद्धा पण्णरसविहा पण्णत्ता, तजहा—(१) तित्थसिद्धा, (२) अतित्थसिद्धा, (३) तित्थगरसिद्धा, (४) अतित्थगर-सिद्धा, (५) सयबुद्धसिद्धा, (६) पत्तेयबुद्धसिद्धा, (७) बुद्ध-बोहियसिद्धा, (८) इत्थीलिंगसिद्धा, (९) पुरिसलिंगसिद्धा, (१०) नपुंसगलिंगसिद्धा, (११) सलिंगसिद्धा, (१२) अन्न-लिंगसिद्धा, (१३) गिहिलिंगसिद्धा, (१४) एगसिद्धा, (१५) अणेगसिद्धा।

—प्रज्ञापना १

(१) तीर्थसिद्ध, (२) अतीर्थसिद्ध, (३) तीर्थङ्करसिद्ध, (४) अतीर्थ-ङ्करसिद्ध, (५) स्वयंबुद्धसिद्ध, (६) प्रत्येकबुद्धसिद्ध, (७) बुद्ध-बोधितसिद्ध, (८) स्त्रीलिङ्गसिद्ध, (९) पुरुषलिङ्गसिद्ध, (१०) नपुंसकलिङ्ग, (११) स्वलिंगसिद्ध, (१२) अन्यलिंगसिद्ध, (१३) गृहस्थलिंगसिद्ध, (१४) एकसिद्ध, (१५) अनेकसिद्ध।

५. सिद्धों के ३१ गुण—

नव दरिसणम्मि चत्तारि, आउए पच आइमे-अंते।
से-से दो-दो भेया, खीणभिलावेण इगतीस।

—समवायाङ्ग ३१

आठों कर्मों की प्राकृतियों को अलग-अलग गिनने से सिद्धों के ३१ गुण हो जाते हैं।

जैसे —ज्ञानावरणीयकर्म की ५, दर्शनावरणीयकर्म की ९, वेद-नीय कर्म की २, मोहनीयकर्म की २, (दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय) आयुकर्म की ४, नामकर्म की २, (शुभनाम और अशुभनाम) गोत्रकर्म की २, (उच्चगोत्र और नीचगोत्र) तथा अन्तरायकर्म की ५—इन ३१ प्रकृतियों के क्षय होने से सिद्धों के

वे क्षीणमतिज्ञानावरणीय कहलाते हैं यावत् वीर्यान्तिराय के क्षय होने से क्षीणवीर्यान्तिराय कहलाते हैं।

८. जीवेणं भन्ते ! सिज्झमाणे कयरमि आउए सिज्झइ ? गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडियाउए सिज्झइ। —औपपातिकसूत्र सिद्धवर्णन

भगवन् ! जीव किस आयु मे सिद्ध-मुक्त बन सकता है ? गौतम ! जघन्य साधिक आठ वर्ष मे और उत्कृष्ट करोड पूर्व की आयु मे सिद्ध बन सकता है।

९. बत्तीसा अडयाला, सट्ठी बावत्तरि य बोधव्वा।
चुलसीई छिन्नउई य, दुरहिय-अट्ठुत्तरसयं च।

—प्रज्ञापना १

एक समय मे अधिक से अधिक कितने जीव सिद्ध हो सकते हैं ? इसके लिए बतलाया गया है कि यदि प्रति समय १-२-३ यावत् ३२ जीव निरन्तर सिद्ध हो तो आठ समय तक हो सकते है। उसके बाद निश्चित रूप मे अन्तर पडता है।

तेतीस से अडतालीस तक जीव निरन्तर सात समय, उनचास से साठ तक जीव निरन्तर छः समय, इकसठ से बहत्तर तक जीव निरन्तर पाँच समय, तिहत्तर से चौरासी तक जीव निरन्तर चार समय, पचासी से छियानवे तक जीव निरन्तर तीन समय तथा सत्तानवें से से एक सौ दो तक जीव निरन्तर दो समय तक सिद्ध हो सकते हैं। फिर निश्चितरूप में अन्तर पडता है। एक सौ तीन से लेकर एक सौ आठ तक जीव यदि सिद्ध हो तो केवल एक ही समय हो सकते हैं, अर्थात् एक समय मे १ २ यावत् १०८ सिद्ध होने के बाद दूसरे समय अवश्य अन्तर पडता है। दो, तीन आदि समय तक निरन्तर उत्कृष्ट सिद्ध नही हो सकते।

☼

४. विचार के सिवा जगत् और कोई चीज नही है।

—महर्षिरमण

५ अच्छी-बुरी सभी प्रकृतियो के व्यक्तियो के संमिलन से ही विश्व की रचना होती है।

—डॉ. गरास. जे रोल्ड

११ संसार का स्वरूप

१. अणते नितिए लोए, सासए न विणस्सइ।

—सूत्रकृताग १।४।६

यह लोकद्रव्य की अपेक्षा से नित्य है, शाश्वत है एवं इसका कभी नाश नही होता।

२ अनादिरेष ससारो, नानागतिसमाश्रय ।
पुद्गलाना परावर्ता, अत्रानन्तास्तथागता ॥

—योगबिन्दु ७०

नरकआदि गतिरूप पर्यायो का आश्रय यह ससार अनादि है। इसमे अनन्त-पुद्गलपरावर्तन व्यतीत हो चुके हैं।

३ सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, त जहा—ओरालिय-पोग्गलपरियट्टे, वेउव्विय-पोग्गलपरियट्टे एव तेया-कम्मा-मण-वइ-आणुपाणु-पोग्गलपरियट्टे।

—भगवती १२।४ तथा स्थानाङ्ग ७।५३६

सात प्रकार का पुद्गलपरावर्तन कहा है—
(१) औदारिक-पुद्गलपरावर्तन (२) वैक्रिय-पुद्गलपरावर्तन (३) तैजस-पुद्गलपरावर्तन (४) कार्मण-पुद्गलपरावर्तन, (५) मन-पुद्गलपरावर्तन, (६) वचन-पुद्गलपरावर्तन (७) श्वासोच्छ्वास-पुद्गल परावर्तन।

('मोक्ष प्रकाश' ८।१५ मे इसका विस्तृत विवेचन है।)

४ तिहिं ठाणेहिं लोगन्धयारे सिया, त—अरिहंतेहि वोच्छि-ज्जमाणेहिं, अरिहन्तपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्व-गए वा वोच्छिज्जमाणे ।

—स्थानाङ्ग ३।१

तीन कारणो से लोक मे अन्धकार होता है । १ अरिहन्तभगवान् का विच्छेद होने से, २ अरिहन्तप्ररूपित-धर्म का विच्छेद होने से एव ३ पूर्वो के ज्ञान का विच्छेद होने से ।

☼

संसार के भेद

१२

१. चउव्विहे संसारे पण्णत्ते, तं जहा दव्वससारे, खेत्तसंसारे, कालसंसारे, भावससारे।

—स्थानाग ४।१।२६१

चार प्रकार का संसार कहा है—

(१) षड्द्रव्य रूप-द्रव्यसंसार (२) चतुर्दशरज्जु-परिमित क्षेत्ररूप क्षेत्रसंसार (३) दिन-रात, पक्ष-मास यावत् पुद्गलपरावर्तनों तक परिभ्रमण रूप - कालसंसार (४) कर्मोदय से उत्पन्न होनेवाले विभिन्न राग-द्वेषात्मक विचाररूप-भावसंसार।

२. चउव्विहे ससारे पण्णत्ते, त. जहा—णेरइयसंसारे जाव देवससारे।

— स्थानाङ्ग ४।१।२६४

चार प्रकार का संसार कहा है—

(१) नैरयिकसंसार, (२) तिर्यञ्चसंसार,
(३) मनुष्यसंसार, (४) देवसंसार।

३. जीवाण नवहिं ठाणेहिं संसारं वत्तिंसु वा वत्तंति वा वत्तिस्संति वा तं जहा-पुढवीकाइयत्ताए जाव पंचेंदियकाइयत्ताए।

—स्थानाग ६।३।६६६

जीवो ने नव स्थानों मे संसार का अनुभव किया, कर रहे हैं एव करेंगे—पृथ्वीकाय के रूप मे यावत् पञ्चेन्द्रिय के रूप मे ।

४. लख चौरासी योनि मे, गूंगा बावन लाख ।
बत्तीस लाख है बोलता, लख चौपन बिन नाक ॥[1]

¤

---

१ चौरासी लाख योनी-के जीवों मे पृथ्वी—अप्—तेजस्—वायु—इन चारो के सात-सात लाख, प्रत्येक वनस्पति के दस लाख और साधारण-वनस्पति के १४ लाख—ये ५२ लाख गूंगे हैं अर्थात् जीभरहित हैं। शेष बत्तीस लाख बोलनेवाले हैं—जीभसहित हैं। पूर्वोक्त ५२ लाख और द्वीन्द्रिय के दो लाख—ऐसे ५४ लाख नाक

१३ दुःखरूप संसार

१ दुहरूवं दुहफलं, दुहाणुवधी विडंवणारूवं।
समार जाणिउण, नाणी न रई तहिं कुणइ॥

यह ममार रोग-शोक आदि दु खरूप है, नरकादि दु खरूप फलो का देनेवाला है, वारम्वार दुःखो से सम्वन्ध जोडनेवाला है एव विडवनारूप है—ऐसा जानकर ज्ञानी को इस ससार से राग नही करना चाहिए।

२ पाम लोए महब्भयं। —आचाराग ६।१

देखो! यह ममार महाभयवाला है।

३. एगंतदुक्ख जरिए व लोए। —सूत्रकृतांग १७।११

यह संमार ज्वर के समान एकान्त दु खरूप है।

४. मच्चुणाब्भाहओ लोओ, जराए परिवारिओ।

—उत्तराध्ययन १४।२३

यह मंसार मृत्यु से पीडित है एवं वृद्ध-अवस्था से घिरा हुआ है।

५. मृत्युनाभ्याहतो लोको, जरया परिवारित'।
अहोरात्रा' पतन्त्येते, ननु कस्मान्न वुध्यसे॥

—महाभारत शान्तिपर्व, १७५।९

पुत्र ने कहा—पिताजी! यह सम्पूर्ण जगत् मृत्यु के द्वारा मारा जा रहा है। वुढापे ने इसे चारो ओर से घेर लिया है और ये

दिन-रात ही वे व्यक्ति हैं—जो सफलतापूर्वक प्राणियो की आयु का अपहरणस्वरूप अपना काम करके व्यतीत हो रहे हैं, इस बात को आप समझते क्यो नही ?

(उक्त पिता-पुत्र सवाद उत्तराध्ययन १४ से मिलता-जुलता है।)

६. प्रदीप्ताङ्गारकल्पोयं, संसार सर्वदेहिनाम् ।

—त्रिषष्ठिशलाका पुरुषचरित्र

सभी प्राणियो के लिए यह ससार धधकते हुए अगारे के समान है।

७. डज्झमाण न वुज्झामो, राग-दोसग्गिणा जगं ।

—उत्तराध्ययन १४।४३

राग-द्वेषरूप अग्नि से जलते हुए इस ससार को देखकर भी हम नही समझते ।

८. वहु दुक्खा हु जतवो ।   —आचाराङ्ग ६।१

ससारी जीव बहुत दुःखो मे घिरे हुए हैं।

९. न तदस्ति दुःख किंचित्, ससारी यन्न प्राप्नोति ।

—योगवाशिष्ठ २।१२।४

ऐसा कोई भी दुःख नही है, जो ससारियो को सहना न पड़ता हो।

१० सारीरा माणसा चेव, वेयणाओ अणतसो ।

—उत्तराध्ययन १६।४६

इस ससार मे शरीरसम्बन्धी और मनसम्बन्धी अनन्त वेदनायें हैं।

११. जम्मदुक्खं जरादुक्खं, रोगा य मरणाणि य ।
अहो ! दुक्खो हु ससारो, जत्थ कीसन्ति जतुणो ॥

—उत्तराध्ययन १६।१६

— — — — है जरा-अवस्था का दुःख है, रोग एव मृत्यु का

दुःख है। अहो! यह संसार निश्चितरूप से दुःखमय है एवं इसमें प्राणी दुःख पा रहे हैं।

१२ हर साँझ वेदना एक नई, हर भोर सवाल नया देखा।
दो घड़ी नहीं आराम कहीं, मैंने घर-घर जा-जा देखा।

—हिन्दी कविता

१३ गतसारेऽत्रसंसारे, सुख-भ्रान्ति शरीरिणाम्।
लालापानमिवाङ्गुष्ठे, बालानां स्तन्यविभ्रम॥

—सुभाषितरत्न भाण्डागार, पृष्ठ ३८४

इस निःसार संसार में सुख न होने पर भी अज्ञानी जीव भ्रमवश सुख मानते हैं। जैसे—बच्चे अँगूठे के साथ अपनी लार (थूक) को चूसकर भी भ्रमवश उसे माता के स्तन का दूध समझते हैं।

१४. छोड़कर निश्वास कहता है नदी का यह किनारा,
उस किनारे पर जमा है, जगत भर का हर्ष सारा।
वह किनारा किन्तु लम्बी साँस लेकर कह रहा है,
हायरे! हर एक सुख उस पार ही क्या बह रहा है?

—हिन्दी कविता

१५ यह जगत् काँटों की बाड़ी है, देख-देख कर पैर रखना!

—गुरु गोरख

१४ सब को दुःख

१. कौन है जग में सुखी ? दुखिया तो सब संसार है।

२. वह मूर्खों मे भी महामूर्ख है—जो मानता है कि ससार में सुख है। मुझे तो जो भी मिला दु ख की कहानी सुनाता मिला। —विनोबा

३. दाम विना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान।
कछु ना सुख ससार मे, सब जग देख्यो छान ॥ —कबीर

४. सूर्य गरम है चाँद दगीला, तारो का ससार नही है।
जिस दिन चिता नही सुलगेगी, ऐसा कोई त्यौहार नही है ॥
—हिन्दी पद्य

५ कोई कहे शु खाऊ अने कोई कहे शामा खाऊ ?
—गुजराती कहावत

६ ऊचा चढ-चढ देखो। घर-घर ओही लेखो।
—राजस्थानी कहावत

७. केचिदज्ञानतो नष्टा, केचिन्नष्टा. प्रमादत ।
केचिद्ज्ञानावलेपेन, केचिन्नष्टैस्तु नाशिताः ॥—सुभाषितावलि

ससार मे कई अज्ञान से नष्ट हुए, कई प्रमाद एव ज्ञान के अभिमान मे नष्ट हुए तथा कइयो का नाश नष्ट होनेवालो ने कर दिया।

८. भूल गये रग-राग, भूल गए छकडी।
तीन बात याद रही, तेल लूण लकडी। —राजस्थानी पद्य

१५ सुख-दुःखमय संसार

१ क्वचिद्वीणानाद क्वचिदपि च हाहेति रुदित,
क्वचिद् विद्वद्गोष्ठी क्वचिदपि सुरामत्तकलह ।
क्वचिद् रम्या रामा क्वचिदपि जराजर्जरतनु,
न जाने ससार किममृतमय कि विपमय ॥
—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृ. ६२

कही वीणा का नाद है तो कही हाहाकार रोदनमय है, कही विद्वानो की गोष्ठी है तो कही शराबियो का कलह है। कही सुन्दर नारियाँ है तो कही जर्जरित शरीर वाली वृद्धाए हैं। अत समझ मे नही आता कि इस ससार मे अमृतमय क्या है? और विषमय क्या है?

२ तितलियाँ हैं फूल भी है, हैं कोकिलाए गान भी है।
इस गगन की छाह मे मानो ! महल उद्यान भी है।
पर जिन्हे कवि भूल बैठे, वे अभागे मनुज भी है।
है समस्याएं, व्यथाए भूख है अपमान भी है।
—मिलिन्द

३ फल थोडे है पात बहुत है, काम अल्प है बात बहुत है।
प्यार लेश आघात बहुत है, यत्न स्वल्प व्याघात बहुत है।
मजिल मे पग-पग पर देखा, विजय अल्प है हार बहुत है,
सार स्वल्प निस्सार बहुत है, सुन्दर कम आकार बहुत है ॥
—'पथ के गीत' से

४ सारा संसार संतुष्ट है और सारा असंतुष्ट।
प्रत्येक प्राणी को इस खिचडी का भाग मिला है—
कही दाल अधिक है और कही भात।

—सद्गुरुचरण अवस्थी

५ जो केवल विचारते है, उनके लिए ससार सुखमय है, किन्तु जो इसका अनुभव करते हैं, उनके लिए दु खमय है।

–होरेस वालपोल

६ जैसे-ईर्ष्या और कुटिलता द्वारा संसार को हम नरक वना सकते है, वैसे–प्रेम द्वारा स्वर्ग भी।

७. अन्तर जितना उज्ज्वल होगा, जगत उतना मङ्गल होगा।

—सतज्ञानेश्वर

१६ गतानुगतिक-संसार

१ गतानुगतिको लोको, न लोक पारमार्थिक ।

—पंचतन्त्र १।२६६

ससार गतानुगतिक—दूसरो की नकल करनेवाला है, किंतु वास्तविकता को नही देखता ।

२. कीडी नु कटक—एक कीडी चाले एटले बधी चाले ।

—गुजराती कहावत

३ गड्डरीप्रवाह ससार । —हिन्दी कहावत

४ खरबूजे नै देख र खरबूजो रग बदलै । —राजस्थानी कहावत

५ दुनिया मथुरा के बदरो के समान नकल करनेवाली है ।

६ इगलैण्ड के राजा के गलगड (कठमाल) का रोग हुआ । डाक्टर ने सुन्दर पट्टा लगाया । देखा-देखी लोग भी पट्टा लगाने लगे एव 'नेकटाई' चल पडी ।

७ यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजन. ।
स यत प्रमाण कुरुते, लोकस्तदनुवर्तते ॥ —गीता ३।२१

श्रेष्ठ व्यक्ति जो-जो आचरण करता है, साधारण लोग भी उसी तरह करते हैं । श्रेष्ठ व्यक्ति जो बात सत्य मानता है, लोग भी उसके पीछे चलते है ।

८. श्रेष्ठ पुरुषो को चाहिए कि वे कोई भी ऐसा काम न करें, जिसका अनुकरण करके लोगो को कष्ट का सामना करना पडे । —धनमुनि

१७ परिवर्तनशील संसार

१ सभी वस्तुएं नवीन और विचित्र रूपो मे परिर्वतित होती रहती हैं।

—लांगफेलो

२. पर्यायार्थिक-नय की दृष्टि से सारा ससार समय-समय पर बदलता रहता है।

—जैनशास्त्र

३. केवल एक परिवर्तन को छोडकर सभी वस्तुएं परिवर्तनशील हैं।

—जैंगविल

४ जो कुछ मैं पहले था, वह अब नही हूं।

—बायरन

५. परिवर्तन के तीन क्रम—पहले हृदयपरिवर्तन, फिर जीवन-परिवर्तन और फिर समाजपरिवर्तन।

☼

संसार का पागलपन

१८

१ आदित्यस्यगतागतैरहरह सक्षीयते जीवित,
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभि. कालो न विज्ञायते ।
दृष्ट्वा जन्म-जरा-विपत्ति-मरण त्रासश्च नोत्पद्यते,
पीत्वा मोहमयी प्रमादमदिरामुन्मत्तभूत जगत् ॥

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ७

सूर्य के उदय-अस्त होने से दिन-दिन आयु घटती जा रही है। अनेक कार्यों के भार से बढे हुए व्यापारो मे बीतता हुआ काल भी जाना नही जाता। जन्म-जरा-मरण को देखकर त्रास नही होना अत प्रतीत होता है कि मोहमया प्रमाद-मदिरा को पीकर जगत् मतवाला हो रहा है।

२ झूठा नाता कर लिया, विष को अमृत जाना।
दुख को सुख सब कोई कहे, ऐसा जगत दिवाना ॥

—कबीर

३. दुनिया आधली नथी, दीवानी छे।

—गुजराती कहावत

४ रगी को नारगी कहे, पके दूध को खोया।
चलती को गाडी कहे, देख कबीरा रोया ॥

—कबीर

५ गाडी का नाम ऊचलनी, चलती का नाम गाडी।

—हिंदी कहावत

६. भारत में एक करोड तीस लाख पागल है, एक हजार में २३ मानसिक रोगी है उनमे से १८ केस सगीन समझने चाहिए।

(मानसिक रोग-चिकित्सालय के अधीक्षक डा० कैलाशचन्द्र दुबे)

७. काम क्रोध जल आरसी, शिशु त्रिया मद फाग,
होत सयाने बावरे, आठ बात चित्त लाग।

८. दिल्ली में पागलो की मर्दुमशुमारी हो रही थी, एक व्यक्ति ने गणना के अधिकारी से कहा-कि मेरा नाम पागलो में लिख लीजिये। मुझे लोग पागल कहते है। विस्मित अधिकारी ने पूछा-कैसे ?
उसने कहा-एक दिन कई नौजवान लडकियाँ अश्लील फिल्मी गीत गाती हुई बाजार मे नगे सिर जा रही थी, उनमे एक लडकी मेरे मित्र की पुत्री थी। मैंने उसे बुलाकर कहा-बेटी। ऐसे अश्लीलगीत गाते हुए बाजार मे नगे सिर घूमना अपने कुल को शोभा नही देता। लडकी ने कुछ शर्म महसूस की और चुपचाप चली गई। सहेलियो ने पूछा—यह बूढा क्या कहता है ? उसने जवाब दिया—कुछ नही, पागल है, यों ही बकवास करता है।

- एक दिन नवविवाहित पति-पत्नी हलवाई की दुकान पर खडे-खडे खा रहे थे, वे प्रेममुग्ध होकर एक-दूसरे के मुह मे चम्मच मे कुछ डाल रहे थे। लडका मेरे सम्बन्धी का

था इसलिए मेरे से रहा नही गया, अत मैंने धीरे से उसे कह दिया, बेटा ! ऐसा व्यवहार अच्छा नही लगता, लडके ने मुह मोड लिया। बहू के पूछने पर कहने लगा—कुछ नही, योही पागलपन की बात करता है।

१९ संसार का स्वभाव

१. निन्दति तुण्हीमासीनं, निन्दति बहुभाणिन।
मितभाणिन पि निन्दति, नत्थि लोए अनिन्दिओ ॥

—धम्मपद २२७

ससार चुप रहनेवालो की निन्दा करता है, बहुत बोलनेवालो की निन्दा करता है और मितभापियो की भी निन्दा करता है। विश्व मे ऐसा कोई नही, जिसकी निन्दा न होती हो।

२ दुनिया चढ्या नै हसे और पालानै पण हसे।

—राजस्थानी कहावत

३. महात्मा छहो दिशाओ मे पैर कर करके हार गये, क्योंकि लोगों ने कहा—पूर्व मे जगन्नाथपुरी है, पश्चिम मे द्वारका है, उत्तर मे बद्रीनारायण है, दक्षिण मे रामेश्वरम् है, नीचे शेप भगवान् है और ऊपर वैकुण्ठ है।

४. परिचितजनद्वेपी लोको नव-नवमीहते। —माघकवि

संसार का यह स्वभाव ही है कि वह परिचित लोगो मे द्वेप करता है एव नए-नए व्यक्तियो को चाहता है।

५. अर्थार्थी जीवलोकोऽयम्। —विष्णु शर्मा

यह सारा ससार अपने स्वार्थ को सिद्ध करनेवाला है।

६. भिन्नरुचिर्हि लोक.। —रघुवंश

लोगों की रुचियाँ भिन्न-भिन्न हुआ करती हैं।

७ फकीर हाल में मस्त, जरदार माल मे मस्त,
बुलबुल बाग मे मस्त और आकाश दीदार मे मस्त।

—उर्दू कहावत

८. अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग।

९. अपना-अपना काम, अपना-अपना खाना।

१०. अपना ढेंठ न देखें और दूसरों की फूली निहारे।

११. दुनिया झुकती है, झुकानेवाला चाहिए।

—हिन्दी कहावतें

१२. मियाँजी की दाढी बलै, लोग तापण नै जावै।

—राजस्थानी कहावत

१३ घर आए पूजे नही, बाबी पूजन जाय।

—हिन्दी कहावत

१४ हाथ पोलो-जगत गोलो, हाथ काठो-जगत भाठो।

—राजस्थानी कहावत

२० दृष्टि के समान सृष्टि

१. जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।

—रामचरितमानस

२ डू नॉट मेजर अदर पीपुल्स कार्न वाइ युअर ओन बूशल।

—अंग्रेजी कहावत

दृष्टि के समान सृष्टि।

३. **समर्थगुरु रामदास** ने रामायण सुनाते समय कहा—हनूमान ने लंका मे श्वेत फूल देखे। गुप्तहनूमान ने कहा—लाल फूल थे, तुम झूठे हो। दोनो राम के पास पहुँचे। राम ने कहा–फूल तो श्वेत थे, किन्तु हनूमान की आखो में क्रोध की लालिमा थी अत इनको लाल दीखे, क्योकि दृष्टि के समान ही सृष्टि होती है।

४. एक एव पदार्थस्तु, त्रिधा भवति वीक्षितः।
कुणपः कामिनी मास, योगिभि., कामिभिः श्वभि ॥

—चाणक्यनीति १४।१६

एक ही पदार्थ अर्थात् स्त्री का शरीर दृष्टिभेद मे तीनरूपो मे देखा जाता है, योगी मुर्दा के रूप, कामीपुरुप सुन्दर स्त्री के रूप मे और कुत्ते उसे मास-रूप मे देखते है।

५. पुष्ट पुत्र को माता दुर्बल, स्त्री पतिदेवता, शत्रु राक्षस

एव मित्र वन्धु मानते है। धर्मपुस्तको को श्रद्धालुभक्त शास्त्र, रद्दीवाला रद्दीकागज और गाय-भैंस-वकरी आदि अपना खाद्य मानती है।

६ द्वारका मे युधिष्ठर को बुरा आदमी नही मिला और दुर्योधन को भला आदमी नही मिला।

७ सन् १८५७ की हलचल को अंग्रेजो ने गदर (रिवोलेशन) कहा और आज के लोग क्रान्ति कहते है।

८ १६ दिसम्बर १९७१ के दिन को वागलावासी स्वतन्त्रता का स्वर्णिम प्रभात मानते है, भारत तथा कई अन्य देश इसे मुक्ति की सज्ञा देते है। और पश्चिमी पाकिस्तान इस दिन को इतिहास का सबसे वडा मनहूस दिन कहता है।

९. दूसरे लोग हरिजन और विधवा को अपवित्र कहते थे, जबकि गाधीजी उन्हे पवित्र मानते थे।

१० एक कहता है गुलाव खुशबूदार है, दूसरा कहता है, गुलाव कांटोवाला है।

११ चर्मचीडी (चमगादर) के लिए अधेरी रात ही दिन है, जबकि कौवे के लिए वह डरावना अधेरा है।

१२ दौडते घोडे का चित्र उल्टा देखो तो घोड़ा लोटता दीखेगा।

१३ गांधी टोपीवालो को शराब पीते देखकर एक ने कहा—हाय! हाय! कांग्रेसी भी शराबी हो गए! दूसरा वोला नही-नही! शराबी कांग्रेसी-टोपी पहनने लग गए, ऐसा कहो!

१४ एक गरीब रसोईदारिन बेटे के लिए कागज के पुडिया में थोडा सा हलवा ले चली। हाथ से पुडिया छुट जाने से हलवा नीचे गिर गया। उसे देखकर एक बहन ने कहा—यह चोर है, दूसरी ने कहा—गरीबी का दोष है, तीसरी ने कहा—बेटे का ममत्व है।

१५ प्रत्येक व्यक्ति अपनी दृष्टि के अनुसार ही अपने सिद्धान्त की सृष्टि करता है। जैसे—वेदनिर्माता ने स्त्री और शूद्र को घृणित दृष्टि से देखकर कह दिया—

स्त्री-शूद्रौ नाधीयेताम् अर्थात् स्त्री और शूद्र को वेद नही पढाना चाहिए। इसी प्रकार तुलसीदासजी ने भी कह डाला—

ढोल गवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताडन के अधिकारी।

क्रोधी कहता है—

साँच कहूं होकर निडर, कोई हो नाराज,
मैंने तो सीखा यही, साँच बोलिए गाज।

कटुभाषी ने कहा—

बुरे लगे हित के वचन, हिये विचारो आप,
कडुवी औषधि विन पिये, मिटे न तन का ताप।

व्यापारी बोला—

सत्यानृत तु वाणिज्यम्। अर्थात् साँच-झूठ का नाम ही व्यापार है, यह केवल सत्य मे नही चल सकता।

शहर के बाहर मेला लग रहा था। वृक्ष पर चिडिया ची-ची कर रही थी। वृक्ष के नीचे विभिन्न विचार के कई

व्यक्ति बैठे थे। उनमे से हिन्दू ने कहा—चिडिया कह रही है—

राम-लछमन-दसरथ, राम-लछमन-दसरथ !

मुसलमान ने कहा—नही-नही ! यह तो कह रही है-

सुभान तेरी कुदरत, सुभान तेरी कुदरत !

पहलवान ने कहा—नही, नही ! यह तो कह रही है-

दण्ड मुग्दर कसरत, दण्ड मुग्दर कसरत !

किराने के व्यापारी ने कहा-नही,नही ! यह तो कह रही है—

हल्दी धनियां अदरख, हल्दी धनिया अदरख !

आखिर सूत कातनेवाली बुढिया ने कहा-नही, नही, यह तो कहती है—

चरखा पोनी चमरख, चरखा पोनी चमरख !

२१ संसार की उपमाएँ

१. सुपने सब कुछ देखिए, जागे तो कुछ नाँहि ।
ऐसा यह ससार है, समझ देख ! मन माँहि ॥

—दादूजी

२. जग है सपना अपना न कहू ,
नर काहे को झूठ मे जात ठगा ॥
कवि सूरत क्यो न भजे प्रभु को ,
तज सूतज भूल के भाव लगा ॥
तेरे जीवत है सब ही गरजी ,
बरजी इह बात न ख्यात दगा ॥
तेरे अत समे भगवत विना ,
न भगा न पगा न तगा न सगा ॥

३. नाटक सो ससार, जुगल पार्ट सब कर रह्या ।
एक-एक रे लार, मंच छोड़ सब चालसी ॥

४ सम्पूर्ण विश्व एक मच है और स्त्री-पुरुष इस पर अभिनय करनेवाले पात्र । —शेक्सपियर

५. ससार एक सिनेमा है । सिनेमा मे जैसे प्रकाश और अधकार दो तत्त्व काम करते हैं, एक से काम नही बनता, वैसे ससार-सिनेमा मे भी ज्ञान-अज्ञान दोनो तत्त्व आवश्यक

हैं। जहाँ ज्ञान है वहाँ अनासक्ति, ऐश्वर्य एव आनन्द है तथा जहाँ अज्ञान है वहाँ आसक्ति, वासना एवं दुःख है। कीडे मक्खी, मच्छर, पशु-पक्षी, साधारणमनुष्य एव ज्ञानी-मुनियो मे क्रमश ज्ञान की विशेषता होने से वे गदगी घास-फूस, रुपया-पैसा आदि-आदि पूर्व-पूर्व वस्तुओ मे आनन्द नही मानते। सिनेमा मे पूर्ण प्रकाश होते ही खेल खतम हो जाता है, ऐसे ही पूर्ण-ज्ञान मिलने से मुक्ति मिल जाती है। फर्क इतना-सा है कि सिनेमा मे पर्दो पर चित्रित मनुष्य, पशु-पक्षी जड होते हैं और सासारिक प्राणी चेतन।

6 वृक्ष—ससार वृक्ष है। इस पर बदर भी बैठते हैं और पक्षी भी। बदर इधर-उधर वृक्षो पर भटकते रहते हैं किन्तु पक्षी मौका पाकर उड जाते है। तुम बदर बनोगे या पक्षी? पक्षी बनना हो तो पाँखे मैं लगा दूं।

7 कोठरी—जग काजल की कोठरी, रहिये सदा सशक।
रत्नाकर को तनय भी, बच्यो न बिना कलङ्क॥

8 हर्यो तार सींचो सुधा, छहर्यो ज्योति अमद।
लाग्यो करो अब प्रेमनिधि, जान कलङ्क न चन्द॥

9. रहन भली समझन बुरी, यही जगत की रीति।
रज्जब कोठी गार की, ज्यो धोवे त्यो कीच॥

10. विश्व एक सुन्दर पुस्तक के समान शिक्षापूर्ण है, किन्तु उसके लिए कुछ भी नही, जो इसे पढ नही सकता।
—गोल्डोनी

११ सरीरमाहु नावत्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ।
संसारो अन्नवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो॥
—उत्तराध्ययन २३।७३

शरीर नाव है, जीव नाविक है, संसार समुद्र है, इससे महर्षि लोग ही पार तरते हैं।

१२. संतोष साधुसङ्गश्च, विचारोऽथ शमस्तथा।
एत एव भवाम्भोधा-वुपायास्तरणे नृणाम्॥
—योगवाशिष्ठ २।१२।१६

संतोष, साधुसंगति, सद्विचार और क्रोध आदि कषायों का शमन—ये ही मनुष्यों के लिए संसारसमुद्र से तरने के उपाय हैं।

२२

दुनियां की ताकत

१. को लोकमाराधयितु समर्थ ।

—हृदयप्रदीप

इस संसार को एक साथ प्रसन्न करने में कौन समर्थ है ?

२ ढोर ना चाव्या मा कूचो रहे, पण लोकोना चाव्या मा न रहे ।

३ घंटी ना गालमा वचे, पण लोकोना चाव्या मा न वचे ।

४. कुआने मोढे ढाकणो देवाय पण गामने मोढे न देवाय ।

—गुजराती कहावतें

५. टू एज यू लाइक यू कैन्नॉट कर्व मैन्स टंग ।

—अंग्रेजी कहावत

अपनी जबान पकड़ सकते हो, दूसरों की नहीं ।

६. मारनार नु हाथ झलाय पण बोलनार नी जीभ न झलाय ।

—गुजराती कहावत

२३

जगत् को वश करने के उपाय

१. क्षमया, दयया, प्रेम्णा, सुनृतेनार्जवेन च,
वशीकुर्याज्जगत्सर्व, विनयेन च सेवया।

क्षमा, दया, प्रेम, मधुरवाणी, नम्रता, सरलता और सेवा से सब जगत् को वश में करना चाहिए।

२ यदीच्छसि वशीकर्तुं, जगदेकेन कर्मणा।
पुरा पञ्चदशास्येभ्यो, गां चरंती निवारय!

—चाणक्यनीति १४।१४

जो एक ही कर्म से जगत् को वश किया चाहते हो तो पहले पन्द्रह मुखों से चरती हुई मनरूपी गाय को रोको। तात्पर्य यह है कि आंख, कान, नाक, जीभ, त्वचा—ये पांचों ज्ञानेन्द्रियां हैं। मुख, हाथ, पांव, लिंग, गुदा ये पांच कर्मेन्द्रियां हैं। शब्द, स्पर्श रूप, रस, गंध—ये पांच ज्ञानेन्द्रियों के विषय हैं। इन पन्द्रहों के सहारे से ही मन इधर-उधर भटकता है। अतः इसे इनके सम्पर्क से हटाओ।

३ सद्भावेन हरेन्मित्रं, सम्भ्रमेण तु बान्धवान्।
स्त्री-भृत्यौ दान-मानाभ्यां, दाक्षिण्येनेतरान् जनान्॥

—हितोपदेश

सद्भावना से मित्र को, सम्मान से बान्धवों को, दान से स्त्री को, मान से सेवक को और चतुरता से अन्य लोगों को वश में करना चाहिए।

४. लुब्धमर्थेन गृह्णीयात्स्तब्धमञ्जलिकर्मणा ।
मूर्खं छन्दानुरोधेन, याथार्थ्येन च पण्डितम् ॥

—चाणक्यनीति ६।१२

लोभी को धन से, अभिमानी को हाथ जोडकर, मूर्ख को उसका मनोरथ पूरा करके और पण्डित को सच-सच कह कर वश मे करना चाहिए ।

चौदह रज्ज्वात्मक ससार कितना बडा है, इसको समझाने के लिये जैनशास्त्र (भगवती ११। ०) मे छ देवो का दृष्टान्त दिया गया है, वह इस प्रकार है—

जम्बूद्वीप की परिधि तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्ताईस योजन, तीन कोस, एक सौ अट्ठाईस धनुष्य और कुछ अधिक साढे तेरह अगुल है। अब कल्पना कीजिये कि महान् ऋद्धिवाले छ देवता जम्बूद्वीप के मेरु-पर्वत की चूलिका को घेर कर खडे है। इधर चार दिक्कुमारिया, (देविया) हाथो मे बलिपिण्ड लेकर जम्बूद्वीप की आठ योजन ऊँची जगती पर चारो दिशाओ मे बाहर की तरफ मुख करके खडी है। वे एक ही साथ चारो बलिपिण्डो को नीचे गिराये। उस समय उन छहो देवो मे से हर एक देवता मेरुचूलिका मे अपनी शीघ्रतर गति द्वारा नीचे आकर पृथ्वी तक पहुँचने मे पहले ही उन चारो बलिपिण्डो को ग्रहण करने मे समर्थ है। बलिपिण्ड जितनी देर मे देवियो के हाथो से छूटकर जमीन तक आठ योजन भी नही आ पाते, उतनी-सी देर मे वह देवता मेरुचूलिका से लाख योजन तो नीचे आजाता है और लगभग सवा

तीन लाख योजन का जम्बूद्वीप के चारो ओर एक चक्कर लगा देता है अर्थात् सवा चार लाख योजन क्षेत्र लाघ देता है।

लोक कितना बडा है, यह जानने के लिए उपर्युक्त शीघ्रगति से उन छहो देवो मे से घनीकृत लोक के मध्य भाग मे चार देवता तो चारो दिशाओ मे जाये और दो ऊपर-नीचे जाये। उस समय हजार वर्ष की आयुवाला एक बालक उत्पन्न होकर पूर्ण आयुष्य भोगकर मर जाये, यावत् उसकी सात पीढिया बीत जाये एव उसके नाम-गोत्र भी नष्ट हो जाये। इतने लम्बे समय तक भी यदि वे छहो देवता अपनी शीघ्रतरगति से निरन्तर चलते ही जायें तो भी इस लोक का अन्त नही आ सकता एव जितना रास्ता वे तय करते है, उससे असख्यातवा भाग शेष रह जाता है।

२ आईस्टीन के मतानुसार प्रति सेकिण्ड एक लाख ८६ हजार मील चलनेवाली प्रकाश की किरणे यदि ससार की परिक्रमा करे तो उन्हे १२ करोड वर्ष लग जायेंगे।

३ ग्रहो और ब्रह्माण्डो के विषय मे वैज्ञानिको का मत—

वैज्ञानिको के मतानुसार यह पृथ्वी एक [illegible] फुटबॉल की तरह गोल है और एक हजार मील प्रति घटा की गति से अपनी धुरी पर घूम रही है तथा ६६ हजार मील प्रति घटा की गति से सूर्य की वार्षिक परिक्रमा पूरी कर रही

है। पृथ्वी की तरह अन्य ग्रह भी सूर्यमण्डल के चारो ओर घूम रहे है। सूर्य से इनकी दूरी निम्न प्रकार है—

ग्रह	दूरी (मीलो मे)
बुध	३ करोड ६० लाख
शुक्र	६ करोड ७३ लाख
पृथ्वी	९ करोड ३० लाख
मगल	१४ करोड १७ लाख
बृहस्पति	४८ करोड ३० लाख
शनि	८८ करोड ७१ लाख
अरुण	१७८ करोड ५० लाख
वरुण	२७९ करोड ७० लाख
यम	३४७ करोड

हमको यह भी जान लेना चाहिए कि सूर्य का आकर्षण इन ग्रहो मे भी करोडो मील दूर तक है। पर वहा कोई ग्रह नही है। सूर्यमण्डल ६०० करोड मील लम्बा है और इतना ही चौडा है। यह गोला इस ब्रह्माण्ड (जिसे आकाशगगा कहते है) के चारो ओर घूम रहा है। इसे अपना एक चक्कर पूरा करने मे ३० करोड ६७ लाख २० हजार वर्ष लगते है। इस ब्रह्माण्ड के बाहर हमारा सूर्य-मण्डल अकेला ही नही है ऐसे डेढ अरब सूर्यमण्डल घूम रहे है। हमारा यह सूर्यमण्डल उन सबसे छोटा है। पूर्वोक्त वृहत् सूर्यमण्डलो के बीच मे घूमता हुआ हमारा यह सूर्य-मण्डल ऐसा प्रतीत होता है, मानो हजारो मील प्रतिघटा

की गति से चलती हुई आधी में घूमते हुए बडे-बडे वृक्षो एव पहाडो के बीच मे एक राई का दाना घूम रहा है।

आकाशगगा मे आगे जो चमकते हुए सितारे दिखाई देते है, उनमे से प्रत्येक सितारा एक-एक ब्रह्माण्ड है। ऐसे कितने ब्रह्माण्ड है, यह किसी को पता नही है। कहाजाता है कि लगभग १० हजार करोड ब्रह्माण्ड तो वैज्ञानिको ने गिन लिए है। कई सितारे तो पृथ्वी से इतने दूर है कि १ लाख ८३ हजार मील प्रतिसेकिण्ड की गति से चलने वाली उनकी रोशनी यहाँ अरबो वर्षों तक भी नही पहुच सकती। इन सबसे परे भी कितने खरब ब्रह्माण्ड और है, उनका अभी तक कोई पता नही लगा है और न कभी लग सकता है। अस्तु, इस अनन्त सृष्टि पर ज्यो-ज्यो विचार किया जाता है त्यो-त्यो हैरानी होती है और दिमाग चक्कर खाने लगता है।

हमारी यह दृश्यमान पृथ्वी एक सिरे से दूसरे सिरे तक ७९२७ मील चौडी है इस पर ३५० करोड से भी अधिक मनुष्य रहते है। चाँद पृथ्वी से लगभग ढाई लाख मील दूर है

(मिलाप, २१ मई १९६९ के सम्पादकीय लेख के आधार पर।)

२५ नरक-संसार

१. नरक पापकर्मिणां यातनास्थानेषु।

—सूत्रकृतांग श्रुत २ अ. १ टीका

पापी जीवो के दुःख भोगने के स्थानो के अर्थ मे नरक शब्द का प्रयोग होता है।

२. अहेलोगेणं सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ एयासिण सत्तण्ह पुढवीण सत्त णामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—घम्मा, वसा, सेला, अजणा रिट्ठा, मघा माघवती। ——स्थानाग ७

अधोलोक मे सात पृथ्वियाँ हैं, उनके ये सात नाम हैं—
१ घमा, २ वशा, ३ शेला, ४ अञ्जना, ५ रिष्ठा, ६ मघा, ७ माघवती।

३. एयासिण सत्तण्ह पुढवीण सत्त गोत्ता पण्णत्ता, त जहा— रयणप्पभा, सक्करप्पभा, वालुकापभा, पकप्पभा, धूमप्पभा, तमा, तमतमा। —स्थानाग ७

इन सातो पृथ्वियो के सात गोत्र हैं—१ रत्नप्रभा, २ शर्कराप्रभा, ३ वालूकाप्रभा, ४ पङ्कप्रभा, ५ धूम्रप्रभा, ६ तम प्रभा, ७ तम-तमाप्रभा।

(शब्दार्थ से सम्बन्ध न रखनेवाली अनादिकाल से प्रचलित संज्ञा को नाम कहते हैं। शब्दार्थ का ध्यान रखकर किसी का जो नाम दिया जाता है, उसे गोत्र कहते हैं। घमा आदि सात पृथ्वियों के नाम हैं और रत्नप्रभा आदि गोत्र हैं। —प्रज्ञापना २ टीका

४. आसीय बत्तीस, अट्ठावीसं तहेव वीस च ।
अट्ठारस सोलसग, अट्ठुत्तरमेव हेट्ठिमया ॥
—जीवाभिगम प्रतिपत्ति ३ उ. १. नरकाधिकार

रत्नप्रभादि पृथ्वियो की मोटाई क्रमश निम्नलिखित है—
(१) एक लाख अस्सी हजार योजन, (२) एक लाख बत्तीस हजार योजन, (३) एक लाख अठाईस हजार योजन, (४) एक लाख बीस हजार योजन, (५) एक लाख अठारह हजार योजन,
(६) एक लाख सोलह हजार योजन, (७) एक लाख आठ हजार योजन ।

५ तीसा य पन्नवीसा, पन्नरस दसा य तिन्नि य हवंति ।
पचूणसयसहस्सं, पचे व अणुत्तरा णरगा ॥
—जीवाभिगम प्रतिपत्ति ३, उ १ नरकाधिकार

१ तीस लाख, २ पच्चीस लाख, ३ पन्द्रह लाख ४ दस लाख, ५ तीन लाख, ६ पांच कम एक लाख, ७ पाच । ये क्रमश. सातो नरको के नरकावासो की सख्या है । (सब मिलकर ८४ लाख नरकावास होते है ।)

६ रत्नप्रभा आदि पृथ्वियों मे ग्राम-नगर आदि नही हैं । (विग्रहगति प्राप्त जीवो के अतिरिक्त) बादर अग्निकाय नही है । वहां जो बादल-गर्जना एव वृष्टि होती है, वह सुर-असुर एव नागो द्वारा की जाती है ।
—भगवती ६।८

७ नरगा अतो वट्टा बाहि चउरसा, अहे खुरप्पसठाणसठिया, निच्चंधयारतमसा, ववगयगह-चद-सूर-नक्खत्त-जोइसप्पहा, मेद-वसा-मास-रुहिर - पूयपडल - चिक्खल्ल - लित्ताणु-

नरक के जीव १० प्रकार की वेदना का अनुभव करते हुए विचरते हैं। यथा—(१) शीत, २ उष्ण, ३ भूख, ४ तृषा, ५ खाज, ६ परवशता, ७ भय, ८ शोक, ९ जरा-वृद्धावस्था, १० ज्वर-कुष्ट आदि रोग।

४ एगमेगस्स णं नेरइयस्स असब्भावपट्ठवणाए सव्वोदही वा सव्व पोग्गले वा आसगंसि पक्खिवेज्जा, णो चेव णं से णेरइए तित्ते वा सिया वितण्हे वा सिया। एरिसयाण गोयमा! णेरइया खुहप्पिवास पच्चणुब्भवमाणा विहरंति।

—जीवाभिगम, प्रतिपत्ति ३ उ. २ नरकाधिकार

असत्कल्पना से यदि एक नरकनिवासी जीव के मुख में सारे समुद्रों का पानी और दुनिया के सारे खाद्य-पुद्गल डाल दिए जायें तो भी उनकी भूख प्यास नहीं बुझती। हे गौतम! नरक के जीव इस प्रकार अनन्त भूख-प्यास का अनुभव कर रहे हैं।

५ तेण तत्थ णिच्चं भीया, णिच्च तसिया, णिच्च छुहिया, णिच्च उव्विग्गा, णिच्च उपप्पुया, णिच्चं वहिया, णिच्चं परममसुभमउलमणुबद्ध निरयभव पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। —जीवाभिगम, प्रतिपत्ति ३ नरकाधिकार उ २

वे नरक के जीव सदा भयभीत, त्रस्त, क्षुधित, उद्विग्न एवं व्याकुल रहते हैं। वे निरन्तर वध को प्राप्त होते हैं वे अतुल-अशुभ परमाणुओं से अनुबद्ध होते हैं। इस तरह घोर-पीड़ा का अनुभव करते हुए विचरते हैं।

६. हण छिंदह भिंदह ण दहेति,

सद्दे सुणित्ता परहम्मियाणं।

ते नारगाओ भयभिन्नसन्ना,

[illegible]ति क[illegible] नाम दिसं व[illegible] [illegible]

इन पापियो को मुद्गरादिक से मारो, खड्गादिक से छेदो, शूलादिक से भेदो, अग्नि से जलाओ। परमाधामिक देवो के ऐसे शब्द सुन कर नैरयिक भय से नष्ट प्राय-सज्ञावाले होकर सोचते हैं कि अब भाग कर कहा जाएँ ?

७. छिंदति बालस्स खुरेण नक्क,
उट्ठेवि छिंदति दुवेवि कन्ने।
जिब्भ विणिक्कस्स विहत्थिमित्त,
तिक्खाहि सूलाहिऽभितावयति।

—सूत्रकृताङ्ग ५।१।२२

परमाधार्मिक देवता पूर्वजन्म मे किये हुए पापो का स्मरण करवा कर छुरे से पापी जीवो के नाक, होठ एव दोनो कान काटते हैं। उनकी जीभो को खीचकर वितस्ति (गिठ) भर बाहर निकाल लेते है और फिर उनको तीखे शूलो द्वारा भेदन करते हैं।

८ कर-कर पाप प्रचंड नर, पडे नरक जमहत्थ।
तन विकराल विशेष सुर, फिर गये ते सब सत्थ॥
फिर गये ते सब सत्थत, पकड पिछत्थत,
धर के तग्गग, गुर्ज अगग्गग,
सिर बिच भग्गग, उरपिर जग्गग मग्गग पग्गग,
धर कुई धुजत थर-थर, सुद्धज नाह सुबुद्धज हीन,
कुबुद्धज कर-कर।

—अमृतध्वनिछंद

६. जं नरए नेरइया, दुहाइं पावंति घोर-अणंताइं।
तत्तो अणंतगुणियं, निगोयमज्झे दुहं होइ॥
नरक मे जो पापी जीव घोर अनन्त दुःख पाते हैं, निगोद मे उससे अनन्तगुणा दुःख होता है।

२७ नरक में जाने के कारण

१ चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्म पगरेंति, त जहा—महारंभयाए, महापरिग्गहयाए, पंचिंदियवहेग, कुणिमाहारेणं।

—स्थानाग ४।४।३७३

चार कारणो से जीव नरक के योग्य आयुष्य का उपार्जन करते हैं। यथा—१ महाआरम्भ से, २ महापरिग्रह से, ३ पञ्चेन्द्रिय-जीवो का वध करने से, ४ मद्य-मास का आहार करने से।

२. त्रिविधं नरकस्येदं, द्वार नाशनमात्मन ।
काम क्रोधस्तथा लोभ-स्तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत् ॥

—गीता १६।२१

काम क्रोध और लोभ—ये तीन नरक के द्वार हैं।

३ पचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइं गच्छन्ति तं जहा—पाणाइवाएणं जाव परिग्गहेणं।

—स्थानाङ्ग ५।१।३९१

पाच कारणों से जीव दुर्गति में जाता है—प्राणातिपात से यावत् परिग्रह से।

२८ नरकगामी कौन ?

१ जे केइ बाला इह जीवियट्ठी,
पावाइं कम्माइं करेंति रुद्दा।
ते घोररूवे तमिसंधयारे,
तिव्वाभितावे नरए पडंति॥

—सूत्रकृतांग ५।१।३

जो अज्ञानी इहलोक के अर्थी बनकर घोरपाप करते हैं, वे अत्यधिक अन्धकारवाले एवं तीव्रअभितापवाले नरक में पड़ते हैं।

२. इमं दंडेह, इमं मुंडेह, इमं तज्जेह, इमं तालेह...
इमं हत्थछिन्नयं करेह, इमं पायछिन्नयं करेह, इमं, उट्ठ-छिन्नयं करेह, इमं सीसछिन्नयं करेह, इमं मुहछिन्नयं-करेह, इमं वेयछिन्नयं करेह, ... इमं भत्तपाणनिरुद्धयं करेह, इमं जावज्जीवबंधणं करेह, इमं अन्नयरेणं असुभ-कुमारेणं मारेह।..
तहप्पगारे पुरिसजाए..... कालमासे कालं किच्चा-धरणीयलमइवइत्ता अहे नरगधरणीतले पइट्ठाणे भवइ।

—दशाश्रुतस्कन्ध ६

इसे दण्डित करो, इसे मुण्डित करो, इसे मारो, इसे पीटो, इसके हाथ काटो, इसके पैर काटो, इसके कान काटो, इसकी नाक

काटो, इसके होठ काटो, इसका सिर काटो, इसका मुखच्छेदन करो, इसका लिंगच्छेदन करो, इसका भोजन-पानी रोको, इसे यावज्जीवन के लिए बांधो तथा इसे किसी एक कुमरण से मारो! इस प्रकार आदेश-निर्देश करनेवाला पुरुष मरकर नीचे नरक-पृथ्वीतल में जाता है।

३ आशापाशशतैर्बद्धा, काम-क्रोधपरायणाः।
ईहन्ते काम-भोगार्थ-मन्यायेनार्थसंचयान् ॥१२॥
इदमद्य मया लब्ध-मिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे, भविष्यति पुनर्धनम् ॥१३॥
असौ मया हतः शत्रु-र्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी, सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ॥१४॥
आढ्योऽभिजनवानस्मि, कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य, इत्यज्ञानविमोहिताः ॥१५॥
अनेकचित्तविभ्रान्ता, मोहजालसमावृताः।
प्रसक्ताः काम-भोगेषु, पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥१६॥

—गीता १६

आशारूप, सैकड़ों बन्धनों से बंधे हुए काम-क्रोध में लीन प्राणी काम-भोग की प्राप्ति के लिए अन्याय से धन का संचय करना चाहते हैं ॥१२॥

वे सोचते हैं—यह तो मुझे आज मिल गया और आगे यह मिल जाएगा। मेरे पास यह इतना धन तो है तथा इतना फिर हो जाएगा ॥१३॥

मैंने इस शत्रु को मार दिया, दूसरों को भी मार दूंगा। मैं ईश्वर हूँ, भोगी हूँ, सिद्ध हूँ, बलवान हूँ, सुखी हूँ ॥१४॥

मैं धनवान् हूँ, परिवारवाला हूँ, आज मेरे समान दूसरा कौन है ? मैं यज्ञ करूँगा, दान दूँगा और हर्षित हो जाऊँगा ॥१५॥
ऐसे अज्ञान से मोहित अनेक प्रकार से चित्त में विभ्रांत मोह-जाल में फँसे हुए एवं काम-भोग में तत्पर प्राणी अपवित्र नरक में जाते हैं ॥१६॥

४. मित्रद्रोही कृतघ्नश्च, यश्च विश्वासघातक ।
तै नरा नरकं यान्ति, यावच्चन्द्र-दिवाकरौ ॥

—पञ्चतन्त्र १।४५४

जो मनुष्य मित्रद्रोही, कृतघ्न एवं विश्वासघाती होते हैं, वे नरक में जाते हैं, जब तक सूर्य-चन्द्र विद्यमान हैं।

५. कुक्षि-भरणनिष्ठा ये, ते वै नरकगामिनः । —गरुडपुराण
जो केवल पेटभराई की चिन्ता में रहते हैं, वे नरकगामी होते हैं।

२६ देव-संसार

१. देवों की पहचान—

अमिलाय - मल्लदामा, अणिमिसनयणा य नीरजसरीरा,
चउरंगुलेण भूमिं, न पिसति सुरा जिणो कहए।

—व्यवहार ३।२ भाष्य

देवता अम्लानपुष्पमालावाले अनिमेष नेत्रवाले, निर्मल शरीर-वाले और पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर रहने वाले होते हैं—ऐसा भगवान का कथन है।

२. देवो की उत्पत्ति—

मनुष्यणियो की तरह देवियां गर्भ धारण नही करती। देवो के उत्पन्न होने का एक नियत स्थान होता है, उसे उपपात कहते है। —स्थानाङ्ग ५।३।१४

३. देवो की कार्यक्षमता—

(क) कई देवता हजार प्रकार के रूप बनाकर पृथक्-पृथक् हजार भाषाये बोल सकते है। —भगवती १४।६।६

(ख) कई देवता मनुष्यो की आखो के भापणो पर बत्तीस प्रकार का दिव्यनाटक दिखा देते हैं, फिर भी मनुष्यो को बिल्कुल तकलीफ नही होने देते। उन देवो को अव्याबाध देव कहते है। —भगवती १४।८।१७

(ग) शक्रेन्द्र महाराज के लिए कहा जाता है कि वे मनुष्य के मस्तक को तलवार से काटकर, उसे कूट-पीट कर चूर्ण बना देते हैं एवं कमंडलु में डाल लेते हैं। फिर तत्काल उस चूर्ण के रजकणों का पुनः मस्तक बनाकर मनुष्य की धड़ से जोड़ देते हैं। कार्य इतनी दक्षता व शीघ्रता से करते हैं कि मनुष्य को पीड़ा का बिलकुल अनुभव तक नहीं होने देते।

—भगवती १४।८।१८

४. देवों की आयु—

(क) देवों की आयु जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट ३३ सागर की है। —प्रज्ञापना ४ के आधार से

(ख) चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—सरागसंजमेणं, संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामणिज्जराए। —स्थानांग ४।४।३७३

चार कारणों से जीव देवता का आयुष्य बांधते हैं। यथा—(१) राग भावयुक्त संयम पालने से, (२) श्रावकव्रत पालने से, (३) अज्ञान दशा की तपस्या से (४) अकाम—मोक्ष की इच्छा के बिना की गई निर्जरा से।

(ग) दानं दरिद्रस्य विभोः क्षमित्वं,
यूनां तपो ज्ञानवतां च मौनम्।
इच्छानिवृत्तिश्च सुखोचितानां,
दया च भूतेषु दिवं नयन्ति॥

—पद्मपुराण, पाताल खण्ड ६२।५८

जो आदमी दरिद्र हैं उनका दान करना, जो सामर्थ्यवाले हैं उनका क्षमा करना, जो जवान हैं उनका तपस्या करना, जो ज्ञानी हैं उनका मौन रखना, जो सुख भोगने के योग्य हैं उनका सुख की इच्छा का त्याग करना और सभी प्राणियों पर दया करना—ये सद्गुण मनुष्य को स्वर्ग मे लेजानेवाले हैं।

५. देवो के भेद—

(क) देवा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा—भवणवइ, वाणम-
तरा, जोइसिया, वेमाणिया। —प्रज्ञापना १

देवता चार प्रकार के होते है-(१) भवनपति, (२) व्यन्तर, (३) ज्योतिष्क, (४) वैमानिक।

(ख) पंचविहा देवा पण्णत्ता, त जहा—भवियदव्वदेवा, णरदवा, धम्मदेवा, देवाधिदेवा, भावदेवा।
—स्थानांग ५।१

पाँच प्रकार के देव कहे है—
(१) भव्य द्रव्यदेव—भविष्य मे देवयोनि मे उत्पन्न होनेवाले जीव, (२) नरदेव—चक्रवर्ती, (३) धर्मदेव—अणगार-साधु, (४) देवाधि-देव—तीर्थंकर (५) भावदेव—भवनपतिदेव आदि।

३० दैविक-चमत्कार की विचित्र बातें

१ झाला राजपूत-पाटडीनरेश करण गेला की रानी से बावरा भूत संगम करने लगा। हलवद के राजपूत श्री हरपालदेव जो पाटडीनरेश के भानजे थे, छिपकर रानी के महल में रहे। ज्योंही भूत आये, चोटी पकड़ कर उसे पछाड़ने लगे। भूत ने हारकर मांगी उस सेवा स्वीकार की। भूत को जीत कर घर जाते समय भूख लगी। श्मसान में चिता जल रही थी। हरपालदेव उसमें दो बकरे पकाने लगे। अचानक जलती चिता में से दो हाथ निकले। मांस समर्पण किया, लुप्त हुआ, तब जंघा चीर कर खून दिया। शक्तिदेवी प्रकट हुई एवं मुझको पूछे बिना कोई काम न करना—इस शर्त से वह हरपालदेव की रानी बनी। भूत का उपद्रव मिटाने से पाटडीनरेश ने यथेष्ट मांगने का वरदान दिया। भूत एवं शक्ति की सलाह से रात-रात में तोरण बांधे जायें, उतने गांव मांगे। राजा की स्वीकृति मिली, हरपालदेव घोड़े पर चढ़कर दौड़े एवं २३५० गांवों के तोरण बांधे। फिर ५५० गांव शक्तिरानी को [illegible] से दान में दिये। [illegible] राजधानी बनाई गई।

एकदिन राजकुमार खेल रहे थे। मस्त हाथी उनके

मारने लगा। महल में बैठी हुई शक्ति रानी ने हाथ लम्बे किये एव राजकुमारो को झाल (पकड) कर ऊँचे ले लिये। झालने से झाला राजपूत कहलाए। बात प्रसिद्ध होने मे शक्ति अन्तर्धान हो गई। राज-परिवार अब भी शक्ति-माता की पूजा करता है। —ध्रांगध्रा में श्रुत

२. मेवे की खिचड़ी—

महाराणा प्रताप जगल मे थे। अकबर फकीर के रूप में आया एव मेवे की खिचडी मागी। सामान न होने से शर्मिन्दा होकर महाराणा मरने लगे। अचानक एक आदमी बैल पर समान लाद कर लाया और देकर गायब हो गया। मेवे की खिचडी बनाकर खिलाई। अकबर महाराणा की उदारता पर प्रसन्न होकर लौटा। —उदयपुर में श्रुत

३. रुपयों की थैली—

नेपोलियनबोनापार्ट से माता ने पैसे मागे। न दे सकने से वह मरने लगा। एक दोस्त रुपयो की थैली देकर गुम होगया।

४. वंशच्छेद साप—

फतेपुर निवासी 'धीरमलजी माहेश्वरी' व्यापारार्थ भिवानी जा रहे थे। रास्ते में एक गाव मे एक जाट के घर ठहरे। वहां साप के काटने मे ठाकुर का कुँवर मर गया था। उसे चिता में सुलाकर जलाने की तैयारी होरही थी। धीरमल जी वहा पहुचे। चाकू से उसका खून लिया और बोले—इसे बाहर निकालो, यह जी जायेगा। बाहर निकाल कर

मंत्र पढा, सांप आया । पूछने पर कहा—इसने खेलते समय मुझे पत्थर से मारा था । धीरमलजी ने मन्त्र पढकर माफ करने के लिये कहा । सांप बोला—१०० कमेडे दिलाऊँगा । फिर मन्त्र पढकर आग्रह किया, सांप ने पचास कमेडे घटाए । इस प्रकार धीरमलजी पुन-पुन मन्त्र पढते गये और कमेडो की सख्या घटती गई । आखिर एक कमेडे पर सांप डट गया । फिर मन्त्र पढा एव कहा–आधा हनुमान के नाम का और आधा मेरे नाम का छोड दे ! सांप माना एव कुवर जी गया ।

● एक वार सपेरो से विवाद हुआ । उन्होंने एक राजसर्प लाकर धीरमलजी पर छोडा, सांप ने डक मारा एवं वे बेहोश हुए । पूर्व कथानुसार उन्हे गोबर से भरे खड्डे में सुला कर ऊपर भी गोबर डाल दिया गया । सात दिन के बाद गोबर फटा एव बाहर निकालकर उनके मुह मे घी डाला गया । वे तत्काल होश मे आगये । फिर वे जगलो मे घुमकर एक बिल्कुल पतला पीले रग का सांप लाये और कहने लगे इसका नाम "वशच्छेद सर्प" है । यह जिसे भी काटेगा उसके वश के सभी मर जायेंगे । सपेरो ने हार मानी ।

—साध्वी धोंदोपाजी से सुन

५ सांपों की गाड़ी—उन्न की बात है, एक मन्त्रवेत्ता ठाकुर घोड़े पर चढ़कर कहीं जा रहे थे । वे रास्तेमें पर सवार होकर जाता था एक हरा सांप मिला । ठाकुर ने मन्त्र पढ़कर सांपों में तरीके सीधी लाग रहे, सर्पराज ने सीधे

उतरकर उसको मिटा दिया। नाग चलने लगे, पुनः लकीर खींची, पुनः मिटाई। ज्यों ही तीसरी बार लकीर खींची, सर्पराज ने उस लकीर पर पूंछ का प्रहार किया एवं घोड़े से गिरकर ठाकुर मर गए। —धोडालगणी से प्राप्त

६. **मन्त्रित कौड़ियाँ**—डुमार (बंगाल) में एक आदमी को सांप ने काट खाया। मन्त्रवादी ने चारों दिशाओं में मन्त्रित कौड़ियाँ फेंकी। तीन दिशाओं में वापिस आ गईं लेकिन चौथी दिशा में तीन कौड़ियाँ सांप को लेकर आईं। मन्त्रवादी ने दूध के चार प्याले रखे, सांप डंक चूसता गया और दूध में डालता गया। तीन प्यालों के दूध का रंग नीला हो गया। फिर चौथे प्याले का दूध पीकर सांप चला गया और वह आदमी जी गया।

—पृथ्वीराज मुराणा से श्रुत

७ **वर्ष भर का खर्च**—अहमदाबाद लाल-पोल में एक पटेल की मृत्यु के बाद जब तक उसकी स्त्री जीवित रही, तब तक नये वर्ष के दिन भोयरा के द्वार पर सारे वर्ष के खर्च का हिसाब और एक दूध का प्याला रख दिया जाता। सांप आकर दूध पी जाता और खर्च के रुपए रख जाता। माता की मृत्यु के पश्चात् पुत्रों ने भोयरा खोला, एक आदमी मिला तब से उस सांप का आना बन्द हो गया।

८. **सिकोतरी**—अकबर भटेवर के तालाब पर सो रहा था। महाराणाप्रताप जांबूड़ी की नाल में गए। कृषक खेत में पत्थर फेंक रहा था। बुढ़िया बोली—"अरे ध्यान रामजी!

मेवाड़नाथ पधारे हैं" फिर प्रताप को दूध पिलाया। वह बुढ़िया सिकोतरी थी अतः विद्या से घोड़ी बनकर प्रताप को अकबर के डेरे में ले गई। राणा ने तलवार उठाई। आवाज आई—"ऊँ हूँ" राणा ने पूछा कौन? उत्तर मिला वीर हूँ। फिर दाढ़ी और मूँछ काटकर ले आये। उसके बाद फिर अकबर ने मेवाड़ आना छोड़ दिया।

—उदयपुर में श्रुत

९. **रुई का फुआ**—चुरू में श्रीगलाराजी यति ने श्रावकों का अतिआग्रह देखकर मन्त्र पढ़ना शुरू किया। ३०-४० आदमी चमत्कार देखने के लिए बैठे थे। पहले एक रुई का फुआ आकर गिरा। चन्द ही क्षणों में वह फुआ बालक, जवान एवं दाढ़ीवाला बूढ़ा बन गया। दर्शक सारे मूर्छित हो गए। फिर यति जी ने मन्त्रित खून का छींटा डालकर उस उपद्रव को शांत किया।

कहा जाता है कि दर्शकों में से दो तो मर गये और एक (सुगनलाल बरड़िया के पिता) चार दिन के बाद सचेत हुये।

—सुगनलाल बरड़िया से श्रुत

१०. **यतिजी का पत्र**—महाराणा-महाराज ने गुमान जी यति से पूछा—मैं कौन से मार्ग से निकलूंगा? यतिजी ने एक पत्र लिखा और उसे बन्द करके उन्हें दे दिया। राजा यतिजी को झूठा करने के लिए शहरपनाह की दीवार को फोड़कर बाहर निकला और एक वृक्ष की डाली पकड़कर पट

पत्र पढने लगा। राजा ने जो कुछ किया वह सब उस पत्र मे पहले से लिख रखा था। राजा ने प्रसन्न होकर भेंट के रूप मे प्रतिवर्ष उन्हे ८४ रुपया देना स्वीकार किया।

११ अजब ठडाई—बालोतरा (मारवाड) में एक दिन 'सगतमलजी' आदि सत यतीजी का पुस्तकभण्डार देख रहे थे। दोपहर के बाद यतीजी ने थोडी-सी (तीन पाव अन्दाज) ठण्डाई बनाई और एक बर्तन मे ढककर रख दी। पीनेवाले आते गए और यतीजी पिलाते गये। लगभग तीस-चालीस आदमी पी गये। बाद मे ढका हुआ वस्त्र हटाकर देखा तो ठडाई ज्यो की त्यों थी। फिर सन्तो के जलपात्र पर हाथ घुमाया। पानी जम गया एव पात्र मे चिपक गया। सन्त कुछ घबराये। यतीजी ने पुन पात्र पर हाथ फेरा। सन्त पात्र उठाकर देखने लगे तो सारा पानी ढुल गया।

—सगतमलजी से श्रुत

१२. मन्त्रित उड़द—डाकिनियो ने एक यती के शिष्य को ग्रहण कर लिया एव वह मर गया। क्रुद्ध गुरु ने मंत्रित उडद दिये। जलती चिता मे फैकने से चीलो के रूप मे आकर डाकिनिया उसमे गिरकर भस्म होने लगी। एक मुट्ठी उडद रख लेने से कुछ जीवित बच गयी।

—उदयपुर मे श्रुत

१३. सुराणाजी बचे—माल्पु गाव मे नेनरामजी सुराणा को डाकिनी ने ग्रहण कर लिया। यतीजी ने अपना घुटना

मूंडा, ठाकुर साहब की माता (जो डाकिनी थी)[1] का सिर मूंडा गया एवं मुराणा जी बचे। यतीजी को उसी समय ऊंट पर चढकर भागना पडा।

—चुरू के श्रावकों से श्रुत

१४ मूसलाधार बरसात—मालेरकोटला में यतीजी ने सवारी निकालते समय सलाम नहीं किया। नवाब क्रुद्ध हुआ। लोगों ने कहा—ये चमत्कारी पुरुष हैं। नवाब ने दस बजे तक बारिस बरसाने के लिये कहा। साढे नौ बजे के बाद बादल निकले और मूसलाधार बरसात होने लगी। नवाब एवं लोगों ने माफी मांगी। वृष्टि बन्द की। फिर वहाँ से यतीजी सिरसा चले गये।

—हाकमचन्द से श्रुत

१५ जलाशय सुखा दिए—रानिया गांव पर बीकानेर का हमला हुआ। यतीजी ने रानियां में तीन-तीन कोस में सभी

---

१ डाकिनी मनुष्यणी ही होती है और यदा-कदा जन्त्र पर सवार होकर घूमा करती है। पहले वह मनुष्य के तन में विलीन में रहे हुए [illegible] को तथा नरखून आदि फलों में रही हुई गिरी को [illegible] (चीथने) लगती है। इस प्रकार [illegible] के कारण वह [illegible]कारी कहलाती है। ऐसा करते करते जब वह बच्चों का कलेजा निकाल कर खाने लगती है तब उसे डाकिनी कहते हैं। डाकिनियों द्वारा गृहीत बालक सूखने लग जाता है और अन्त में मर जाता है। ऐसी भी [illegible] है कि जमीन में गाड़े हुए मृत बच्चे को डाकिनी [illegible] के समय निकालकर जीवित कर लेती है, उस समय यदि डाकिनी को मार दिया जाय तो बच्चा जीवित हो सकता है।

१४

जलाशय सुखा दिये। शत्रु-सेनापति ने भिक्षु के वेष
आकर माफी मागी तव तीन कोस पर एक तालाव मे जल
प्रकट किया।

–हाकमचन्द से श्रुत

१६ (क) **फीकी-कडवी चीनी**–राजलदेसरनिवासी मालचद-
जी वैद ने चीनी (शक्कर) को मन्त्र द्वारा फीकी एव
कडवी बना दिया। प्रकाश वैद का मुह बहुत देर तक
तक कडवा रहा।

–चूरू में आंखो देखा

(ख) इन्ही मालचन्दजी ने दिव्य-शक्ति से खिवाडा (मार-
वाड) मे विदामाजी की दीक्षा के समय नौ सेर गुड की
लापसी से ३४५ मनुष्यो को भोजन करवाया और सात
सेर लापसी बचा भी ली।

(ग) मारवाड जकशन मे खारची गांव मे बालचन्दजी के
घर मे पाँच सेर बादाम की बर्फी मगवाकर लोगो को
खिलाई तथा लाडनू मे विवाह के प्रसग पर खुद तीन सेर
मिठाई खा गये। और कुछ समय के बाद पुन ज्यो की
त्यो दिखा दी।

—मालचन्दजी से श्रुत

कालूगणी की आवाज–विक्रम सवत २००२ पौष की बात
। आचार्यश्री तुलसी मोमासर से सरदारशहर पधार
थे। उन दिनो आचार्यश्री के खासी का प्रकोप इतना
रहा था कि कोई भी औषधि काम नही कर रही थी।
मासर से छ मील दूर भादासर गांव मे रात के समय
बहुत अधिक सर्दी नही थी और नीद न आने से

काफी परेशानी हो रही थी। उस समय अष्टमाचार्य कालूगणी की आवाज आई—चिन्ता मत कर, ओटकर सो जा! आचार्यश्री सो गये। खासी बिल्कुल बन्द थी। कुछ देर बाद पुन विचार आया कि कालूगणी की आवाज नही आई, केवल मन का भ्रम था। बस, खासी पहले से भी अधिक चलने लगी। आचार्यश्री बहुत खिन्न हो गये और सोचने लगे कि जो सन्देह किया वह मेरी गलती हुई। इतना-सा सोचने के साथ ही नीद आगई। प्रात उठे तो खासी का नाम-निशान भी नही था।

—आचार्यश्री तुलसी से श्रुत

१८. खाटू का वृद्ध श्रावक—भगवत' वि स २००१ मिगसिर की बात है। रात को हम कई साधु आचार्यश्री तुलसी की सेवा मे बैठे थे और देवताओ की बातें चल रही थी। आचार्य श्री ने फरमाया कि अभी कुछ दिन पहले 'खाटू' मे एक वृद्ध श्रावक दर्शनार्थ यहां (छापर) आगये। मैंने उनसे साश्चर्य पूछा—आंखो मे तुम्हे पूरा दीखता नही, चलने की तुम्हारी शक्ति नही और बवासीर रोग मे तुम पीडित हो, इस हालत मे अकेले दर्शनार्थ कैसे आये? उन्होंने कहा—गुरुदेव! दर्शन की अभिलाषा बहुत दिनो से लग रही थी, लेकिन साधन के अभाव मे उसकी पूर्ति नही हो सकी। एक दिन रात के समय छोटा बेटा (जो मर गया था) दृष्टिगोचर हुआ और कहने लगा, पिताजी! चलिये मैं करवा लाऊ आपको दर्शन! मैंने पूछा तू कहां है? उसने कहा—व्यन्तरदेवता की योनि में हूं। कई बार

जलाशय सुखा दिये। शत्रु-सेनापति ने भिक्षु के वेष में आकर माफी मागी तब तीन कोस पर एक तालाब में जल प्रकट किया। —हाकमचन्द से श्रुत

१६ (क) **फीकी-कडवी चीनी**—राजलदेसरनिवासी मालचदजी बैद ने चीनी (शक्कर) को मन्त्र द्वारा फीकी एव कडवी बना दिया। प्रकाश बैद का मुह बहुत देर तक तक कडवा रहा। —चूरु में आंखो देखा

(ख) इन्ही मालचन्दजी ने दिव्य-शक्ति से खिवाडा (मारवाड) मे विदामाजी की दीक्षा के समय नौ सेर गुड की लापसी से ३४५ मनुष्यो को भोजन करवाया और सात सेर लापसी बचा भी ली।

(ग) मारवाड जकशन मे खारची गाव मे बालचन्दजी के घर मे पाच सेर बादाम की वर्फी मगवाकर लोगो को खिलाई तथा लाडनू मे विवाह के प्रसग पर खुद तीन सेर मिठाई खा गये। और कुछ समय के बाद पुन ज्यो की त्यो दिखा दी। —मालचन्दजी से श्रुत

१७ कालूगणी की आवाज—विक्रम सवत २००२ पौष की बात है। आचार्यश्री तुलसी मोमासर से सरदारशहर पधार रहे थे। उन दिनो आचार्यश्री के खासी का प्रकोप इतना बढ रहा था कि कोई भी औषधि काम नही कर रही थी। मोमासर से छ मील दूर भादासर गांव मे रात के समय खासी बहुत अधिक चल रही थी और नीद न आने से

काफी परेशानी हो रही थी। उस समय अष्टमाचार्य कालूगणी की आवाज आई—चिंता मत कर, ओढ़कर सो जा! आचार्यश्री सो गये। खासी बिल्कुल बन्द थी। कुछ देर बाद पुनः विचार आया कि कालूगणी की आवाज नहीं आई, केवल मन का भ्रम था। बस, खासी पहले से भी अधिक चलने लगी। आचार्यश्री बहुत खिन्न हो गये और सोचने लगे कि जो सन्देह किया वह मेरी गलती हुई। इतना-सा सोचने के साथ ही नींद आगई। प्रातः उठे तो खासी का नाम-निशान भी नहीं था।

—आचार्यश्री तुलसी से श्रुत

१८. खाटू का वृद्ध श्रावक—सम्भवतः वि. स. २००१ मिगसिर की बात है। रात को हम कई साधु आचार्य श्री तुलसी की सेवा में बैठे थे और देवताओं की बातें चल रही थी। आचार्य श्री ने फरमाया कि अभी कुछ दिन पहले 'खाटू' से एक वृद्ध श्रावक दर्शनार्थ यहां (जापर) आगये। मैंने उनसे साश्चर्य पूछा—आँखों से तुम्हें पूरा दीखता नहीं, चलने की तुम्हारी शक्ति नहीं और बवासीर रोग से तुम पीड़ित हो, इस हालत में अकेले दर्शनार्थ कैसे आये? उन्होंने कहा—गुरुदेव! दर्शन की अभिलाषा बहुत दिनों से लग रही थी, लेकिन साधन के अभाव में उसकी पूर्ति नहीं हो सकी। एक दिन रात के समय छोटा बेटा (जो मर चुका था) दृष्टिगोचर हुआ और कहने लगा, पिताजी! चलिये मैं करवा लाऊं आपको दर्शन। मैंने पूछा तू कहाँ है? उसने कहा—व्यंतरदेवता की योनि में हूं। कई बार

जलाशय सुखा दिये। शत्रु-सेनापति ने भिक्षु के वेष में आकर माफी मागी तब तीन कोस पर एक तालाब में जल प्रकट किया। —हाकमचन्द से श्रुत

१६ (क) फीकी-कड़वी चीनी—राजलदेसरनिवासी मालचंदजी वैद ने चीनी (शक्कर) को मन्त्र द्वारा फीकी एवं कड़वी बना दिया। प्रकाश वैद का मुंह बहुत देर तक तक कड़वा रहा। —चूरू में आंखों देखा

(ख) इन्हीं मालचन्दजी ने दिव्य-शक्ति से खिवाड़ा (मारवाड़) मे विदामाजी की दीक्षा के समय नौ सेर गुड़ की लापसी से ३४५ मनुष्यों को भोजन करवाया और सात सेर लापसी बचा भी ली।

(ग) मारवाड जंकशन मे खारची गाव में बालचन्दजी के घर मे पांच सेर बादाम की बर्फी मंगवाकर लोगों को खिलाई तथा लाडनूं मे विवाह के प्रसंग पर खुद तीस सेर मिठाई खा गये। और कुछ समय के बाद पुन ज्यों की त्यों दिखा दी। —मालचन्दजी से श्रुत

१७ कालूगणी की आवाज—विक्रम संवत २००२ पोष की बात है। आचार्यश्री तुलसी मोमासर से सरदारशहर पधार रहे थे। उन दिनों आचार्यश्री के खांसी का प्रकोप इतना बढ़ रहा था कि कोई भी औषधि काम नहीं कर रही थी। मोमासर से छः मील दूर भादासर गांव मे रात के समय खांसी बहुत अधिक सता रही थी और नींद न आने से

काफी परेशानी हो रही थी। उस समय अष्टमाचार्य कालूगणी की आवाज आई—चिंता मत कर, ओटकर सो जा। आचार्यश्री सो गये। खासी बिल्कुल बन्द थी। कुछ देर बाद पुनः विचार आया कि कालूगणी की आवाज नही आई, केवल मन का भ्रम था। बस, खासी पहले से भी अधिक चलने लगी। आचार्यश्री बहुत खिन्न हो गये और सोचने लगे कि जो सन्देह किया वह मेरी गलती हुई। इतना-सा सोचने के साथ ही नींद आगई। प्रातः उठे तो खासी का नाम-निशान भी नही था।

—आचार्यश्री तुलसी से श्रुत

१८. खाटू का वृद्ध श्रावक—संभवतः वि. सं. २००१ मिगसिर की बात है। रात को हम कई साधु आचार्यश्री तुलसी की सेवा मे बैठे थे और देवताओ की बातें चल रही थी। आचार्यश्री ने फरमाया कि अभी कुछ दिन पहले 'खाटू' से एक वृद्ध श्रावक दर्शनार्थ यहां (छापर) आगये। मैंने उनसे साश्चर्य पूछा—आंखो से तुम्हें पूरा दीखता नही, चलने की तुम्हारी शक्ति नही और बवासीर रोग से तुम पीड़ित हो, इस हालत मे अकेले दर्शनार्थ कैसे आये? उन्होंने कहा—गुरुदेव! दर्शन की अभिलाषा बहुत दिनो से लग रही थी, लेकिन साधन के अभाव मे उसकी पूर्ति नही हो सकी। एक दिन रात के समय मोटा बेटा (जो मर गया था) हाजिर हुआ और कहने लगा, पिताजी! चलिये मैं करवा लाऊं आपको दर्शन! मैंने पूछा तू कहां है? उसने कहा—व्यन्तरदेवता की योनि में हूं। कई बार

अपने मित्रदेव के साथ आचार्य श्री के पास जाया करत
हू, मैंने कहा तू मुझे दर्शन कैसे करवाएगा ? उसने कह
आप टिकिट लेकर केवल गाडी मे बैठ जाइए । फिर
अपने आप सभाल लूंगा । गुरुदेव ! मैं उसका विश्वा
करके गाडी मे बैठ गया, गाडी रवाना होते ही मैं पूर्ण
स्वस्थ हो गया और आपके चरणो मे पहुँच गया ।

–धनमु

२० श्रीभिक्षुस्वामी के स्मारक की उपलब्धि—

जैनश्वेताम्बर तेरापथ के आचार्य श्रीभिक्षुस्वामी क
स्वर्गवास वि० स० १८६० भाद्र सुदी १३ के दिन सिरयार
(मारवाड) मे हुआ था । १३ खडी मडी बनाई गई, १४
गांवो के आदमी इकट्ठे हुए एवं नदी के किनारे अग्नि
संस्कार किया गया । वहा एक स्मारक बनाया तो गय
था, लेकिन सिरियारी के श्रावको की स्थिति बदल जाने
(कहा जाता है कि सिरियारी मे तेरापथी श्रावकों के जो
७०० घर थे वे प्रायः दक्षिण मे व्यापार्थ चले गये और अब
वहाँ केवल ३०-३५ घर ही रह गये हैं।) उसकी सार,सभाल
यहा तक नही हुई कि वह स्मारक कहाँ है और कौनसा है?
यह भी पता नही रहा । तेरापथ-द्विशताब्दी के अवसर पर
पुराने स्मारकों का अन्वेषणकार्य युवकवर्ग ने सभाला ।
सम्पतकुमार गधैया एव मन्नालाल बरडिया आदि सिरियारी
पहुँचे । काफी खोज की गई, किन्तु स्मारक का पता नही
लगा । जिसे लोग श्रीभिक्षुस्वामी का स्मारक मान रहे

थे, उस पर वहाँ के 'गुरासा' 'हमारे पूर्वजो का है।' ऐसा दावा करने लगे। रात को स्मारक की चर्चा करते-करते सब सो गये। प्रात उठकर वे युवक लोग शौचार्थ जङ्गल गये। चर्चा वही चल रही थी, वे नदी के किनारे एक वीरान पहाडी-ढाल पर पहुँचे और स्मारक की खोज मे हाथ-पैर मार रहे थे, इतने मे सफेद बाल, झुकी कमर और चमकीली आखोवाला एक बूढा (जगली-सा) आदमी पहाडी से उतरकर नीचे आया और पूछने लगा—'भाई! क्या ढूंढ रहे हो'?

सबने सिर झुकाकर कहा 'बाबा! स्वामी जी का स्मारक!'

बाबा—'कौनसे स्वामीजी का?'

युवक—तेरापथ के आदि गुरु 'श्रीभिक्षु स्वामी का।'

बाबा—'हाँ-हाँ, था तो सही, भाई! मैं अपने दादागुरु के साथ यहाँ अनेक बार आया करता था और दादागुरु कहते भी थे कि जिसने एक नया पथ चलाया है यह उस 'बाबे' का चबूतरा है।"

युवक—'बाबा! वह कहाँ है?'

बाबा ने अँगुली लगाकर कहा—'इस स्थान पर होना चाहिए।'

बस, सभी युवक जुट गये और लोटो से मिट्टी खोदने लगे। कुछ ही क्षणो मे एक ईट निकली और बाद मे चबूतरा भी प्रकट हो गया, जो तीन तरफ ठीक था, एक

अपने मित्रदेव के साथ आचार्य श्री
हू, मैंने कहा तू मुझे दर्शन कैसे क
आप टिकिट लेकर केवल गाडी मे
अपने आप सभाल लूगा । गुरुदे
करके गाडी मे बैठ गया, गाडी
स्वस्थ हो गया और आपके चरणो

२० श्रीभिक्षुस्वामी के स्मारक की उप

जैनश्वेताम्बर तेरापथ के आचा
स्वर्गवास वि० स० १८६० भाद्र सु
(मारवाड) मे हुआ था । १३ खडी
गांवो के आदमी इकट्ठे हुए एव
संस्कार किया गया । वहा एक र
था, लेकिन सिरियारी के श्रावको
(कहा जाता है कि सिरियारी मे
७०० घर थे वे प्राय दक्षिण मे
वहां केवल ३०-३५ घर ही रह गये
यहा तक नही हुई कि वह स्मारक
यह भी पता नही रहा । तेरापंथ
पुराने स्मारको का अन्वेषणका
सगतकुमार गधैया एवं स्थानान्त
पहुचे । काफी खोज की गई, जि
लगा । जिसे लोग श्रीभिक्षुस्वामी

जयपुर गये। वे छोटे-मोटे सभी इंजीनियरो एव सरमिर्जा से भी मिले लेकिन उत्तर यही मिला—"जो कुछ तय किया गया है, वही ठीक है।" श्रीचौपडाजी ने मुख्य-मन्त्री से निवेदन किया—कृपया, एक बार मौका तो देख लीजिये। अति आग्रहवश मुख्यमंत्री ने मौका देखना स्वीकार किया। पता लगते ही पुलिस गश्त लगाने लगी, पैमायश करनेवाले फीते लेकर स्मारक के चारो तरफ घूमने लगे थे। इजीनियर पसीना-पसीना हो रहे थे। कारण यह था कि उनका नाप ठीक नही बैठ रहा था। दूसरे सब निशान ठीक थे, लेकिन श्री जयगणी का स्मारक जिसका एक तिहाई हिस्सा सडक मे आने से 'रेडमार्क' से विभूषित था, सडक से तीन-चार फीट दूर हो गया था। सरमिर्जा के आते ही चीफ इ जीनियर ने कहा—'साहब! धरती पलट गई।' विस्मित मिर्जा साहब के हाथ जुड गये, बूट खुल गये और वे सिर झुकाकर बोले—'सचमुच वह एक महान् पुरुष था। मैं उसे अदब से सलाम करता हूँ। मिस्टर चौपडा, थैंक्स!

इस सम्बन्ध मे पुराने लोगो का कहना है कि श्री जयाचार्य के सस्कार के बाद वहाँ एक चदन का वृक्ष प्रकट हुआ, जो तीस-चालीस साल तक रहा। बाग के माली को वहाँ अनेक बार अर्धरात्रि के समय श्वेतवस्त्रधारी दिव्यपुरुष के दर्शन हुये थे। एक बार प्रत्यक्ष होकर माली से कहा भी गया था—'यहाँ गदगी न होने दी जाय।' कई लोगो

तरफ ढहा हुआ था। इधर मुड़कर देखा तो बूढा बाबा नजर नही आया था। काफी प्रयत्न करने पर भी पता नही लगा कि वह कौन था एवं कहाँ से आया था।

बस, पता लगते ही स्वर्गीय श्री बस्तीमलजी छाजेड आदि शहर के अनेक श्रावक वहाँ आ पहुँचे एव युवको को धन्यवाद देने लगे। फिर समाज ने चबूतरे पर संगमरमर का 'स्मारक-भवन' बनवा दिया, जो इस समय विद्यमान है। —बंगलोर से प्रकाशित स्मारिका के आधार पर

श्रीजयाचार्य के स्मारक का चमत्कार—

सन् १९४३ के अगस्त मास मे जब जयपुर के नक्शे का आमूलचूल परिवर्तन किया जा रहा था और नयी सडके निकाली जा रही थी, 'म्युजियम भवन' की एक सड़क के कटाव में, लूणियाजी के बाग मे विद्यमान श्री जै. श्वे. तेरापथ के चतुर्थपूज्य श्रीजयगणी का स्मारक (चबूतरा) भी आ गया। उसका एक तिहाई हिस्सा तोड़ना तय हुआ। वहां के श्रावको ने काफी प्रयत्न किया, किन्तु सफलता नही मिली। क्योंकि मुख्यमन्त्री श्री मिर्जाइस्माइल ने बडे-बडे महल, मदिर एवं मकबरे भी तुड़वा डाले थे। फिर स्मारक की तो बात ही क्या थी।

उस समय आचार्य श्रीतुलसी का चातुर्मास गंगाशहर था। यह समाचार सुनकर सेठ ईश्वरचन्दजी चोपड़ा आदि समाज के अगिया लोग परस्पर मिले। सबकी सलाह के अनुसार ३-४ साथियों सहित श्री नेमीचन्दजी चोपड़ा

जयपुर गये। वे छोटे-मोटे सभी इजीनियरो एवं सरमिर्जा से भी मिले लेकिन उत्तर यही मिला—"जो कुछ तय किया गया है, वही ठीक है।" श्रीचौपडाजी ने मुख्य-मन्त्री से निवेदन किया—कृपया, एक बार मौका तो देख लीजिये। अति आग्रहवश मुख्यमत्री ने मौका देखना स्वीकार किया। पता लगते ही पुलिस गश्त लगाने लगी, पैमायश करनेवाले फीते लेकर स्मारक के चारो तरफ घूमने लगे थे। इजीनियर पसीना-पसीना हो रहे थे। कारण यह था कि उनका नाप ठीक नही बैठ रहा था। दूसरे सब निशान ठीक थे, लेकिन श्री जयगणी का स्मारक जिसका एक तिहाई हिस्सा सडक मे आने से 'रेडमार्क' से विभूषित था, सडक से तीन-चार फीट दूर हो गया था। सरमिर्जा के आते ही चीफ इ जीनियर ने कहा—'साहब! धरती पलट गई।' विस्मित मिर्जा साहब के हाथ जुड गये, बूट खुल गये और वे सिर झुकाकर बोले—'सचमुच वह एक महान् पुरुष था। मैं उसे अदब से सलाम करता हूँ। मिस्टर चौपडा, थैक्स!

इस सम्बन्ध में पुराने लोगो का कहना है कि श्री जयाचार्य के सस्कार के बाद वहाँ एक चदन का वृक्ष प्रकट हुआ, जो तीस-चालीस साल तक रहा। बाग के माली को वहाँ अनेक वार अर्धरात्रि के समय श्वेतवस्त्रधारी दिव्यपुरुष के दर्शन हुये थे। एक वार प्रत्यक्ष होकर माली से कहा भी गया था—'यहाँ गदगी न होने दी जाय।' कई लोगो

ने वहाँ प्रकाश-पुंज भी देखा था। आज भी अंधेरे-अंधेरे न जाने कौन वहाँ अर्चन करने आता है। अस्तु !

श्री जयाचार्य का स्वर्गवास वि सं. १९३८ भाद्रवदी १२ को हुआ था एवं अन्त्येष्टि-जुलूस राजकीय सम्मान के साथ अजमेरी गेट से निकाला गया था। उक्त स्मारक पहले चूने का था, अब संगमर्मर का है एव उसके ऊपर एक छोटी-सी छतरी भी बनादी गई है।

चौथा कोष्ठक

तिर्यञ्च संसार

१

१ नारक, मनुष्य और देवो को छोडकर सब सासारिक जीव-जन्तु तिर्यञ्च कहे जाते है।

तिर्यञ्च पांच प्रकार के होते है--१ एकेन्द्रिय, २ द्वीन्द्रिय, ३ त्रीन्द्रिय, ४ चतुरिन्द्रिय, ५ पञ्चेन्द्रिय।

एकेन्द्रिय तिर्यञ्च पांच प्रकार के होते है—पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेजस्काय, ४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय।

पचेन्द्रिय तिर्यञ्च दो प्रकार के है-सम्मूर्च्छिम और गर्भज। दोनो ही मुख्यतया तीन-तीन प्रकार के है-जलचर, स्थलचर और खेचर।

—लोकप्रकाशपुञ्ज ३

२. चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्म पगरेंति, त जहा—माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेण कूडतुलकूडमाणेणं।

—स्थानाङ्ग ४।४।३७३

चार कारणों से जीव तिर्यञ्चयोनि के योग्य कर्म बांधते है—१ माया-छल से, २ गूढ माया से, ३ असत्य बोलने से, ४ झूठा तोल-माप करने से।

५. **अद्भुत तरबूज**—ताजिकिस्तान के तरबूज उत्पादक, ५५ किलोग्राम वजन तक के तरबूजो को पैदा करने मे सफल हो गए हैं। [विशेषज्ञो के मतानुसार तरबूजो का वजन सामान्यत १६ किलोग्राम तक ही होता है और उनमे ११ प्रतिशत मिठास होती है] ऐसे तरबूज 'दुशानवे' मे आयोजित एक प्रदर्शनी में रखे गए हैं, इनमे मिठास की मात्रा भी २० प्रतिशत है।

—हिंदुस्तान, ६ सितम्बर, १९७१

२ आश्चर्यकारी तिर्यञ्च

१ (क) **गाय**–अमेरिका मे एक गाय का १६० रत्तल दूध था एव साड की कीमत ४।। लाख रुपए थी।

(ख) बाव (गुजरात) के पास एक गॉव मे ६ महीनो की पाडी दूध देती थी।

(ग) एक गाय के पीठ पर भी चार स्तन थे, जिनसे दूध की धारा निकलती थी। —संकलित

२ **घोड़े**–उदयपुर महाराणा के यहाँ कई ऐसे घोडे थे, जो एकादशी के दिन उपवास करते थे एव 'ग्यारसिया' नाम से सम्बोधित किए जाते थे। ग्यारस के दिन यदि उनके सामने कभी दाना रख दिया जाता तो वे अपना मुह मोड लेते। —सतो ने आँखो से देखा

३ **हाथी**–

(क) हाथी की सूड मे चार हजार माँसपेशियाँ होती हैं। उसका दिमाग मनुष्य के दिमाग से चारगुना तथा शरीर लगभग ५ टन का होता है। प्रतिदिन का भोजन ५० किलो पानी और ७० किलो घास-पात, पेड़ो की हरी पत्तिया आदि है।

—सर्जना तथा विश्वकोष भाग २ के आधार से

(ख) कनाडा में भारत से लाया गया एक ऐसा हाथी था जो पैरो मे जूते पहने बिना बाहर नही निकलता था ।

—सरिता, सितम्बर, द्वितीय, १९७१

(ग) संसार का विशालकाय हाथी—

कन्धे के पास से ऊंचाई १२ फुट नौ इंच थी, चमडी (खाल) का वजन दो टन था । इस विशालकाय हाथी को अफ्रीका के जंगलो मे हंगरी के एक शिकारी ने सन् १९५५ मे मारा था । हाथी का अस्थिपजर 'स्मिथ सोनिएल इन्स्टीट्यूट की नेचरल हिस्ट्री कालेज' मे रखा गया है ।

—कादम्बिनी, दिसम्बर १९६४

(घ) प्रतापगढ (उ० प्र०) जिले का एक पालतू हाथी एक बार क्रोधित होकर अपने चालक (पीलवान) को पैरो तले दाब कर सूंड से चीर डाला । दुखित पत्नी विकल होकर अपने इकलौते पुत्र को क्रुद्ध हाथी के आगे फेंक दिया । मदोन्मत हाथी ने उस बच्चे को सूंड से उठाकर पीठ पर बैठा लिया । कहते है कि तबसे वही बच्चा उस हाथी का चालक (पीलवान) बन गया । उसकी अनुपस्थिति मे हाथी पागलो की भाति हाथ-पैर पटकता, चिग्घाडता । वह यावज्जीवन उस लडके के इशारे पर चलता रहा ।

* इसी जिले मे एक बारात मे गये हुये हाथी के चालक से बरातियो द्वारा लेन-देन के मामले में विवाद हो उठने से हाथी मदोन्मत होकर सारे बरातियो पर टूट पडा । कुछ

मरे, कुछ घायल हुये वहुत सारा सामान नष्ट-भ्रष्ट हो गया। अन्त मे एक व्यक्ति ने उस हाथी को गोली से मार कर शान्ति स्थापित की।

—गोंडा निवासी श्री हनुमानबख्शसिंह से प्राप्त

४. **धर्मिष्ठ कुत्ते –**

(क) दुर्गापुर मे एक वृद्ध कुत्ता एकादशी के दिन कुछ नही खाता-पीता और सोलह दण्ड-उपवास करता है। पारणे के दिन मांस नही खाता।

(ख) गोहाटी के एक सरकारी अधिकारी का **भोलू** नामक कुत्ता अमावस्या-पूर्णिमा एव एकादशी—ऐसे महीने मे तीन उपवास करता है। उपवास के दिन भूलकर कोई उसे रोटी दे दे तो भी वह नही खाता।

(ग) बस्तर के पास भैरवीमन्दिर मे आरती के समय एक कुत्ता हर रोज आता है एव एक घण्टा तक आंखे बन्दकर प्रतिमा के सामने खडा रहता है, फिर सात वार परिक्रमा देता है। यह सब कर लेने के बाद ही वह कुछ खाता-पीता है।

(घ) आर्यविद्वान् शास्त्रार्थमहारथी पण्डित विहारीलाल शास्त्री की दादी का कुत्ता मंगलवार को व्रत रखता था।

(ङ) देहरादून के तपोवन-आश्रम में ठाकुर रामसिंहजी का कुत्ता एकादशी का व्रत करता है, उस दिन रोटी डालने पर पीछे हट जाता है और बाध्य करने पर मुह मे रोटी लेकर वृक्ष के नीचे छिपा आता है एवं

दूसरे दिन निकालकर खा लेता है।

—नवभारतटाइम्स, २५ अप्रेल, १९६५

चोरी डकैती का पता लगानेवाले कुत्ते–

(च) पुलिस डिपार्टमेंट मे कई ऐसे कुत्ते होते है, जो चोरो-डाकुओ या चुराए हुए धन को खोज निकालते हैं।

खगडिया (बिहार) मे रात के समय नौकर से मिलकर कई गुण्डो ने एक सेठ को कत्ल कर दिया। उसका सारा धन (लाख सवा लाख का) लेकर वे तीन मील दूर जगल मे गए और वहाँ खड्ढा खोदकर उसे दाट दिया। फिर तत्काल उस पर एक ईंटो का खम्भा चिनकर वे कही भाग गये। सुबह पुलिसथाने मे खबर दी गई। पुलिस के साथ दो कुत्ते आए। उन्होने कत्ल किए हुए सेठ को सूघा। फिर शहर मे और आस-पास के जगल मे खूब चक्कर लगाए। दूसरे दिन एक कुत्ता वही पहुँच गया ओर चिने हुये खभे को सूघ कर उस पर पजे मारने लगा। पुलिस ने खभे को हटाया तो उसके नीचे सारा धन मिल गया।

—संचियालालजी नाहटा से श्रुत

(छ) **गिल्डा कुत्ता–**

अमरीका मे आगाखा की भूतपूर्व पुत्रवधू एव 'प्रिंस अलीखा' की भूतपूर्व पत्नी विश्व की विख्यातसुन्दरी अभिनेत्री 'रिताहेनर्थ' का कुत्ता 'गिल्डा' है। उसकी खाने की मेज ५ हजार की है। बैठने का सोफा १२

हजार का है, बिस्तर-पलग लाख-डेढ लाख के है तथा वस्त्र एव साज-शृगार ४० हजार से ३ लाख तक है। गिल्डा दिन मे सात बार कपडे बदलता है। विश्व-सौन्दर्य प्रतियोगिता मे सर्वप्रथम आने से स्वामिनी ने बृहत् प्रीति-भोज दिया। ४५० मेहमान आए, सभी गिल्डा को चूमना चाहते थे। २०० से एक हजार तक चुम्बनशुल्क रखा गया था लेकिन होड लगने लगी। आखिर पैरिस की कुमारी "निवाला" ने ५० हजार देकर सर्वप्रथम चुम्बन किया। गेबी (कुतिया) से गिल्डा का विवाह हुआ, पाँच लाख रुपए लगे। उससे होनेवाली प्रथम सतान का मूल्य ३ लाख तक चढ गया। गिल्डा सवेरे टोस्ट के साथ चाय पीता है। बारह बजे नहाकर भोजन करता है, तीसरे प्रहर एक गिलास अगूर का रस पीता है और रात को ६ बजे फिर खाना खाता है। भोजन के समय गिल्डा रेडियो सुनता है एव गाने का बहुत रसिक है।

—नवनीत, सितम्बर १९५३ से

५ बन्दर—

(क) बुवानीखेडा मे बदरो को मारने के लिये विष मिलाकर खीर का कुण्डा एक छत पर रख दिया गया, बदर सूघ-सूघ कर चले गये। एक बंदर जगल से एक लकडी लाकर उसमे खीर को हिलाने

लगा। हिलाता गया और सूंघता गया। आखिर सब मिलकर उस खीर को खा गये। (लकडी मे विष नष्ट करने की शक्ति थी)

(ख) इन्दौर मे बदर के बच्चे को साँप ने काट खाया। अनेक बदर इकट्ठे हुए, एक बूढे बदर ने गेंदे (फूल) की जड़ लाकर बच्चे के मुह मे उसका रस डाला एव बच्चा जी गया। —इन्दौर मे वैद्यजी से श्रुत

(ग) वुवानीखेडा में छोटे बच्चे को एक बंदरिया उठाकर ले गई। और रोटी देने पर वह बच्चे को धीरे से छत पर छोडकर चली गई। —वुवानीखेडा में श्रुत

५. **नेवलों का चमत्कार—**

(क) भद्रपुर (नेपाल) से लगभग दस मील दूर संदरी गाव का एक राजवशी-किसान कहता है कि नेवले साँप को टुकडे-टुकडे करके उसमें से खाने का द्रव्य खा लेते हैं, फिर शेष टुकडो को बराबर रख कर जगल से कोई जडी-बूटी लाते हैं और खण्ड-खण्ड हुए साप के शरीर पर उसे लगाकर साप को जीवित कर देते हैं। यह बात बिल्कुल असम्भव सी लगती है। परन्तु उस किसान का कथन है कि मैंने अनेक बार यह खेल अपनी आँखो से देखा है।

(ख) सुनने में आया है कि जब साप और नेवले की लडाई होती है, उस समय साप उसके शरीर पर काफी जोर

से डक मारता है लेकिन जडी के प्रभाव से वह पुन सज्जित होकर आ भिडता है और अन्त मे उसे मार डालता है। (नेवले के पास एक जडी होती है जिसे छूते ही साप का जहर उतर जाता है एव घाव मिट जाता है।)

६ **साँप**–

(क) मेरठ मे वदन पर वालवाला एक साप था। वह सात फुट तीन इंच लम्बा एव पाच फट मोटा था। जहरीला इतना था कि डक मारते ही मनुष्य के कपडे जल गए एव उसके शरीर के दो टुकडे हो गए।

—हिन्दुस्तान, २५ सितम्बर, १९५२

(ख) अफ्रीका मे ५० फुट लम्बे साप पाये जाते है। जावा के निकटवर्ती द्वीप मे उडनेवाले भी साप पाये जाते है।

—हिन्दुस्तान, २२ मार्च, १९७१

(ग) सर्पिणी की समझदारी—भद्रपुर (नेपाल) से ४-५ मील दूर रामगढ गाव के निकट एक खेत मे सर्पिणी के बच्चे पडे थे। उस खेतवाले को दया आई एवं एक कुंडे मे डाल उन्हे खेत की खाई मे रख दिया। पीछे से सर्पिणी आई और अपने बच्चो को न देखकर व्याकुल हुई। खेत मे इधर-उधर काफी दौड-धूप की लेकिन बच्चे न मिले। उसे बहुत ज्यादा प्यास लगी! खेत मे पडे हुए घडे मे से पानी पीया और जाते समय उसमे जहर डाल गई। फिर अपने बच्चो की खोज करती हुई वह खाई मे पहुची। बच्चे मिले, उन्हे लेकर वह उस पानी के

घडे के पास आई और अपनी पूँछ के प्रहार से उसे औधा कर दिया। सभवत मतलब यह था कि उसका पानी पीकर कोई मर न जाये।

—भंवरलाल चंडालिया से श्रुत

(घ) **सांपो का हमला**—बगदाद, १६ मई (राय) कुर्दीपत्र 'अलताखी' के एक समाचार के अनुसार उत्तरी इराक के एक गाव कुर्दी जाल के निवासियो पर पिछले दिनो लगभग २०० पीले सापो ने अचानक हमला किया। गाँववालो ने छडा और नंगी तलवारो से उनका सामना करके उनमे से ६५ को मार डाला। शेष भाग गए।

—हिन्दुस्तान, १८ मई, १९७१

७. चूहे—

(क) विश्व स्वास्थ्य-सगठन के विशेषज्ञो के मतानुसार चूहे-चुहिया के एक जोडे से पैदा हुई सन्तानो से तीन वर्षों में ३५ करोड चूहे हो सकते हैं। लेकिन सौभाग्य की बात है कि ऐसा होता नही। चूहा-चुहिया का एक जोडा प्रति वर्ष ७० बच्चे पैदा कर सकता है। अगर वे सभी जीवित रह जाएँ तो उनसे तीन वर्षों में ३५ करोड चूहे हो जाए।

—हिन्दुस्तान, १९ जनवरी, १९६८

(ख) बम्बई मे ऐसे चूहे देखने मे आए, जिनसे डर कर बिल्लियाँ भी भाग जाती है।

—धनमुनि

८. मेढक—

(क) महेन्द्रगज में एक बडा मेढक १८ इञ्च लम्बे साप के साथ लडा एव उसे मार कर निगल गया।

—बम्बई समाचार, २७ सितम्बर १९५०

(ख) दक्षिणी अमेरिका में एक प्रकार का मेढक पाच फुट लम्बे साप को खा जाता है।

—कादम्बिनी, मई, १९६४

९. जलजन्तु—

(क) देवमासा मछली तीन दिन मे ८०० माइल तैरती हैं।

—बम्बईसमाचार, २१ अगस्त १९५०

(ख) ह्वेल मछली १४० फुट लम्बी और १४० टन भारी होती है। उसके मुंह मे २४ हजार दाँत होते हैं। तीन-तीन सौ दातो की ८० कतारें होती हैं।

—नवभारत टाइम्स, २८ मार्च, १९५१

(ग) अमरीका का समुद्री घोघा प्रति वर्ष ४० करोड अण्डे देता है। कुछ सीपियाँ और खर हैं, जो प्रतिदिन ४१ हजार एवं एक वर्ष मे १४४ करोड अण्डे देते हैं।

—कादम्बिनी, मई, १९६४

१०. कई अन्य पशु-पक्षी—

(क) पशुओ मे चीता ७० मील प्रतिघटा दौड सकता है, किन्तु अधिक लम्बा नही दौड सकता।

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, ३१ अक्टूबर १९७१

(ख) शतुर्मुर्ग की गति प्रति घटा २६ मील तक है। उसकी छोटी से छोटी पाख की कीमत ३०-४० रुपये है।

(ग) कबूतर ६० मील और चिडिया कोई-कोई ३०० मील प्रतिघटा उड सकती है।

—नवभारतटाइम्स, २८ मार्च, १९५१

(घ) लंदन के अजायबघर मे सुमात्रा से एक अद्भुत छिपकली लायी गयी थी, वह १५ फुट लम्बी थी और उसकी जीभ १५ इंच लम्बी थी।

☸

३ दृश्यमान विश्व में पशु-पक्षी

विश्व के पशुओ को दो वर्गो मे रख सकते है—प्रथम वर्ग मे पशु जो मनुष्य के भोजन के साधन हैं, जैसे–गाय, भैस, भेड, बकरी, सुअर और मुर्गी आदि। द्वितीय वर्ग मे पशु जो बोझा ढोने अथवा सवारी के काम आते हैं, जैसे-घोडे, गधे, खच्चर, बैल, ऊँट, याक आदि। प्रो० मामोरिया के अनुसार पृथ्वी पर ३५०० प्रकार के पशुओ में से केवल १७ पशु, १३००० प्रकार की चिडियो मे से केवल ५ चिडियाँ और ४,७०,००० कीडो मे से केवल दो प्रकार के कीडे पालतू बनाये गये है। नीचे की तालिका मे विश्व के कतिपय पालतू पशु-पक्षियो की सख्या देखिये —

पशु	संख्या	पशु-पक्षी	सख्या
भेड	६८ करोड	ऊँट	६० लाख
गाय-बैल	७१ ,,	रेनडियर (बारहसीगा)	२० लाख
सुअर	२६ ,,	लामा आदि	२० लाख
बकरी	११ ,,	मुर्गियाँ	१ अरब ६० करोड़
घोडे	६ ,,	बतखें	११ करोड़
गधे	१.५ ,,	हस	७ करोड ३० लाख
खच्चर	१५ ,,	टर्की	२ करोड़ ३० लाख

४ मनुष्य-संसार

मनुष्य–

१. मत्वा-हिताहित ज्ञात्वा कार्याणि सीव्यन्तीति मनुष्या ।

अपने हित-अहित को समझकर काम करते हैं, इसलिए मनुष्यो का नाम मनुष्य है ।

२. यो वै भूमा तदमृत, अथ यदल्पं तद् मर्त्यम् ।

—छादोग्योपनिषद्, ७।२४

जो महान् है, वह अमृत है—शाश्वत है और जो लघु है, वह मर्त्य है—विनाशशील है (मर्त्य नाम मनुष्य का है) ।

३. पात्रे त्यागी गुणे रागी, भोगी परिजनै सह ।
शास्त्रे बोद्धा रणे योद्धा, पुरुष· पञ्च लक्षण ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १४८

(१) पात्र को देनेवाला, (२) गुणो का अनुरागी, (३) परिजनो के साथ वस्तु का उपभोग करनेवाला, (४) शास्त्रज्ञ, (५) युद्ध करने मे वीर । पुरुष के ये पांच लक्षण हैं ।

४. मनुष्य का मापदण्ड उसकी सम्पदा नही, अपितु उसकी बुद्धिमत्ता है । —टी एल. वास्वानी

५. हर आदमी की कीमत उतनी ही है, जितनी उन चीजो की है, जिनमें वह सलग्न है । —आरिलियस

६. अगर तू अपनी कीमत आँकना चाहता है तो धन-जायदाद-पदवियो को अलग रखकर अतरग जाँच करले ! —सेनेका

७ आदमी की कीमत का अदाज इससे लगता है कि खुद अपनी नजर में उसकी क्या कीमत है।

८ मनुष्य समाज से तिरस्कृत होने पर दार्शनिक, शासन से प्रताडित होने पर विद्रोही, परिवार से उपेक्षित होने पर महात्मा और नारी से अनादृत होने पर देवता बनता है। —महर्षिरमण

९. मनुष्य जो कुछ खाते हैं उससे नही, किन्तु जो कुछ पचा सकते है, उससे बलवान बनते हैं। धन का अर्जन करते है, उससे नही, जो कुछ बचा सकते है, उससे धनवान बनते हैं। पढते हैं उससे नही, जो कुछ याद रखते है, उससे विद्वान् होते हैं। उपदेश देते हैं उससे नही, जो आचरण मे लाते है, उससे धर्मवान बनते हैं—ये बड़े परन्तु साधारण सत्य हैं। इन्हे अतिभोजी, अतिव्ययी, पुस्तक के कीट और पाखडी लोग भूल जाते हैं। —लार्ड बेकन

१० यो न निर्गत्य नि शेषा-मालोकयति मेदनीम्।
अनेकाश्चर्यसम्पूर्णां स नर कूपदर्दुर ॥
—चंदचरित्र, पृ ८६

जो घर से निकलकर अनेकआश्चर्यपूर्ण पृथ्वी का अवलोकन नही करता, वह कुए का मेढक है।

११ अगनि उघाडी ना खटै, जल फूट्या बिगडत।
नारी भटक्यॉ बीगड़ै, नर भटक्याँ सुधरत ॥

१२. आदमी-आदमी में अन्तर, कोई हीरा कोई कंकर।

—हिन्दी कहावत

१३. मिनख रो काम मिनख सू सौवार पड़े।

—राजस्थानी कहावत

१४. मानवजाति दो बातो से नष्ट हुई है —
विलासिता से और द्वेष से

—शेक्सपियर

१५. **गणित की अपेक्षा से मनुष्यों के चार आश्रमो का रहस्य–**

(१) ब्रह्मचर्याश्रम जोड (+) है—इसमें वीर्य-विद्या-कला कौशल आदि इकट्ठे किये किए जाते हैं।

(२) गृहस्थाश्रम बाकी (−) है—इसमे सगृहीत वस्तु का खर्च होता है।

(३) वानप्रस्थाश्रम गुणाकार (×) है—इसमे हर प्रकार से गुणो की वृद्धि की जाती है।

(४) सन्यास-आश्रम भागाकार (÷) के तुल्य है—इसमें प्राप्त किये हुये तप-जप-ज्ञान-ध्यान आदि बाटे जाते हैं। अर्थात् उनका लोगो मे प्रचार किया जाता है। —सकलित

५ मनुष्य का स्वभाव

१ पुलुकामो हि मर्त्य । —ऋग्वेद १।१७९।५

मनुष्य स्वभाव मे ही बहुत कामनावाला होता है।

२ उत्सवप्रिया हि मनुष्या । —अभिज्ञान शाकुंतल

मनुष्य नित्य नये आनन्द के प्रेमी हुआ करते है।

३ (क) मनुष्या स्खलनशीला । —सस्कृत कहावत

(ख) टू ईरर इज ह्यू मन । —अग्रेजी कहावत

मनुष्य भूल करने की आदतवाले होते हैं।

४. पुढो छदा इह माणवा । —आचाराग ५।२

ससार मे मानव भिन्न-भिन्न विचारवाले होते हैं।

५ अणेगचित्ते खलु अय पुरिसे ।
मे केयण अरिहए पूरिण्णए ॥ —आचारांग ३।२

यह मनुष्य अनेक चित्त है, अर्थात् अनेकानेक कामनाओ के कारण मनुष्य का मन बिखरा हुआ रहता है। वह अपनी कामनाओ की पूर्ति क्या करना चाहता है, एक तरह छलनी को जल से भरना चाहता है।

६ पकने पर कड़ुआ होनेवाला एक फल है—'मनुष्य'।

७ मनुष्य अपनी श्रेष्ठता को आतरिकरूप से प्रकट करते हैं और पशुता को बाह्यरूप से। —रूसी कहावत

८. सिर्फ आदमी ही रोता हुआ जन्मता है, शिकायत करता हुआ जीता है और निराश होकर मर जाता है।

—सर वाल्टर टेम्पल

९. अनार्यता निष्ठुरता, क्रूरता निष्क्रियात्मता।
पुरुष व्यञ्जयन्तीह, लोके कलुषयोनिजम् ॥

—मनुस्मृति १०।५८

अनार्यता, निष्ठुरता, क्रूरता और निष्क्रियात्मता-आलसीपन–ये कार्य मनुष्य को नीचयोनि से उत्पन्न है—ऐसे प्रकट करनेवाले हैं।

११. नदी बहना नही छोडती, समुद्र मर्यादा नही छोडता, चाँद-सूर्य प्रकाश देना नही छोडते, वृक्ष फलना-फूलना नही छोडते, फूल सुगन्धि नही छोडता, तो फिर मनुष्य अपना स्वभाव-गुण क्यो छोडता है ?

१२. आदमी की शक्ल से अब डर रहा है आदमी,
आदमी को लूट कर घर भर रहा है आदमी।
आदमी ही मारता है, मर रहा है आदमी,
समझ कुछ आता नही, क्या कर रहा है आदमी ?
आदमी अब जानवर की, सरल परिभाषा बना है,
भस्म करने विश्व को, वह आज दुर्वासा बना है।
क्या जरूरत राक्षसो की, चूसने इन्सान को जब,
आदमी ही आदमी के, खून का प्यासा बना है।

—खुले आकाश में

मनुष्य का कर्तव्य

१. पुमान् पुमांस परिपातु विश्वत'। —ऋग्वेद ६।७५।१४

एक दूसरे की रक्षा-सहायता करना मनुष्य का पहला कर्तव्य है।

२. आनृशस्य परोधर्म । —वाल्मीकिरामायण ५।३८।३६

मानवता का समादर करना मनुष्य का परमधर्म है।

३. अगरबत्ती की तरह जलकर भी दूसरो को सुगन्धित करना मनुष्य का कर्तव्य है।

४ यओज्दो मश्याइ अइपी जॉथम् वहिश्ता। –यस्न हा ४८।५

मनुष्य के लिए यह सबसे अच्छा है कि वह जन्म से ही पवित्र रहे।

५ मनुष्य के तीन मुख्य कर्तव्य हैं—

(१) दुश्मन को दोस्त बनाना,

(२) दुष्ट को सदाचारी बनाना,

(३) अशिक्षित को शिक्षित बनाना।

–शयस्त ला शयस्त २०।६ (पारसी धर्मग्रन्थ)

६ किं दुर्लभ ? नृ जन्म, प्राप्येदभवति किं च कर्तव्यम् ?
आत्महितम हितसग-त्यागो रागश्च गुरुवचने ॥

दुर्लभ क्या है ? मनुष्य-जन्म। इसे पाकर क्या करना चाहिए ? आत्मा का हित, कुसग का त्याग और सद्गुरु की वाणी मे प्रेम।

७ मनुष्य के लिए शिक्षाएँ

१. मनुष्य आकृति से जन है, उसे सज्जन या महाजन बनने की कोशिश करनी चाहिए, किन्तु दुर्जन बनने की कभी नही। उसे ऊपर चढते रहना चाहिए, वरना नीचे गिर जाएगा।

२. हर एक आदमी भक्षक है, उसे उत्पादक होना चाहिए।

—एमर्सन

३. तीन कारणो से मनुष्य दूसरे के पास जाता है—सहायता देने, सहायता लेने और कुछ सीखने। यदि सहायता देने गया हो तो ऐसा न हो कि उसका बोझा बढ जाए। यदि सहायता लेने गया हो तो बाप बनकर नही ले सकता। यदि कुछ सीखने गया हो तो सुने-विचारे, लेकिन ऐसा न हो कि उल्टा सिखाने लगे।

४. विद्वांश्चेत् पठनोद्यतान् सरलया रीत्या मुदा पाठय,
शिल्पी चेदुचितांश्च शिक्षय कला निष्कामवृत्त्याखिला'।
वक्ता चेदसि दर्शय प्रवचनै सन्नीतिमार्ग सदा,
वैद्यश्चेत् कुरु रोगनाशनकृते तेषा व्यवस्था शुभाम्।

रे मनुष्य! यदि तू विद्वान् है तो पढने के इच्छुक व्यक्तियो को सरल

रीति से पढा, यदि शिल्पी हैं तो नि स्वार्थभाव मे दूसरो को सत्-कलाओ की शिक्षा दे, यदि वक्ता है तो अपने प्रवचनो द्वारा नीति-मार्ग का प्रदर्शन कर और यदि वैद्य है तो दुनियाँ मे रोग-नाश की शुभ व्यवस्था कर ।

८ मनुष्य का महत्त्व

१. गुह्य ब्रह्म तदिद वो ब्रवीमि,
न मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किंचित् ॥
—महाभारत शान्तिपर्व २९९।२०

तुम लोगो को मैं एक बहुत गुप्त बात बता रहा हूँ, सुनो ! मनुष्य से बढकर और कुछ भी श्रेष्ठ नही है ।

२. पुरुषो वै प्रजापते ने दिष्टम् । —शतपथब्राह्मण २।५।१।१

सब प्राणियो मे मनुष्य सृष्टिकर्ता परमेश्वर के अत्यन्त समीप है ।

३. बुद्धिमत्सु नरा श्रेष्ठा । —मनुस्मृति १।९६
बुद्धिमानो मे मनुष्य सबसे श्रेष्ठ है ।

४. नरो वै देवाना ग्राम. ।
—तैत्तिरीय ताराड्यमहाब्राह्मण ६।९।२

मनुष्य देवो का ग्राम है अर्थात् निवासस्थान है ।

५ मुसलमानो के 'हदीसा' मे अल्ला ने फरिश्तो से कहा है कि तुम इन्सान की सेवा करो ।

६ गधे, घोडे, गाय, भैंस आदि पशु नही समझते कि यह राजमहल है या ठाकुर जी का मन्दिर है अथवा जौहरीबाजार है, यहाँ मल-मूत्र का त्याग नही किया जाता जबकि

साधारण से साधारण मनुष्य भी इस बात को समझता है। क्योंकि मनुष्य मे विवेक है।

७ राष्ट्र की सम्पत्ति तो मनुष्य है, रेशम, कपास, स्वर्ण नही।
–रिचार्ड हॉर्वे

८ यदि तुम पढना जानते हो तो प्रत्येक मनुष्य स्वय एक पूर्ण-ग्रन्थ है। –चेनिग

९. संसार को स्वाद बनानेवाला एक नमक है—मनुष्य।

१० मिनखा माया, बिरखा छाया।

११. आदमी री दवा आदमी, आदमी रा शैतान आदमी।
–राजस्थानी कहावतें

१२. **मानवीय मस्तिष्क**–

सुनार की पेटी मे विराजमान चादी का प्याला बोला—
"बस! मैं तो मैं ही हूँ!"

स्वर्णपात्र–चुप! मेरे सामने तेरा अभिमान झूठा है।

हीरा–क्या मेरा तेज नही देखा, जो घमंड करता है?

पेटी–तुम सारे, क्यो मैं-मैं कर रहे हो, आखिर रक्षिका तो मैं ही हूँ।

ताला–चुप रह, वाचाल! मेरे विना तेरे मे क्या है?

चाबी–तू तो मेरे इशारे पर नाचनेवाला है क्यो गरज रहा है?

हाथ–पगली! मेरे विना तो तू हिल भी नही सकती है!

सुनार बोला–अरे भाई ! यह सब मानवीय मस्तिष्क का प्रभाव है अतः बडा तो मानव ही है ।

१३ मनुष्य के पीछे संसार–

कागज पर एक तरफ ससार का चित्र था और दूसरी तरफ मनुष्य का । पिता ने फाडकर उसके टुकडे-टुकडे कर दिए । फिर अपने छोटे पुत्र से उसे जोडने के लिए कहा । बच्चे ने ससार का चित्र जोडने का काफी यत्न किया, किन्तु जुड नही सका । तब दूसरी तरफ मनुष्य का चित्र देखा । ज्योंही उसे जोडा, ससार भी जुडगया । वास्तव मे ससार मनुष्य के पीछे ही है ।

१४ मनुष्य से विधाता भी चकित–

कहते हैं कि भाग्यफल सुनाकर विधाता ब्रह्मलोक से ३२ मनुष्य, मनुष्य-लोक मे भेज चुके थे । तैंतीसवें का भाग्यफल इस प्रकार सुनाया जा रहा था—यह धनी-खानदान में जन्म लेकर सब तरह से सुखी होगा । पन्द्रह वर्ष की आयु मे दुर्घटना-वश गूगा बहरा होगा, माँ बाप मर जायंगे, धन नष्ट हो जायगा, फिर भिखारी के रूप में भटकता-भटकता अधा एव कोढी भी बन जायगा, ऐसे पूरे सौ वर्ष तक दु खमय जीवन व्यतीत करेगा । बीच ही मे मनुष्य बोल उठा—क्या सौ वर्ष ? बस, इतना कहने के साथ ही वह चीखता हुआ गिर पडा और मरगया ।

भाग्यफल सुनते-सुनते मरने का यह पहला ही अवसर था। विधाता देखते ही रहगये एव उस दिन के बाद भाग्यफल सुनाना बद कर दिया। फिर भी मनुष्य ज्योतिषियो द्वारा उसे सुनने लगा और विधाता के लेख को बदलने का प्रयत्न करने लगा।

—जाह्नवी, जनवरी ६८ से

९ मनुष्य की दस अवस्थाएँ

१. वाससयाउयस्स ण पुरिसस्स दस दसाओ पण्णत्ता, त जहा–
बालाकिड्डा य मदाय, बला पन्ना य हायणी ।
पवंचा पब्भारा य, मुम्मुही सायणी तहा ।

—स्थानांग१०।७७२

सौ वर्ष की आयु की अपेक्षा से मनुष्य की दस अवस्थाएँ कही हैं —(१) बाला (२) क्रीडा (३) मदा (४) बला (५) प्रज्ञा (६) हायनी (७) प्रपंचा (८) प्रागभारा (९) मुम्मुही (१०) शायिनी ।

(१) बाला— उत्पन्न होने से लेकर दस वर्ष तक का प्राणी बाल कहलाता है । उसको सुख-दुःखादि का विशेष ज्ञान नही होता । अतः यह बाल-अवस्था कहलाती है ।

(२) क्रीडा—इस अवस्था को प्राप्त होकर प्राणी अनेक प्रकार की क्रीडा करता है, किन्तु काम-भोगादि विषयो की तरफ उसकी तीव्र बुद्धि नही होती ।

(३) मन्दा—इस अवस्था को प्राप्त होकर पुरुष अपने घर मे विद्यमान भोगोपभोग—सामग्री को भोगने मे समर्थ होता है, किन्तु नये भोगादि का अर्जन करने मे मन्द यानी असमर्थ रहता है । इसलिये इस अवस्था को मदा कहते हैं ।

(४) बला—तंदुरुस्त पुरुष इस अवस्था को प्राप्त होकर अपना बल (पुरुषार्थ) दिखाने मे समर्थ होता है । इसलिए पुरुष की यह अवस्था बला कहलाती है ।

(५) **प्रज्ञा**—प्रज्ञा बुद्धि को कहते हैं। इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष मे अपने इच्छितार्थ को सम्पादन करने की तथा अपने कुटुम्व की वृद्धि करने की बुद्धि उत्पन्न होती है।

६) **हायनी**—इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष की इन्द्रियाँ अपने-विषय को ग्रहण करने मे किंचित हीनता को प्राप्त हो जाती है।

(७) **प्रपञ्चा**—इस अवस्था मे पुरुष की आरोग्यता गिर जाती है और उसे खासी आदि अनेक रोग घेर लेते हैं।

(८) **प्राग्भारा**—इस अवस्था मे पुरुष का शरीर कुछ झुक जाता है। इन्द्रिया शिथिल पड जाती हैं। स्त्रियो को अप्रिय हो जाता है और बुढापा आकर घेर लेता है।

(९) **मुम्मुही**—जरारूपी राक्षसी से समाक्रान्त पुरुष इस नवमी दशा को प्राप्त होकर अपने जीवन के प्रति भी उदासीन हो जाता है और निरन्तर मृत्यु की आकाक्षा करता है।

(१०) **शायनी**—इस दसवी अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष अधिक निद्रालु वन जाता है। उसकी आवाज हीन, दीन और विकृत हो जाती है।

(यहाँ सौ वर्ष के मनुष्य की दस अवस्थाएँ कही गई हैं। यदि अधिक आयु हो तो उसके हिसाव से दस भाग कर लेने चाहिए।)

२ दसा डावडो, वीसा बावलो, तीसा तीखो, चालीसा फीको' पच्चासा पाको, साठा थाको, सत्तर सडियो, अस्सी गलियो, नव्वे नागो, सोवा भागो। —राजस्थानी कहावत

३ चालीस वर्ष की अवस्था जवानी का वुढापा है और पचास वर्ष की अवस्था वुढापे की जवानी। —आरिन औं मेले

१० मनुष्य के प्रकार

१. मणुस्सा दुविहा पन्नत्ता तं जहा-समुच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतिय मणुस्सा य। —प्रज्ञापना सूत्र १

मनुष्य दो प्रकार के कहे हैं—समूर्च्छिम और गर्भज। माता के गर्भ से पैदा होनेवाले गर्भजमनुष्य कहलाते हैं और उनके मल-मूत्र से उत्पन्न होनेवाले समूर्च्छिममनुष्य कहलाते हैं।

२. गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा, पन्नता, त जहा-कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अतरदीवगा। —प्रज्ञापना सूत्र १

गर्भजमनुष्य तीन प्रकार के कहे हैं—कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज और अन्तर्द्वीपज।

३ ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, त जहा—आरियाय मिलक्खुय।
—प्रज्ञापना सूत्र १

कर्मभूमिज-मनुष्य दो प्रकार के कहे हैं—आर्य और म्लेच्छ।

४ आरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—इड्ढिपत्तारिया य अणिड्ढिपत्तारिया य। —प्रज्ञापना सूत्र १

आर्यमनुष्य दो प्रकार के हैं—ऋद्धिप्राप्त और अनर्द्धिप्राप्त। ऋद्धिप्राप्त आर्य ६ हैं—

१ अरिहत, २ चक्रवर्त्ती, ३ वासुदेव, ४ वलदेव, ५ चारण, ६ विद्याधर।

अनर्द्धिप्राप्त आर्य नव प्रकार के हैं—
१ क्षेत्रआर्य, २ जातिआर्य, ३ कुलआर्य, ४ कर्मआर्य, ५ शिल्प-आर्य, ६ भाषाआर्य, ७ ज्ञानआर्य, ८ दर्शनआर्य, ९ चारित्रआर्य ।

५ तीन प्रकार के मनुष्य—

(१) अच्छा ग्रहण करनेवाले–पशु
(२) अच्छा करने की इच्छा रखनेवाले–मनुष्य
(३) अच्छा बनने की कोशिश करनेवाले–देवता

६. मनुष्य के तीन प्रकार—

(१) भलाई का बदला बुराई से देनेवाले—राक्षस
(२) भलाई का बदला भलाई से देनेवाले—मनुष्य
(३) बुराई का बदला भलाई से देनेवाले—देवता

७ तीन प्रकार के मनुष्य—

(१) पतनशील (२) स्थितिशील (३) उन्नतिशील ।

८ मनुष्य के तीन वर्ग—

(१) विपरीतगामी (२) स्थिर (३) अग्रगामी । —लेवेटर

९. मनुष्य के तीन रूप—

(१) जैसा वह स्वय समझता है ।
(२) जैसा उसे लोग समझते है ।
(३) जैसा वह स्वय है ।

१० मनुष्य की तीन कोटियां—

१ हीनकोटि—अपनी प्रशसा करनेवाले ।
२ मध्यमकोटि—जिनकी प्रशसा मित्र करते हैं ।
३ उत्तमकोटि—जिनकी प्रशसा शत्रु भी करते है ।

११. एके सत्पुरुषाः परार्थघटका स्वार्थं परित्यज्य ये,
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृत स्वर्थाविरोधेन ये।
तेऽमी मानुप राक्षसा परहित स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहित ते के न जानीमहे॥

—भर्तृहरि, नीतिशतक ७५

स्वार्थ छोडकर दूसरे का काम करनेवाले सत्पुरुष हैं। स्वार्थ रखते हुए दूसरे का काम निकालनेवाले सामान्य पुरुप हैं तथा स्वार्थ के लिए दूसरो का काम विगाडनेवाले मनुष्यरूप मे राक्षस हैं। लेकिन उन मनुष्यो को किस नाम से पहचानें, जो विना मतलब ही औरो का काम विगाडते रहते हैं।

१२. **चार प्रकार के मनुष्य—**

(१) हैवान (आर्त्तध्यानी) (२) शैतान (रौद्रध्यानी)
(३) इन्सान (धर्मध्यानी) (४) भगवान (शुक्लध्यानी)

१३. **चार प्रकार के मनुष्य—**

(१) कीट-पतग जैसे—(कलाविहीन)

(२) पशु-पक्षी जैसे—(उदरपूर्ति के लिए शिल्प आदि कला सीखनेवाले)

(३) मनुष्य जैसे—(धर्मकला सीखनेवाले)

(४) देवता जैसे—(दूसरो मे धर्म का प्रचार करनेवाले)

१४. **चार प्रकार के मनुष्य—**

(१) निकृष्ट—मेरा सो मेरा और तेरा भी मेरा।

(२) मध्यम—मेरा सो मेरा और तेरा सो तेरा।

(३) उत्तम—तेरा सो तेरा और मेरा भी तेरा।

(४) ब्रह्मज्ञ—ना कुछ तेरा, ना कुछ मेरा।
जग का यह सब झूठा झमेला।

१५. चार प्रकार के मनुष्य—

(१) चीनी की मक्खी जैसे—स्वाद लेकर उड जानेवाले।
—(भरत चक्रवर्त्तिवत्)

(२) गुड के लाट की मक्खी जैसे—स्वाद लेते-लेत उसी मे मर जानेवाले।—(ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तिवत्)

(३) विष्ठा की मक्खी जैसे—स्वाद लिए विना ही उड जाने-वाले।—(हरिकेशीमुनिवत्)

(४) श्लेष्म की मक्खी जैसे—स्वाद लिए बिना श्लेष्म मे फस कर मर जानेवाले।—(कालसूकर कसाईवत्)

१६ चार प्रकार के मनुष्य—

(१) जो न आप खाए, न दूसरो को खिलाए—मक्खीचूस।

(२) जो आप खाए, पर दूसरो को न खिलाए—कंजूस।

(३) जो आप भी खाए, दूसरो को भी खिलाए—उदार।

(४) जो आप न खाकर दूसरो को खिलाए—दाता।

—अफलातून

१७ चार प्रकार के मेघ होते हैं—

(१) गरजते हैं, वरसते नही, (२) गरजते नही बरसते हैं, (३) गरजते भी है, वरसते भी है(४)गरजते भी नही वरसते भी नही।

मेघ के समान चार प्रकार के मनुष्य हैं—

(१) बोलते हैं, देते नही, (२) बोलते नही, देते हैं। (३) बोलते भी हैं, देते भी है, (४) बोलते भी नही, देते भी नही।

—स्थानाङ्ग ४।४।३४६

१८. पाँच प्रकार के मनुष्य—

(१) अपना स्वार्थ चाहनेवाले—मिट्टी के समान

(२) कुटुम्ब का हित चाहनेवाले—वृक्ष के समान

(३) समाज का हित चाहनेवाले—पशु-पक्षी के समान। (काक भी जीमनवार देखकर काँव-काँव करके अपने समाज को इकट्ठा कर लेता है।)

(४) राष्ट्र का हित चाहनेवाले—मनुष्य के समान।

(५) समूचे ससार का हित चाहनेवाले—भगवान् के समान।

१९. छ प्रकार के मनुष्य—

(१) **सर्वोत्तम**—नितम्बारूढ स्त्री की भी इच्छा न करनेवाला। छद्मस्थ-वीतराग, उपशम-क्षपक-श्रेणीवाला।

(२) **उत्तमोत्तम**—स्त्री की इच्छा होने पर पश्चात्ताप से निवृत्ति करनेवाला—अप्रमत्तसयत।

(३) **उत्तम**—मुहूर्त-प्रहर यावत् इच्छा होती है फिर भी मैथुनसेवन न करनेवाला—प्रमत्तसयत।

(४) **मध्यम**—परस्त्री का त्याग करनेवाला—श्रावक।

(५) **अधम**—परस्त्री-स्वस्त्री दोनो का भोग करनेवाला।

(६) **अधमाधम**–माँ, बहन, विधवा, कुमारी तथा साध्वी से भी न टलनेवाला। —महानिशीथ

२० **आठ प्रकार के मनुष्य**–

(१) **आसन्नदृष्टि**–ये बालक, बन्दर व मक्खियो की तरह अदूरदर्शी होते है।

(२) **दूरदृष्टि**– वयपरिणत व्यक्तियो की तरह दूर की सोचनेवाले।

(३) **रागदृष्टि**—अपने पुत्र, पति, दामाद, स्त्री आदि जिन पर राग है। वे चाहे कैसे ही कुरूप, मूर्ख एव कुव्य-सनी हो, अच्छे ही लगते हैं। रागदृष्टिवाले अच्छे-बुरे को नही समझ सकते।

(४) **द्वेषदृष्टि**–ये गुणो को भी दोषरूप मे लेते हैं।

(५) **गुणदृष्टि**–ये श्रीकृष्णवत् 'गुण' को ही लेते हैं।

(६) **दोषदृष्टि**–ये जोक, मक्खी व कागवत् दोषग्राही होते हैं।

(७) **गुण-दोषदृष्टि**–ये डाक्टर, मास्टर, वकील, न्याया-धीश, नेता, वक्ता, लेखक, व्यापारी, राजा एव तपस्वी की प्रशसा करके अन्त मे एक दोष ऐसा दिखलाते हैं कि पिछली प्रशसा पर पानी फिर जाता है।

(८) **आत्मदृष्टि**–ये आत्मा के दोष देखते हैं। लोग इनकी प्रशसा करते है तब नाचते, मयूरवत् अपने पैर (दोष) देखकर रोते है एव आनन्दघनजीवत् अपने शिष्यो को अन्तर्दर्शन करवाना चाहते है।

२१ येषा न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शील न गुणो, न धर्म ।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ।

—भर्तृहरि नीतिशतक १३

जिन्होने तप नही किया, विद्या नहीं पढी, दान नही दिया एव ज्ञान, शील, गुण और धर्म का अभ्यास नही किया, वे मनुष्य मर्त्यलोक मे पृथ्वी के लिये भारभूत हैं तथा मनुष्य के रूप मे विचरते हुए भी साक्षात् पशु हैं।

११ मनुष्य जन्म की प्राप्ति

१. कम्माण तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आययति मणुस्सय ॥
—उत्तराध्ययन ३।७

क्रमश कर्मों का क्षय होने से शुद्धि को प्राप्त जीव कदाचित् वहुत लम्वे ममय के पश्चात मनुष्य जन्म को प्राप्त होता है।

२. चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताए कम्म पगरेंति त जहा—पगइ-भद्दयाए, पगइविणीययाए, साणुक्कोसयाए अमच्छरियाए।
—स्थानाग ४।४।३७३

चार कारणो से जीव मनुष्यगति का आयुष्य वाधते हैं, सरल प्रकृति से, विनीत-प्रकृति मे, दयाभाव से और अनीर्ष्यभाव से।

३ माणसत्त भवे मूल, लाभो देवगइ भवे।
मूलच्छेएण जीवाण, णरग-तिरिक्खत्तण धुव ॥
—उत्तराध्ययन ७।१६

मनुष्यजन्म प्राप्त करना मूलधन की रक्षा है। देवत्व प्राप्त करना लाभस्वरूप है और नरक-तिर्यञ्च मे जाना मूलधन को खो देना है।

१२ मनुष्य जन्म की श्रेष्ठता

१. मनुष्यजन्म से ही मुक्ति मिल सकती है, अत. यह जन्म सर्वश्रेष्ठ है।

२. स्वर्ग के देवता भी इच्छा करते है कि हमे मनुष्यजन्म मिले, आर्य देश मिले और उत्तम कुल मिले।

—स्थानाग ३।३।१७८

३. जैसे सामग्री के अभाव मे राजमहल की अपेक्षा खेत की झोपडी अच्छी है, उसी प्रकार धर्मसामग्री का अभाव होने से स्वर्ग की अपेक्षा मनुष्यलोक श्रेष्ठ है। कहा जाता है कि भक्ति से प्रसन्न होकर गोपियो के लिए इन्द्र ने विमान भेजा, तब गोपियो ने कहा—

'व्रज वहालु मारे वैकुठ न थी जावु'
त्या नदनोलाल क्या थी लावु। —वैष्णवी मान्यता

४ अमेरिका के डाक्टर थोमर कहते है कि तुम्हारा भार उठानेवाली पृथ्वी से स्वर्ग को अधिक मानो तो तुम्हे इस पृथ्वी पर पैर भी नही रखना चाहिए।

५. मनुष्यजीवन अनुभव का शास्त्र है। —विनोवा

६. मनुष्यजीवन की तीन वडी घटनाएँ विवाद से पूर्णतया परे है—जन्म, विवाह और मृत्यु।

७ मानवजीवन के पाँच रत्न हैं—(१) प्रेम अर्थात् मिलनसारी, (२) मित्रता—अक्रोध-भाव, (३) शान्ति-भाव—क्षमा (४) सयम—नियमितता (५) समता-सतोष ।

८ पात्रे दानं सता सङ्ग , फल मनुष्यजन्मन ।

—सूक्तरत्नावली

मनुष्यजन्म का फल है—सुपात्र को दान देना और सत्सग करना ।

९. जिह्वे । प्रह्वीभव त्व सुकृति-सुचरितोच्चारणे सुप्रसन्ना,
भूयारतामन्यकीर्ति श्रुति रसिकतया मेऽद्यकर्णौ सुकर्णौ ।
वीक्ष्याऽन्य प्रौढलक्ष्मी द्रुतमुपचिनुत लोचने । रोचनत्व,
ससारेऽस्मिन्नसारे फलमिति भवता जन्मनो मुख्यमेव ।।

—शान्तसुधारस, प्रमोदभावना १४

हे जीभ । धार्मिको के दानादि गुणो का गान करने मे अत्यन्त प्रसन्न होकर तत्पर रहो । कानो । दूसरो की कीर्ति सुनने मे रसिक होकर सुकर्ण (अच्छे कान) वनो । नेत्रो । दूसरो की वढती हुई लक्ष्मी को देखकर प्रसन्नता प्रकट करो । इस असार-ससार मे जन्म पाने का तुम्हारे लिए यही मुख्य फल है ।

१३ मनुष्य-जन्म की दुर्लभता

१. माणुस्स खु सुदुल्लहं। —उत्तराध्ययन २०।११

मनुष्यजन्म मिलना अत्यन्त कठिन है।

२. कबीरा नोबत आपुनी, दिन दस लेहु बजाय।
यह पुर-पट्टन यह गली, बहुर न देखो आय।

३. बडे भाग्य मानुष तनु पावा,
सुरदुर्लभ सद्ग्रन्थहि गावा। —रामचरितमानस

४. दुर्लभं त्रयमेवेतद् , देवानुग्रहहेतुकम्।
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं, महापुरुष सश्रय ॥ —शंकराचार्य

ये तीन चीजें दुर्लभ एवं सद्भाग्य की कृपा के कारण हैं। मनुष्यता, मुमुक्षुता और महापुरुषों की संगति।

५. चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जंतुणो।
माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमंमि य वीरियं॥
—उत्तराध्ययन ३।१

संसार में सब जीवों के लिए चार परम अंग (उत्तम संयोग) दुर्लभ हैं—(१) मनुष्यता, (२) धर्म-श्रवण, (३) धर्म में श्रद्धा, (४) संयम में वीर्य-पराक्रम करना।

६. छठाणाइ सव्वजीवाण सुलभाइं भवति—
त जहा—माणुस्सए भवे, आरिए खित्ते जम्मे, सुकुले पच्चायाती, केवलिपन्नत्तस्स, धम्मस्स सवणया, सुयस्स वा सद्दहणया, सद्धहियस्स वा पत्तियस्स वा रोइयस्स वा सम्म काएण फासणया ।

—स्थानाग ६।४८५

छ वस्तुएँ सभी जीवो के लिए दुर्लभ हैं—(१) मनुष्य-भव (२) आर्य क्षेत्र (३) उत्तमकुल मे जन्म (४) केवलीप्ररूपित धर्म का सुनना (५) उस पर श्रद्धा-प्रतीति—रुचि करना (६) उसके अनुसार आचरण करना ।

१४ दुर्लभ मनुष्यजन्म को हारो मत !

१ दुर्लभं प्राप्य मानुष्य, हारयध्व मुधैव मा।

—पार्श्वनाथचरित्र

दुर्लभ मनुष्यजन्म को पाकर व्यर्थ मत गवाओ।

२. नर को जनम बार-बार ना गवार सुन,
अजहु सवार अवतार ना बिगोइये।
लीजेगो हिसाब तब दीजेगो जबाब कहा,
कीजे जु सताव तो सतावे शुद्ध होइये।
पाप करके अज्ञानी सुख की कहा कहानी,
घृत की निशानी कित पानी जो विलोइये।
स्वारथ तजी जे परमारथ किसन कीजे,
जनम पदारथ अख्यारथ न खोइये।
नदी-नाव को सो योग मिल्यो लख लोग तामे,
काको-काको कीजे शोक काकूं-काकूं रोइये।
को है काको मित्त तापे काहे काकी चित परी,
सीतपति मन मे निश्चित होय सोइये।
ध्याइये न विमुख उपाइये न कैते दुख,
बोइये न बीज जोपे आक बीज बोइये।

स्वारथ तजीजे परमारथ किसन कीजे,
जनम पदारथ अख्यारथ न खोइये।

—किसनबावनी

३. रात गमाई सोय के, दिवस गमाया खाय,
हीरा जन्म अमोल यह, कोडी वदले जाय।

४. स्वर्णस्थाले क्षिपति स रजः पाद शौच विधत्ते,
पीयूषेण प्रवरकरिण वाहयत्येन्धभारम्।
चिन्तारत्न विकिरति कराद् वायसोड्डायनार्थं,
यो दुष्प्राप्य गमयति मुधा मर्त्यजन्म प्रमत्तः।

—सिन्दूरप्रकरण ५

जो व्यक्ति आलस्य-प्रमाद के वश, मनुष्य जन्म को व्यर्थ गँवा रहा है, वह अज्ञानी मनुष्य सोने के थाल मे मिट्टी भर रहा है, अमृत से पैर धो रहा है, श्रेष्ठ हाथी पर ईन्धन ढो रहा है और चिन्तामणि रत्न को काग उडाने के लिए फेंक रहा है।

१५ मानवता

१. इद मानुषं सर्वेषा भूताना मधु ।

—बृहदारण्यकोपनिषद् २।५।१३

यह मानुष्यभाव-मानवता—सब प्राणियो को मधु के समान प्रिय है

२. मानवता के चार लक्षण—

१. धर्म की तरफ लेजाने वाली नीति, २ नम्रता, ३ निर्भयता ४ परोपकारिता । —प्लेटो

३, मानवता के चार अग—

१. विवेकाशीलता, २. न्यायप्रियता, ३. सहिष्णुता, ४ वीरता । —प्लेटो

४. मिले मोकला मिनख पण, मिले न मिनखाचार ।
फोगट फोनोग्राम ज्यू, वाता रो व्यवहार !

५ मानवता की माँग—

जैनो के उत्तराध्ययन मे, बौद्धो के धम्मपद मे, शकर के विवेकचूडामणि मे, क्रिश्चियनो के बाइबिल मे, मुसलमानो के कुरान मे, वैदिको के वेदो—उपनिषदो मे, वैष्णवो के रामायण—महाभारत मे—इन सभी शास्त्रो मे मानवता की याचना की गई है ।

६ तू वकील, डाक्टर, न्यायाधीश, प्रधानमन्त्री व राजा है या मनुष्य ? मा के पेट से क्या निकला था और आखिर तेरा क्या नाम रहेगा ?

मनुष्य ! यदि मनुष्य है तो फिर जीवन मे मनुष्यता को प्रधानता देनी चाहिए या राक्षसीवृत्ति को ?

७ मनुष्य की मनुष्यता के प्रति अमानवता दूसरो को रुला देती है । —बर्न्स

८ **बादशाह का दुशाला—**

बादशाह ने वजीर को एक कीमती दुशाला दिया । वजीर ने उससे नाक पोछा । किसी ने चुगली खाई । शाह ने क्रुद्ध होकर वजीर को बरखास्त कर दिया । मनुष्यजन्म-रूप दुशाले से पाप किया गया तो मनुष्यजन्म से बरखास्त होकर नरक मे जाना पडेगा ।

१६ आश्चर्यकारी मनुष्य

१ वीएना मे एक ऐसा मनुष्य है, जो आखो से सुन सकता है एव दवाने से उसकी आख से मीठा स्वर भी निकलता है।

२. एक आदमी की गर्मी २४० वोलटर है, उसके साथ हाथ मिलाने वाले को धक्का लगता है। जव वह चुटकी बजाता है या सडक पर चलता है, तव चिनगारियां उछलती हैं।

—विश्वमित्र, १६५२, नवम्बर

३ (क) जोधपुर के लूणी गॉव मे एक आदमी है, जिसके दिल के नीचे की ओर तीन इच लम्वा और ढाई इच चौडा भूरे रग की सीग है।

(ख) पूर्वी पाकिस्तान (बागला देश) के "खायन" थाने के कालेवगी गाँव मे पॉच इच लम्बी पूछवाला लडका है।

(ग) मिर्जापुर जिले के दक्षिणी क्षेत्र मे कुछ समय पहले नौ फुट लम्बा एक डरावना आदमी मिला था।

(घ) दक्षिणी अमेरिका के मिहगो शहर मे दो सिरवाला एक आदमी था, एक सिर कधो पर था और दूसरा काख मे था, जिसमे वह कुछ बोल सकता था, काख वाले मुह मे सांस लेता था पर खा नही सकता था। —हिन्दुस्तान, ६ मई, १६६२

४. (क) रोम मे एक ऐसा आदमी है जो सिर के बल चलता है, तथा उसका कहना है कि उल्टे होकर देखो तो दुनिया सीधी दिखाई देगी।

(ख) एशिया का सबसे लम्बा आदमी १० फुट ५ इच है।

—सर्जना, पृष्ठ ३३

५. छियानवे इच की मूछ-सौराष्ट्र मे लाठी ग्राम का रहीश जाति का अहीर एव नाम अर्जुन डागर था। उसकी मूछ ९६ इच लम्बी थी। वह १९३३ के विश्व मेले मे अमेरिका गया था।

६. बगाल-बेलकोबा ग्राम मे एक मनुष्य का पग २२ इच था।

७. सात अगुलि वाले—

सखेरा-डी-वीटरेगो नामक स्पेन के एक गॉव मे प्रत्येक आदमी के हाथो-पैरो के सात-सात अगुलियाँ (छ: अगुलियाँ और एक अगूठा) हैं। उनके शादी-विवाह भी सात अगुली-वालो मे होते है। पाँच अगुली वाले मनुष्यो को देख कर वे अचम्भा करते हैं। —हिन्दुस्तान १३ जून, १९७१

८. तीन साँप खानेवाला आदमी—

ग्वालियर मे सिनेमा के ओवरटाइम मे एक आदमी बीन बजाकर सापो को अपने सामने खडा कर लेता था एव बुडका भरकर उन्हे खा जाता था। उसने कई दिनो तक २-३ साँप खाकर लोगो को चमत्कार दिखाया।

—इन्दरचन्द नवलखा से श्रुत

९ तुर्की के इसतम्बूल शहर मे रहनेवाला अहमद नामक व्यक्ति सर्पो को जीवित ही निगल जाता है।

—विचित्रा, वर्ष ३, अक ४, १९७२

१०. इंजेक्शन द्वारा काले नाग का विष निकालने वाले वैद्य–

वि. स १९९८ की बात है। हम कई साधु कारणवश सुजानगढ मे ठहरकर दवा ले रहे थे। वहाँ चोपडा औषधालय मे एक काला नाग निकला। बडनगर वाले वैद्य—श्रीभगवतीप्रसाद जी ने उसे पकडा एव इजेक्शन द्वारा उसकी दाढ से जहर निकाला। आश्चर्यचकित सैंकडो लोगो ने उस चमत्कार को देखा। पूछने पर वैद्यजी ने कहा—काले साँप का ऐसा शुद्ध जहर मिलना बहुत मुश्किल है। यह समय पर अमृत का काम करता है। मरते समय जब मनुष्य की जबान बन्द हो जाती है, इसकी एक मात्रा देने पर तत्काल मनुष्य एक बार बोलने लग जाता है।

—धनमुनि

११ विचित्र सर्प फार्म चलाने वाले अमेरिकन नवयुवक–

अमेरिकन नवयुवक-विटेकर रौम्यूलस–जिन्हे बचपन से ही सांपो मे अपूर्व स्नेह रहा है, केवल ६ वर्ष की आयु मे ही सांपो से ऐसे हिल-मिल गये थे मानो वे उनके अतरग साथी हो। सांपो के साथ इतना निकट का लगाव होने के कारण वे १९६३ से १९६५ तक मियामी के विश्वविख्यात सर्प-अनुसन्धान फार्म मे सहयोगी डाइरेक्टर का कार्य करते रहे। १९७० वर्ष के आरम्भ मे विटेकर को अन्तर्राष्ट्रीय पशु-

संरक्षण-सस्था से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। फलत उन्होने मद्रास मे अपना विचित्र सर्प-फार्म खोला। इस एक एकड के सर्प फार्म मे लगभग ३० जातियो के ३०० से भी अधिक साप हैं। यहाँ साँपो का जहर निकाला जाता है। इसकी विष निका लने की प्रणाली भी अद्भुत एव खतरनाक है। साप को एक पतली छड से जिसके सिरे पर मुडा हुआ 'हुक' लगा होता है, सावधानी से पूरा दवोच लिया जाता है। फिर गर्दन से पकड कर साप को एक पतली झिल्ली से मढे हुए काँच के शीशे पर डक मारने को मजबूर किया जाता है, साथ ही साथ गर्दन पर दवाव किया जाता है, जिससे मटमैले रग का तरल विष शीशे मे उतर आता है। यह विष यथाशीघ्र वम्बई के हाफकिन इन्स्टीट्यूट मे भेज दिया जाता है। वहाँ उसकी अल्पमात्रा घोडे के शरीर में सुई द्वारा प्रविष्ट की जाती है। क्रमश घोडे के रक्त मे जहरमोहरा पैदा हो जाता है, जिसका प्रयोग साप द्वारा काटे हुये व्यक्ति पर किया जाता है।

—साप्ताहिक, हिन्दुस्तान, १ अगस्त १९७२

१२ रूमानिया का 'कैरोलग्रेन' नामक व्यक्ति अभी तक न सोया है और न उसको झपकी ही आई है।

—हिन्दुस्तान, १३ जून, १९७१

१३. साठ साल से नही सोया—(मैड्रिड २६ सितम्वर) कृषि-फार्म मे काम करनेवाला ८८ वर्षीय 'वेलेन्टिन

मैंडिना' गत ६० सालों से नहीं सोया है। वह २४घण्टेकाम करके तिगुना वेतन प्राप्त करता है। मैंडिना २४ घण्टो में दो बार नाश्ता, दो बार लच तथा दो बार डिनर खाता है। —हिन्दुस्तान, २८ सितम्बर, १९६४

१४. जोधपुर मे 'भोपालचन्दजी लोढा' के सरकारी आरोप लगने से, दिल पर ऐसा धक्का लगा कि वे वेहोश हो गये। ७ वर्ष बाद एक दिन अचानक ताने आई और उनकी वेहोशी दूर हो गई। —जोधपुर मे श्रुत

१५ भारत के प्रसिद्ध साइकिल-चालक एवं कलाकार 'श्री एम. कुमार जौनपुरी' ने हिण्डौन मे लगातार १०४ घण्टे तक साइकिल चलाने का सफल प्रदर्शन कर हजारो दर्शकों की प्रशसा अर्जित की। उनके विविध प्रदर्शनो को देखने के लिये चार दिनो तक गावो तथा नगर के हजारो लोगो का ताता लगा रहा। श्री जौनपुरी ने साइकिल चलाते हुए स्नान करना, वस्त्र वदलना, जलपान करना आदि अनेक रोचक कार्यक्रम प्रदर्शित किये।

—हिन्दुस्तान, २४ अगस्त, १९७१

१६ वेल्जियम का 'अलाइस द क्रिपी' नामक ढोल वजाने वाला सुवह छ वजे मे शाम के छ वजे तक लगातार (आधे घण्टे की खाने की छुट्टी के अलावा) ढोल वजाता था और इन वारह घंटो मे ५५ मील पैदल चलता था।

—सरिता, अक ३९५, सितम्बर, १९७१

१७ पिलवर्न के 'विलियम हेनरी' नेत्रहीन थे पर उन्होंने अंधेपन

के बावजूद अपनी जिन्दगी मे १० लाख मील की यात्रा की, इसमे से उन्होने दो लाख मील घोडे की पर यात्रा की। —सरिता अक-३६५, सितम्बर १६७१

१८. **पैदल चलने का नया विश्व रिकार्ड**—इग्लैड के दूर पैदल यात्री ५३ वर्षीय 'वाकरजौनसिक्लेयर' ने ऑकलैड के निकट ग्राण्ड फ्री रेस ट्रैक मे लगातार चलते हुए २१८ मील ६० गज सफर किया (उसका पिछला रिकार्ड २१५ मील १६०० गज का था) उसने ६० घण्टे ४२ मिनिट लगाए। —हिन्दुस्तान, २ अप्रेल, १६७१

१६. **ताजे-मोटे मनुष्य**—

(क) अमरीका के फ्लोरिड्म के जेक्सोनविल का 'चार्ल्स स्टेन मेटज' ५२ स्टोन १२ पौंड (७४० पौड) का था। वह ३८ वर्ष की आयु मे मरा। मरते समय उसकी कमर ११२ इच की थी।

(ख) अमरीका के उत्तरी कारोलीना का 'माइन्स डारडेन' का वजन १००० पोड था। वह ७ फुट ८ इंच ऊँचा था।

(ग) एक अमरीकी नीग्रो महिला दुनियाँ की सबसे भारी औरत है। वह ८४० पौड की है।

(घ) अमरीका के इण्डियाना का 'रौबर्ट अर्ल ह्यूजस' १०६७ पौड का था। अस्पताल के दरवाजो मे मे उसका घुसना असम्भव था। उसके लायक कोई चारपाई भी न थी। —हिन्दुस्तान, ११ जुलाई, १६७०

(ड) अमेरिका के एक आदमी का वजन ५८८ पौंड एवं उसकी स्त्री का वजन ४८८ पौंड था। पुरुष की लम्बाई पाँच फीट चार इंच थी एवं उसका सीना छ फीट चार इच चौडा था।

२०. **पाषाणयुगीन कबीला**—मनीला (फिलिपाइन) से ५०० मील दक्षिण की ओर मिण्डानाओ द्वीप में एक ऐसे कबीले का पता चला है जो पाषाणयुग के लोगो की तरह रहता है। इन लोगो को न भाषा का ज्ञान है, न ही इन्होने कभी चावल, चीनी या रोटी खाई है और न नमक चखा है। ये लोग मास या जगली घास खाते हैं एव चमडा पहनते है। इस कबीले का नाम **तासाडस** है एव विश्व मे इन लोगो की सख्या बहुत ही थोडी है। इनके हथियार पत्थर या बाँस के होते हैं।

—हिन्दुस्तान १० जुलाई १९७१

२१ **विश्व का सबसे छोटा मनुष्य**—आस्ट्रेलिया निवासी जार्ज डावी का कद १ फुट ४ इच अर्थात् २१ १/३ अगुल का है। आयु ४६ वर्ष की है। द्वितीय महायुद्ध मे जार्ज एक कुशल गुप्तचर (सी आई डी) का काम करते थे। महायुद्ध के बाद उन्होने अपना अधिकाश समय होटलो मे व्यतीत किया।

अनोखा विवाह—श्रीमती जार्ज की जार्ज से पहली भेट पेरिस मे हुई थी। उन्होने देखते ही कौतूहलवश जार्ज को गोदी मे उठा लिया और पूछा—क्या मेरे घर चलोगे?

मद मुस्कान बिखेरते हुए जार्ज ने उत्तर दिया—तुम चाहो तो मैं आजीवन तुम्हारे घर रह सकता हू। प्रेम जागृत हुआ और छोटे खिलौने तुल्य उस वातूनी व्यक्ति को वह जीवन भर के लिए अपने घर ले गई और अपना पति बना लिया। श्रीमती जार्ज का कद ६ फीट लबा था। इस अद्भुत जोडे की दो सतानें हैं किन्तु वे दोनो माता के समान लम्बी है।

—वीर अर्जुन साप्ताहिक १० मई १९६९ के आधार से

२२ अद्भत दाढ़ी—बैंकाक के श्री 'सेयू येनक्लाई' 'मधुमक्खियो वाली दाढी कैसे उगाए' प्रतियोगिता मे चैम्पियन घोषित किए गए। टेलीविजन पर लाखो दर्शको के समक्ष उन्होने अपनी मधुमक्खियो को (अर्थात् जिनको स्वय उन्होने पाल रखा था।) निकट के पेड पर उडा दिया और जब दुवारा बुलाया तो वे सारी मधुमक्खियाँ सिलसिलेवार दाढीनुमा उनके चेहरे पर चिपक गयी। मधुमक्खियो को जाने और बुलाने की

१७ आश्चर्यकारी मनुष्यणियां

१. १८ साल से अन्न-पानी न लेने वाली महायोगिनी—

हैदरावाद से ६० माइल दूर "यानगुदी" गॉव के निकट एक पहाडी पर साधना मे लीन माणिकम्मा नाम की एक योगिनी है। आयु ३१ साल की है, १८ साल से उसने कुछ भी नही खाया-पीया। इस सम्वन्ध मे हैदरावाद-लोकसभा के सदस्य शकरदेव विद्यालकार ने एक पुस्तक प्रकाशित की है। —हिन्दुस्तान, १२ अक्टूवर, १९६३

२. जोधपुर [राजस्थान] के एक गाँव मे एक वहन रहती थी। लोकवाणी के अनुसार वह लगभग २३ वर्ष से कुछ नही खाती-पीती [शरीर स्वस्थ था] वि स २०२१ पौष मास मे जव वह आचार्य श्री तुलसी के दर्शन करने जोधपुर आई, तव उसे देखने का मौका मिला था। —धनमुनि

३ दक्षिणी अफ्रीका में एक स्त्री पति की मृत्यु के समाचार सुनते ही सन् ३१ मे सोई, और सन् ४१ मे उठी। वह सूखकर काँटा हो गई थी। उसे अस्पताल मे दो-दो घण्टे वाद खुराक दी जाती थी।

४ एक हबशी स्त्री के होठ १४ इंच लम्बे है। उन पर छोटी रकाबी रखी जा सकती है।

५. बैंगलोर-काग्रेस-प्रदर्शनी १९६७ मे एक २२ वर्षीया तरुणी देखने मे आई। उसके शरीर मे निरन्तर बिजली प्रवाहित होती थी। उसके शरीर के किसी भी भाग मे बिजली के बल्ब लगाने से बल्व प्रकाशित हो उठते थे। ५ से १० हॉर्स पॉवर की मोटर का तार पकडते ही वह स्टार्ट हो जाती थी। उसे भोजन आदि काष्ठ के बर्तनो मे दिया जाता था। जब कोई व्यक्ति उस युवती को स्पर्श करता तो एक जोर का झटका (शॉक) लगता था।

—ब्रह्मदेवसिंह

६. ओहियो अमेरिका मे रबर की वस्तुएं बनानेवाले एक कारखाने मे रोज कही न कही छोटी-मोटी आग बड़े रहस्यमय ढग से लग जाती थी। मालिक ने प्रो. "रोबिन बीच" को जाँच-पडताल के लिए बुलवा भेजा। सारी बात सुनकर प्रो. साहब ने एक-एक कर सभी मजदूरो को धातु की एक चादर पर खडे होने के लिए कहा। मजदूरो मे एक जवान औरत जब धातु की चादर पर आकर खडी हुई तो अचानक मीटर की सुई ने एक गहरी छलाँग लगाई। उसके शरीर मे ३०,००० वोल्ट की इलेक्ट्रो-स्टेटिक बिजली और ५००,००० ओ एच. एम. एस. की प्रतिरोध शक्ति (रेसिस्टेंट) मौजूद थी।

प्रो॰ बीच ने घोषणा की—"इस कारखाने मे अग्नि-विस्फोट की जड यही है।" —विचित्रा वर्ष ३, अंक ४, १९७१

६ आस्ट्रिया के ड्यूक फ्रेडरिक पचम की पत्नी के हाथ इतने मजबूत थे कि वह लकडी के मोटे तख्ते मे मुक्का मारकर कील ठोक देती थी।

—सरिता, सितम्बर अंक ३९५, १९७१

१८. मनुष्य के विषय में ज्ञातव्य बातें–

१ मनुष्य के शरीर मे प्राप्त चर्वी से साबुन की सात टिकियाँ बनायी जा सकती है।

२. मनुष्य के शरीर मे इतना जल होता है कि उससे दस गैलन का वर्तन भर सकता है।

३ मनुष्य के शरीर से प्राप्त कार्वन से सुरमे की नौ हजार पैंसिले बनाई जा सकती है।

४ मनुष्य के शरीर की यदि चमडी उधेडी जाय तो वह साढे अठारह वर्ग फुट होगी।

५. मनुष्य का दिल २४ घण्टो मे १,०३,६८६ वार धडकता है।

६ मनुष्य के शरीर का सवसे कडा भाग दात के ऊपर की पालिश हाती है।

७. मनुष्य का शरीर मच्छर को अगारे के समान लाल दिखाई देता है।

८ मनुष्य के नाखून २४ घण्टो मे ००४३५३५६ सैंटीमीटर वढते हैं।

९ मनुष्य के वाल २४ घण्टे मे ००००१२७ सैंटीमीटर वढते हैं।

१०. मनुष्य के दो लाख वालो की चुटिया से वीस टन वजन उठाया जा सकता है।

११ मनुष्य की धमनियो मे रक्त की गति सात मील प्रति घण्टा है ।

१२. मनुष्य के शरीर में कुल २०६ हड्डियाँ होती है ।

३. मनुष्य के शरीर मे ७५० मास-पेशियाँ होती है ।

१४. मनुष्य के नेत्र एक मिनट मे पच्चीस बार झपकते हैं ।

१५. मनुष्य के बाल व नाखून काटते समय दर्द इसलिए नही होता कि उनमें नसें नही होती ।

१६ मनुष्य के फेफडो मे लगभग १०,६०,००,००० छेद है ।

१७. मनुष्य की आँखे दूरदर्शक यन्त्र से ३००० तारे देख सकती हैं ।

१८. मनुष्य के हाथ की पाँचो अंगुलियो पर बराबर चोटे की जायें तो बीच की उगली पर सबसे अधिक चोट लगेगी ।

१६ मनुष्य के मस्तिष्क का वजन तीन पौंड और स्त्री के मस्तिष्क का वजन दो पौंड होता है ।

२० मनुष्य के दिमाग तथा हड्डियो पर भोजन की कमी का कोई प्रभाव नही होता ।

—दीनदयाल डीडवानिया, सर्जना, पृष्ठ ४६

२१. मनुष्य समुद्र में ४२० फुट डुबकी लगा सकता है ।

—विश्वदर्पण, पृ. ४०

२२. जब शरीर के ७२ पुट्ठे एक साथ अपना कार्य करते है तब ही मनुष्य एक शब्द बोल पाता है ।

२३. मनुष्य द्वारा खासी से निकली हवा का वेग २४५ मील प्रति घण्टा होता है । —सरिता, सितम्बर, अंक ३९५, १९७१

☼

मनुष्यलोक

१६.

१. जैन-आगमानुसार मनुष्यलोक—

जहाँ हम रहते हैं वह रत्न प्रभा-पृथ्वी की छत है। उसके मध्य मे सुदर्शन नाम का मेरुपर्वत है। उसके ठीक बीच मे गोस्तन के आकार के आठ रुचक-प्रदेश हैं। वहाँ से नव सौ योजन ऊपर और नव सौ योजन नीचे ऐसे अठारह सौ योजन का मोटा एव एक रज्जु—असख्य योजन का लम्बा-चौडा मध्यलोक-तिरछालोक है। मध्यलोक की सीमा से ऊपर ऊर्ध्वलोक है और नीचे अधोलोक है। मध्यलोक मे जम्बू आदि असख्य द्वीप हैं और लवण आदि असंख्य समुद्र हैं।

जम्बूद्वीप, धातकीखण्डद्वीप और अर्धपुष्करद्वीप, ऐसे ढाई द्वीपो मे तथा लवणसमुद्र के कुछ भाग मे मनुष्यो का निवास है। इसी का नाम मनुष्यलोक है। यह पैतालीस लाख योजन विस्तारवाला है। इसको चारो तरफ से घेरे हुए 'मानुषोत्तर' पर्वत हैं।

जम्बूद्वीप मे भरत आदि सात क्षेत्र हैं[1]।

---

(१) देखिए लोकप्रकाश पु ज ४।

२. **मनुष्यों की संख्या**—जैन शास्त्रानुसार मनुष्यलोक मे सज्ञी-मनुष्यो की सख्या उनत्तीस अङ्को जितनी मानी गयी है। वे अङ्क इस प्रकार हैं—

७९२२८१६२, ५१४२६४३, ३७५९३५४, ३९५०३३६।

—अनुयोगद्वार, प्रमाणाधिकारसूत्र ६०

२०. वैज्ञानिकों के मतानुसार पृथ्वी आदि का जन्मकाल

१ पृथ्वी का जन्मकाल २०० करोड वर्ष पूर्व, प्राणियो का उद्भव ३० करोड वर्ष पूर्व, मनुष्यो का जन्म तीस लाख वर्ष पूर्व, ज्योतिष विद्या तीस हजार वर्ष पूर्व, दूरवीक्षण यन्त्र व आधुनिक विज्ञान ३०० वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए।

—सर जेम्स जीन्स "वॅगथ्री" से

२ भू-शास्त्री जेली के मतानुसार सागर की न्यूनतम आयु ७० करोड एवं अधिकतम दो अरब ३५ करोड वर्ष निश्चित की गई है। शैल-प्रमाणो से तथा हिलियम विधि से पृथ्वी की आयु दो अरब वर्ष से अधिक मानी गई है। खगोलीय आधारो पर पृथ्वी की आयु दस अरब वर्ष, सूर्य की आठ अरब वर्ष, चन्द्रमा की चार अरब वर्ष लगभग मानी गई है। 'हेरोल्ड जेफरीस' के मतानुसार आज से लगभग चार अरब वर्ष पूर्व चन्द्रमा पृथ्वी से आठ हजार मील दूर था किन्तु दूरी बढते-बढते आज लगभग ढाई लाख मील दूर हो गया। —नवभारत, ८ मार्च, १९६६

–(केदारनाथ प्रभाकर, सहारनपुर)

३. भूगर्भ संसार की खोज—

विख्यात शोधक और लेखक "डा. रेमोण्ड बरनाड ए. बी. एम ए पी-एच डी. न्यूयार्क विश्वविद्यालय" अपनी नवीन पुस्तक **दी हॉलो अर्थ** मे लिखते हैं कि—उडन चक्रियो का असली गृह एक विशाल भूगर्भ-संसार है, जिसका प्रवेशद्वार उत्तरीय ध्रुव के एक मुखद्वार मे है। पृथ्वी के खोखले अन्तरिक्ष मे एक मानवोत्तर जाति निवास करती है। जो सतह पर रहनेवाले मनुष्यो से कोई सम्बन्ध रखना नही चाहती। उसने अपनी उडनचक्रियो को तभी उडाना प्रारम्भ किया, जब मनुष्यो ने अणुबमो के विस्फोटो से दुनियाँ को त्रस्त कर दिया।

डा बरनाड आगे लिखते है कि एडमीरल वार्ड ने एक नौकादल को उक्त ध्रौवीय मुखद्वार मे प्रवेश करने का अधिनायकत्व किया तथा इस भूगर्भस्थित लोक मे पहुँचे। यह लोक तुषार और हिम से स्वतन्त्र है। इसमे जगलाच्छादित पर्वत श्रेणी है। झीले, नदियाँ वनस्पति तथा विचित्र पशु भी है। इस आविष्कार के समाचार को अमरीका सरकार ने रोक लिया, जिससे दूसरे देश भवान्तरीण लोक पर हक कायम न कर लें। इस भूगर्भ लोक का क्षेत्र उत्तरीय अमेरिका क्षेत्र से अधिक विस्तृत है। पृथ्वी की सतह से ८०० मील नीचे एक नवीन ससार की खोज मानव इतिहास की महानतम खोज है, जिसमे लाखो उच्चतर बुद्धिमान लोग निवास करते हैं।

—मोहन, वाटिया "चचल" जैनभारती, ७ नवम्बर, १९६५

२१. दृश्यमान जगत की आबादी

१ अनुमान है कि पत्थर युग मे इस दुनियाँ की जनसंख्या एक-डेढ करोड थी। दो हजार वर्ष पूर्व क्राइस्ट के युग मे यह जनसख्या २० करोड हो गई। ईसवी सन् १६५० मे पचास करोड, १७५० मे सत्तर करोड, १८५० मे करीब एक अरब, १६०० मे डेढ अरब और १६६० मे डेढ से तीन अरब हो गई।

—जैनभारती, अक २३

२ सयुक्त राष्ट्र सघ की रिपोर्ट के अनुसार सन् १६६३ के मध्य तक विश्व की आबादी ३ अरब १८ करोड़ थी।

—हिन्दुस्तान २४ अक्टूबर, १६६३

३. वर्ल्ड रेडियो टी वी हैंडबुक १६७१ सस्करण के अनुसार वर्तमान विश्व की जनसंख्या ३,५२,८७,७०,५५८ है। (कुछ देशो की जनसख्या उपलब्ध नही हो सकी है।)

४ विश्व मे प्रति मिनट १२५, प्रतिदिन एक लाख ८० हजार, प्रति मास ५० लाख और प्रति वर्ष ६ करोड ४८ लाख मनुष्य बढते हैं।

—नवभारत ६ दिसम्बर १६६५

५ विश्व मे प्रति घटा १३५०० मनुष्य पैदा होते है और ६५०० मरते हैं।

—हिन्दुस्तान, २८ अगस्त, १६६६

६. विश्व में प्रति मिनट ५९, प्रतिदिन ८५ हजार और प्रतिवर्ष ३ करोड **गर्भपात** कराये जाते है।

—नवभारत, ७ सितम्बर, १९७१

७. विश्व के महासागर एव महाद्वीप—

१. वैज्ञानिको की दृष्टि मे इस दृश्यमान पृथ्वी के धरातल का १/३ भाग स्थल है और २/३ भाग जल है। स्थल के ७ बडे-बडे खण्ड है जिन्हे महाद्वीप कहते है तथा जल के ५ बडे-बडे खण्ड है, जिन्हे महासागर कहते है।

२.

महासागर के नाम	क्षेत्रफल वर्गमीलो मे
१—प्रशान्त महासागर	६,३८,०१६६८
२—अन्ध महासागर	३,१८,३९,३०६
३—हिन्द महासागर	२,८३,५६,२७६
४—उत्तरी ध्रुव महासागर ५—दक्षिणी ध्रुव महासागर (आर्कटिक महासागर)	५४,४०,१९७

३.

महाद्वीपो के नाम	क्षेत्रफल (वर्गमील)	जनसख्या (७०)
१—एशिया	१,७४,६१,५८३	१,९६,९१,६५,७८९
२—अफ्रीका	१,१९,९६,५ २	३४,०९,८१,६९९
३—यूरोप	३५,२५,७५५	७०,२४,९६,६४५
४—उत्तरी अमेरिका ५—दक्षिणी अमेरिका	९३,५७,०२६ ६८,६८,०९८	४९,६१,२४,७९७
६—आस्ट्रेलिया	३३,०३,००२	२,००,०१,६२८
७—अटार्कटिका	५१,००,०००	आबाद नही है।

[महाद्वीपो के निकटवर्ती देशों की जनसंख्या उन-उन महाद्वीपों के साथ जोडी गई है, जिन-जिनके वे विशेष निकट हैं।]

४. **महाद्वीपो का संक्षिप्त परिचय :—**

● **एशिया**—यह सबसे वडा महाद्वीप है। इसमे लगभग सभी प्रकार की जल-वायु, वनस्पति, जीव-जन्तु और मनुष्य मिलते है। यूरोप भी वास्तव मे इसो महाद्वीप का एक वडा पश्चिमी प्रायद्वीप है।

यह पूर्वी गोलार्द्ध (पुरानी दुनिया) मे भूमध्य रेखा से उत्तरी ध्रुव देश तक स्थित है। इसके उत्तर मे उत्तरी ध्रुव सागर, पूर्व में प्रशान्तमहासागर दक्षिण मे हिन्दमहासागर और पश्चिम मे रक्तसागर, अफ्रीका, रूमसागर, कृष्ण-सागर, कैस्पियनसागर, यूरालपर्वत और यूरोपमहाद्वीप है।

● **अफ्रीका**—एशिया के वाद अफ्रीका ससार के शेप महाद्वीपो मे सबसे वडा है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह एशिया का दो तिहाई है, लेकिन इसकी आवादी एशिया का कुल साढे पाँचवा हिस्सा है। एशिया और यूरोप इसके निकट के पडोसी हैं। अफ्रीका और यूरोप को जिव्राल्टर-जलसन्धि अलग करती है, तथा अफ्रीका और एशिया को स्वेज-थल सधि मिलाती है।

अफ्रीका के उत्तर मे कर्क रेखा के निकट ससार का सबसे वडा मरुस्थल सहारा है। दक्षिण मे मकर रेखा के निकट कालाहारी मरुस्थल है। इस महाद्वीप मे विक्टोरिया, टागानीका आदि झीले तथा नील, कान्गो आदि नदिया हैं।

इस महाद्वीप के अन्तर्गत मिश्र देश मे सन् १८६६ में स्वेज स्थल-डमरूमध्य[1] को काट कर १६० किलोमीटर लम्बी जहाजी-नहर बनाई गई। उसका नाम स्वेज नहर है। वह रक्तसागर और रूमसागर को मिलाती है। उसके बनने से पहले यूरोप से भारत आदि पहुचने के लिये सारे अफ्रीका महाद्वीप का चक्कर लगाना पडता था। अब ७००० किलो मीटर की बचत हो गई है।

- **यूरोप**—महाद्वीप यूरोप एशिया के पश्चिम मे और अफ्रीका के उत्तर की ओर स्थित है। वास्तव मे यूरोप और एशिया एक ही महान् भू भाग है, जिसे यूरेशिया कहते हैं। यूरोप के उत्तर मे उत्तरी ध्रुव सागर है, दक्षिण मे रूम सागर, कृष्ण सागर और काफ पर्वत है, पश्चिम की ओर अन्ध महासागर है और पूर्व में कैस्पियन सागर, यूराल पर्वत और एशिया महाद्वीप है। यह महाद्वीप आस्ट्रेलिया को छोडकर शेष सभी महाद्वीपो से छोटा है परन्तु धन-सम्पत्ति, व्यापार, शिक्षा-दीक्षा और सामाजिक उन्नति की दृष्टि से ससार भर मे सबसे प्रथम स्थान पर है।
- **उत्तरी अमेरिका**—यह संसार के सात-महाद्वीपो मे तीसरा सबसे बडा महाद्वीप है। सिर्फ एशिया और अफ्रीका ही क्षेत्र मे इससे बडे हैं। जनसंख्या की दृष्टि

नोट १ स्थल डमरूमध्य—ऐसे तंग भू भाग को कहते हैं, जो दो बडे भू भागों को जोडता है।

से भी इसका नम्बर एशिया और यूरोप के बाद तीसरा है। .. उत्तरी अमेरिका अनेक देशो मे बटा हुआ है। उनमे सबसे बडा कनाडा है। उसके बाद सयुक्त राज्य अमेरीका है। (जिसके अन्तर्गत ५० राज्य हैं। इसीलिए इसके राष्ट्रध्वज पर ५० सितारे लगाये गये हैं।) अन्य देश काफी छोटे है।

- **दक्षिणी अमरीका**—दक्षिणी अमरीका महाद्वीप उत्तरी अमरीका से छोटा हैं, किन्तु यूरोप से लगभग दुगना है। दक्षिणी अमरीका छोटे-बडे अनेक देशो मे विभक्त है। इनमे सभी तरह के देश हैं। सबसे बडा देश ब्राजील जो सबसे छोटे देश फ्रेंच गायना से लगभग २००० गुना है। इन देशो मे स्पेनी और पुर्तगाली भाषाओ का प्रयोग होता है। ये दोनो ही भाषाएँ लैटिन भाषा से निकली हैं। इसीलिए इन्हे लातिन-अमरीकी देश कहा जाता है।

- **मध्य अमरीका**—उत्तरी अमरीका का मेक्सिको से दक्षिण वाला पतला-सा भाग दक्षिणी अमरीका तक चला गया है। इस भाग को मध्य अमरीका कहते है। मध्य अमरीका मे मेक्सिको आदि अनेक देश है। लगभग दस मील चौडी जमीन की पट्टी, जिसमे से होकर **पनामा**नहर बहती है, अमेरिका के अधिकार मे है। मध्य अमेरिका के अधिकतर निवासी पूर्ण या आशिक रूप से इंडियन-आदिवासी हैं।

- **आस्ट्रेलिया**—यूरोप वालो को आस्ट्रेलिया महाद्वीप का पता सब महाद्वीपो के अंत मे लगा। सन् १७७० मे कप्तान

कुक ने इसकी खोज की ! यहाँ विशेष रूप से गेहू की खेती होती है और सोने-तांबे-चाँदी शीशे आदि की खाने हैं तथा भेडो को वडे पैमाने पर पाला जाता है। कुल मिलाकर यहाँ १३००००००० भेडे है। दुनियाँ की एक तिहाई ऊन आस्ट्रेलिया मे ही आती है।

—नवीन राष्ट्रीय एटलस तथा सचित्र विश्वकोश
भाग १० के आधार से—

८ वर्तमान विश्व के देश, उनकी जनसंख्या एव राजधानियाँ—

१ (एशिया—जनसंख्या १,६६,६१,६५,७८६)

	देश	जनसख्या	राजधानी
१	अफगानिस्तान	१,६०,००,०००	कावुल
२	वहराइन	२,०२,०००	वहराइन
३.	ब्रुनेई	१,५०,०००	ब्रुनेई
४	वर्मा	२,६३,६०,०००	रगून
५	कम्बोडिया	६६,६०,०००	नोमपेन्ह
६	श्रीलका	१,२५,००,०००	कोलम्बो
७	चीन (जनवादी)	७४,००,००,०००	पेकिंग
८.	चीन (गणतन्त्र ताइवान)	१,४४,७६,४७८	ताईपेई
९.	होंगकोंग	४०,२६,७००	हांगकोंग
१०.	भारत	५३,७०,००,०००	नई दिल्ली
११.	इडोनेशिया	११,३०,००,०००	जकार्ता
१२.	ईरान	२,६६,६५,०००	तेहरान

१३	ईराक	८६,३६,-००	वगदाद
१४	इजरायल	२६,७५,७३५	जेरूशलम
१५	जापान	१०,२०,००,०००	टोकियो
१६.	जॉर्डन	२१,४०,०००	अम्मान
१७	कोरिया (उत्तरी)	१,३२,५०,०००	प्योगयाग
१८	कोरिया (दक्षिणी)	३,१८,००,०००	सियोल
१९	कुवेत	५,४१,०००	कुवेत
२०.	लाओस	३०,००,०००	वियेनतियान
२१	लेबनान	२७,३४,४४५	वैरुत
२२	मकाऊ	२,६६,०००	मकाऊ
२३	मलयेशिया	१०,३,९०,०००	कुआलालम्पुर
२४	मालदीव	१,१०,७७०	माले
२५	मगोलिया	१,१,७५,०००	ऊलानवातर
२६	मस्कट एव अमन		ओमन
२७	नेपाल	१,१,०४४,०००	काठमांडू
२८	पाकिस्तान	११,२०,००,०००	रावलपिंडी[1]
२९	फिलिपिन्स	३,७०,००,०००	मनीला
३०	क्वेटर	८१,०००	डोहा
३१.	र्यूक्यू द्वीपसमूह	९,६८,०००	ओकिनावा
३२	सऊदी अरब	७२,००,०००	रियाध
३३	सिगापुर	२१,७५,०००	सिंगापुर
३४.	दक्षिण यमन (गणराज्य)	१३,००,०००	अदन
३५.	सीरिया	६०,३६,०००	दमिश्क

1 अभी इस्लामाबाद

३६.	सवाह (मलयेशिया)	६,१६,०००	कोटाकिनवालू
३७	सारावाक(मलेशिया)	९,४५,०६१	कूचिंग
३८	थाइलैंड	३३,७००,०००	बेंकाक
३९.	तिमोर(पुर्तगाली टापू)	५,९०,०००	डिलि
४०	आबूधावी (ब्रिटिशउपनिवेश)	८३,०००	आबूधावी
४१	सारजाह (ब्रि उ.)		सरजा
४२	दुवाई टापू (ब्रि. उ.)		दुवाई
४३.	टर्की	३,३५,४५,०००	अकारा
४४.	वियतनाम उत्तरी	२,१०,००,०००	हनोई
४५.	वियतनाम (दक्षिणी)	१,७४,१०,०००	सेगोन
४६	यमन	६०,००,०००	साना

२. (अफ्रीका—जनसख्या ३४९९७१६९९)

१	अफार्स एन्ड इसाम (फ्रेंच)	१,५०,०००	जिवूटी
२	अलजीरिया	१,२९.४८ ०००	अल्जीयर्स
३	अगोला	५३,६२,०००	लुआन्डा
४	एसेंसियनद्वीप (ब्रिटिश)	१,६७२	एसेंसियन
५	वोट्सुम्वाना	६,२०,०००	गैवरुन
६	वुरुण्डी	३४,७५,०००	वुजुम्वरा
७	कैमेरून	५५,७०,०००	याउण्डा
८	केनेरीद्वीप ममूह	१२,५०,०००	टेनेरिफ
९	केपवर्ड द्वीपसमूह	२,५४४१४	प्राईआ
१०.	मध्यअफ्रीकन गणराज्य	१५,००,०००	वागुई

११.	चाड	४०,०२,०००	फोर्टलामी
१२.	कोमरो द्वीप समूह	२,६१,३८२	कोमोर्स
१३	कागो जनवादी गणतंत्र	१,६८,००,०००	किनशाशा
१४	कागो गणराज्य	८,८०,०००	ब्राजाविले
१५	सयुक्त अरब गणराज्य	३,२०,००,०००	काहिरा
१६	गिनी गणराज्य	२,८२,०००	फर्नान्डोपो
१७	इथियोपिया	२,३५,००,०००	आदिस अवावा
१८	गैवन	४,८०,०००	लिब्रेविले
१९	गौम्बिया	३,५१,०००	वार्थर्स्ट
२०	घाना	८५,०२,०००	अकरा
२१	गिनी पुर्तगीज	५,५०,०००	विसाउ
२२	गिनी	३८,००,०००	कोनाक्री
२३.	आइवरी कोस्ट	४१,२०,०००	आविदजान
२४	केन्या	१,१०,००,०००	नैरोवी
२५	लिसोथो	६,१२,०००	मासेरू
२६	लाइवेरिया	११,३२,५००	मोनरोविया
२७	लिविया	१८,०८,०००	त्रिपोली
२८	मेडैरा	२,७०,०००	फूंचल
२९	मेलेगासी मेडागास्कर	७०,००,०००	तेनानारिव
३०	मलावी	४४,६८,०००	ब्लान्टीयर

३१	माली	४८,००,०००	बोमाको
३२	मौरीतानिया	१५,००,०००	नोवाकचोट
३३	मारीशश	८,२०,०००	मारीशश
३४	मोरक्को	१,५०,००,०००	रवात
३५	मोजाम्बिक	७२,७५,०००	लोरेंममार्किस
३६	नाइजर	४०,००,०००	नियामी
३७	नाइजीरिया	६,२६,५०,०००	लागोस
३८	र्यूनियन	४,२५,०००	लारियूनियन
३९	रोडेशिया	५१ ८८,४००	सालीसवरी
४०	रवाण्डा	३५,००,०००	किगाली
४१	सहारा	·	आइडन
४२	साओटॉम एप्रिंसिप	६८,५००	साओटॉम
४३	सेनेगाल	३६,७२ ०००	डकार
४४.	सिचेलीज	४९,५००	विक्टोरिया
४५.	सियरोलियोन	२३,००,०००	फ्रीटाउन
४६	सोमाली	२७,४५,०००	मोगाडीशू
४७	दक्षिण अफ्रीका	१,९२,००,०००	जोहान्सवर्ग
४८	सेंटहेलेना	४,८१५	सेंटहेलेना
४९	सूडान	१,४७,७५,०००	ओमडर्मन
५०	स्वाजीलेंड	४,००,०००	मबावान
५१	ताजानिया	१,२६,००,०००	दारेस्सलाम
५२	टोगो	१६,५५,९१६	लोम
५३.	ट्रिस्टन-डा-कुन्हा	...	ट्रिस्टन-डा-कुन्हा
५४	ट्यूनीशिया	४६,६०,०००	ट्यूनिश

५५	यूगाडा	८१,४०,०००	कम्पाला
५६	अपरवोल्टा	५१,५६,०००	ओगाडोगू
५७	जाम्विया	४०,६४,०००	लुमाका
५८	डहोमी	२५,७२,०००	काटोनू

३ यूरोप–जनसख्या ७० २४,६६,६४५

१	अल्वानिया	२०,२०,०००	तिराना
२	अण्डोरा	१७,३२०	अण्डोरा
३	आस्ट्रिया	७३,६१,०००	वियेना
४	अजोर्स (पुर्त० उप०)	३,५०,०००	अजोर्म
५	वेल्जियम	९६,६१,०००	व्रूमेल्स
६	वलगारिया	८४,७६,२०६	सोफिया
७	साइप्रस	६,३५,०००	निकोसिया
८	चेकोस्लोवेकिया	१,४४,७४,७०५	प्राग
९	डेन्मार्क	४६,०७,०००	कोपेनहैगन
१०	फारोई द्वीपसमूह (डेनिश)	३८,५००	तोरशावन
११	फिनलैण्ड	४६,९५,०००	हेलसिंकी
१२	फ्रास	५,०७,००,०००	पेरिस
१३	जर्मनी (पश्चिमी)	६,१४,२६,०००	वोन
१४	जर्मनी (पूर्वी)	१,७०,०५,०००	वर्लिन
१५	जिब्राल्टर	२५,३००	जिब्राल्टर
१६	ग्रेट ब्रिटेन	५,५५,२१,२००	लन्दन
१७	ग्रीस (यूनान)	८६,००,०००	एथेन्स
१८.	हालैंड	१,३०,३२,४४७	हिल्वरसम

१९	हगरी	१,०३,००,०००	बुडापेस्ट
२०.	आइसलैंड	२,०३,३९५	रेइकजावेक
२१.	आयरलैंड	२९,२२,०००	डब्लिन
२२	इटली	५,४६,०१,९८३	रोम
२३.	लक्सम्बर्ग	३,३९,१००	लक्सम्बर्ग
२४	माल्टा	३,२५,५१३	माल्टा
२५.	मोनाको	२३,१००	मोन्टेकारलो
२६	नार्वे	३८,६६,४६८	ओस्लो
२७.	पोलैंड	३२,७२७,१००	वारसा
२८.	पुर्त्तगाल	९५,०५,०००	लिस्बन
२९.	रूमानिया	२,००,००,०००	बुखारेस्ट
३०	सानमारिनो	.	सानमारिनो
३१.	स्पेन	३,३५,००,०००	मेड्रिड
३२.	स्वीडन	८०,५०,२०८	स्टाकहोम
३३.	स्विट्जरलैंड	६२,००,०००	बर्न
३४.	सोवियतरूस	२४,००,००,०००	मास्को
३५.	वाटिकन	१,०००	वाटिकन
३६	यूगोस्लाविया	२,०५,७३,०००	बेलग्रेड

४. उत्तरी अमेरिका–जनसंख्या २२,४४,५६,१००

१	बरमूडा (ब्रिटिश)	५७,०००	हेमिल्टन
२	कनाडा	२,१३,७७,०००	ओटावा
३	ग्रीनलैंड	४०,६००	गुडथाब
४	सेंटपियरेटमाइक्वेलन (फ्रेन्च)		

५	संयुक्त राज्य अमेरिका	२०,२६,७६,०००	वाशिंगटन

५. दक्षिणी अमेरिका—जनसख्या १८,२६,१७,२०८

१	अर्जेन्टाइना	२,३६,२०,०००	ब्यूनसआयर्स
२	बोलिविया	४४,४१,०००	लापाज
३	ब्राजील	६,१०,००,०००	रियोडिजनेरो
४	चिलो	६३,५२,०००	सेंटियागो
५	कोलविया	१,६८,२८,०००	बोगोटा
६	इक्वेडोर	५७,००,०००	क्विटो
७	फाकलेंड द्वीपसमूह	२,०६८	स्टानले
८	गायना	७,१८,११०	जार्ज टाउन
९	फ्रेंच गायना	४५,०००	कायेने
१०	पैरागुए	२२,३५,५००	असुन्सियन
११	पेरू	१,२७,७५,०००	लीमा
१२	सुरीनाम	३,७५,५००	पैरामेरिबो
१३	यूरुग्वे	२८,२५,०००	मोंटिविडियो
१४.	वेनुजुएला	६७,००,०००	कैरेकस

६. मध्य अमेरिका एव केरेबियन द्वीप जनसख्या—८,६०,५१,४८६

१	कोस्टारिका	१६,६५,०००	सानजोस
२	अलसल्वाडोर	३२,६७,५००	सनसल्वाडोर
३	ग्वाटेमाले	४८,६५,०००	ग्वाटेमाला
४	होंडुरास (ब्रिटिश)	१,२०,०००	बेलिज
५	होंडुरास	२५,३६,०००	तेगूसिगल्पा

६	मेक्सिको	४,६०,०००००	मेक्सिको
७	निकारागुआ	१८,४४,०००	मानागुआ
८	पनामा	१३,७३,०००	पनामा
६	वहामास	१,६८,०००	नसाऊ
१०	वारवडोस	२,५३,०००	वारवडोस
११	क्यूवा	८१,१०,०००	हवाना
१२	डोमिनिकन (रिपब्लिको)	४०,११,५८६	सेंटोडोमिंगो
१३	गुआडेलूप	३,३६,०००	अर्नोविले
१४.	हैटी	४६,७७,०००	केपहेटियन
१५	जमैका	१६,१५,०००	किंग्सटन
१६	लीवार्ड द्वीप समूह	१,७५,०००	अटीगुआ
१७	मार्टीनीक्यू	३,३५,०००	फोर्ट डिफाम
१८.	नेदरलैण्ड्स एंटिल्स	२,१५,०००	वोनारी
१६	प्यूरटोरिको	२७,००,०००	हाटोरे
२०	ट्रिनिडाड एंड टोवेगो	१०,३१,०००	पोर्ट ऑफ स्पेन
२१	टर्क एन्ड केकस द्वीप समूह	६,८००	ग्रैंडटर्क
२२	वर्जिन द्वीपसमूह (ब्रिटिश)	६,६०००	टोर्टोला
२३	वर्जिन-द्वीपसमूह (अमेरिकन)	६१,०००	सेंट टामस
२४	विंडवार्ड-द्वीपसमूह	३,६३,०००	ग्रैनेडा
२५	एंगुइला	७,०००	एंगुइला

—वर्ल्ड रेडियो टी. वी. हैंडबुक १९७१ संस्करण

७ आस्ट्रेलिया एव प्रशान्त-महासागरीय-देश

जनसंख्या–२,००,०१,६२८—

देश	जनसख्या	राजधानी	
१ आस्ट्रेलिया	१,२५,५१,३००	केनवरा	
२ कुक्द्वीपसमूह	२०,६५०	रारोटोगा	
३. फिजी	५,०७,०००	सूवा	
४ गिलवर्ट एव एलिम द्वीप समूह (अमेरिकन)	५५,२००	तारावा	
५. गुआम	१,२०,०००	गुआम	अमेरिका के अधीनस्थ
६ हवाई	८,४१,०००	होनोलूलू	अमेरिका के अधीनस्थ
७ माइकोनेशिया	९६,०००	[कई है]	
८ टोगा	८१,५००	न्युकुओल्फा	
९ न्यू केलेडोनिया (फ्रेंच)	९५,०००	नोमिया	
१० न्यू हेब्राइड्स	८०,५००	विला	
११ न्यूजीलैण्ड	२८,१०,००	वेलिगटन	न्यूजीलैंड के अधीन
१२ नाऊरू	६,६०३	नाऊरू	न्यूजीलैंड के अधीन
१३ नीयूद्वीप	५,३५०	नीयूद्वीप	न्यूजीलैंड के अधीन
१४ नोरफो के द्वीप	१,५२५	किगस्टन	न्यूजीलैंड के अधीन
१५ पापुआ एव न्यू गिनीया (आस्ट्रेलिया)	२३,००,०००	कोनेडेबू	
१६ समोआ	२७,०००	पागोपागो	अमेरिका के अधीन
१७ समोआ (पश्चिमी)	१,४६,०००	आपिया	

१८ सोलोमन द्वीपसमूह (ब्रिटिश)
१,५२,००० होनियारा
१९. ताहिती (फ्रेंच) १,०५,००० पापीति

८ अंटार्कटिका—

इसमे कोई आबादी नही है। इसके निकटवर्ती नार्वे देश मे स्थित नोर्डकिन अन्तरीप मे छ महीने दिन-रात सूरज चमकता रहता है और ६ महीने सूरज दिन मे भी दिखाई नही देता।

● उपरोक्त गणना के अनुसार वर्त्तमान विश्व मे २०३ राष्ट्रो की स्थिति इस प्रकार है—

एशिया मे ४६, अफ्रीका मे ५८ यूरोप मे ३६, उत्तरी, दक्षिणी एवं मध्य अमेरिका मे ४४ एव आस्ट्रेलिया मे १९। (सभव है कि कई राष्ट्र गणना मे नही भी आ सके हो।)

९. वर्तमान विश्व की लम्बी नदियाँ—

क्र०	नदी	लम्बाई (मीलो मे)
१	नील (मिश्र)	४०३७
२	मिसीसिपी (उ० अमेरिका)	३९८३
३	अमेजन (ब्राजील)	३६९०
४.	यागटीसीक्याग (चीन)	३२००
५.	ओव (सोवियत सघ)	३२००
६	कागो (कागो)	३०००
७	लीना (रूस)	३०००
८.	येनिसेई (सोवियत संघ-रूस)	२८००
९.	अमूर (सोवियत सघ चीन)	२८००

१०	परानाला प्लाता (ब्राजील-अर्जेन्टीना)	२७२०
११.	वोल्गा (रूस)	२४००
१२	डैन्यूब (यूरोप)	१७२५
१३.	सिंध (पाकिस्तान)	१७००
१४	ब्रह्मपुत्र (भारत)	१६८०
१५.	गंगा (भारत)	२५००

—सचित्र विश्वकोश भाग १ तथा हिन्दुस्तान २१-२-७१

१० भूगोल के रिकार्ड—

१. सबसे बड़ा महाद्वीप	एशिया	(१,७४,६१,५८३ वर्गमील)
२ ,, ,, समुद्र	प्रशांत महासागर	(६,३८,०१,६६८ व मी)
३. ,, ,, द्वीप	ग्रीनलैंड	(८,४६,७४० व मी)
४ ,, ,, देश (आबादी मे)	चीन	(७० करोड़)
५ ,, ,, ,, (क्षेत्रफल मे)	रूस	(८६,०२,७०० व. मी)
६ सबसे घनी आबादीवाला क्षेत्र	जावा	(८१७ व्यक्ति प्रति वर्गमील)
७. सबसे ऊँचा देश	तिब्बत	
८ सबसे बड़ा शहर (क्षेत्रफल मे)	लन्दन	(७०० व मी)
९ सबसे बड़ा शहर (आबादी मे)	न्यूयार्क	(१,१५,५०,६००)
१० ,, ,, बन्दरगाह	राटरडम (हालैंड)	(१,१०,००० जहाजो का प्रतिवर्ष आवागमन)
११ सबसे बड़ी नदी	नील	(४,०३७ मील लम्बी)
१२ ,, ,, झील	सुपीरिअर (उ. अमेरिका)	
१३ सबसे बड़ा पार्क	स रा अमेरिका	(१३,५०० व मी क्षेत्र फल)
१४ ,, ,, रेगिस्तान	सहारा	(२,००,००० व. मी क्षे फ)
१५ सबसे ऊँचा पर्वत शिखर	माउण्ट एवरेस्ट	(२९,०२८ फीट)
१६. सबसे लम्बा रेलमार्ग	स रा. अमेरिका	(२,२४,८१६ मील)

१७	सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन	न्यूयार्क	(४७ प्लेटफार्म)
१८	,, ,, प्लेटफार्म	सोनपुर (बिहार)	
१९.	सबसे बड़ी रेलवे सुरंग	सिम्पलन (एलप्स)	(१२॥ मील)
२०	सबसे बड़ा जहाज	क्वीन एलिजाबेथ	(८५ हजार टन)
२१	सबसे ऊँचा हवाई अड्डा	लद्दाख (भारत)	
२२	सबसे ऊँची सड़क	मनाली-लेह मार्ग (भारत)	
२३	सबसे ऊँची इमारत	एम्पायर स्टेट बिल्डिंग न्यूयार्क	(१४७२ फीट)[1]

1—इस भवन में १०२ मंजिलें हैं। इसका मुख्य भाग ८५ मंजिलों का है। उसके ऊपर १७ मंजिलों की पतली सी मीनार है। सन् १९५० में इस पर २२२ फुट ऊँची टेलीवीजन-प्रसारण-मीनार और बनाई गई। इसकी नींव सड़क की सतह से ५५ फुट नीचे एक मजबूत चट्टान पर रखी गई है। इस भवन के बनाने में केवल इस्पात ही ६०,००० टन से ज्यादा लगा था। पूरे भवन का वजन लगभग ३,६५,००० टन है। इसमें इतनी जगह है कि किसी भी समय इसमें ८०,००० लोग रह सकते हैं।

—सचित्र विश्वकोश भा. ४, पृष्ठ २२

२४	सबसे बड़ा पुस्तकालय	लेनिन स्टेट लाइब्रेरी (मास्को)[1]	
२५.	सबसे बड़ी मीनार	पेरिस (फ्रांस)	
२६.	,, ,, दीवार	चीन की दीवार	(१,५०० मील लम्बी)
२७	सबसे बड़ा राजमहल	मैड्रिड	
२८.	,, ,, सिनेमाघर	न्यूयार्क	(६००० सीटें)
२९	,, ,, अजायबघर	ब्रिटिश म्युजियम (लंदन)	
३०	,, ,, भवन	वेटिकन सिटी (पोप का)	
३१	,, ,, गुम्बज	बीजापुर का गोल गुम्बज (भारत)	
३२	सबसे बड़ी हीरो की खान	किम्बर्ले (द. अफ्रीका)	
३३	,, ,, दूरबीन	माउन्ट विल्सन (अमेरिका)	

—सर्जना, सचित्र विश्वकोश, व्यापारिक आर्थिक भूगोल (सक्सेना-हुक्कू) तथा विज्ञान के नये आविष्कार के आधार से।

१—इसमें १६० भाषाओं की १ करोड़ १० लाख पुस्तकें हैं। इस लाइब्रेरी के तख्ते एक के बाद एक रखने से वे १३० माइल स्थान घेरते है।

११ संसार के बड़े शहर और उनकी आबादी

शहर	देश	आबादी
न्यूयार्क	यू एस ए.	१,१५,५०,६००
न्यूयार्क (शहर)		७६,६४,२०७
तोकियो	जापान	१,१३,५०,०००
तोकियो (शहर)		६०,१२,०००
ब्यूनस आयर्स	अर्जेण्टीना	६०,७०,०००
ब्यूनस आयर्स (शहर)		३५,४६,०००
पेरिस	फ्रांस	८१,६६,७४६
पेरिस (शहर)		२५,६०,७७१
लन्दन	ग्रेट ब्रिटेन	७७,६३,८००
मास्को	रूस	७०,६१,०००
मास्को (शहर)		६६,४२,०००
कलकत्ता	भारत	७०,५०,३६२
कलकत्ता (शहर)		३१,४१,१८०
शंघाई	चीन	६६,००,०००
लास एंजिल्स	यू एस. ए.	६८,५६,६००
लास एंजिल्स (शहर)		२४,७६,०१५
लॉगबीच		६८,५६,६००
लॉगबीच (शहर)		३४४,१६८
शिकागो	यू एस ए.	६८,१५,३००
शिकागो (शहर)		३५,५०,४०४
बम्बई	भारत	५६,६८,५४६
फिलडेल्फिया	यू एस. ए.	४८,२८,५००

फिलडेल्फिया (शहर)		२०,३२,४००
काहिरा	सं अरब गणराज्य	४२,२५,७००
रिओडेजेनरिओ	ब्राजील	४२,०७,३२२
पीकिंग	चीन	४०,१०,०००
लेनिनग्राद	रूस	३६,५०,०००
लेनिनगाद (शहर)		३५,१३,०००
सियोल	कोरिया (द)	३७,६४,६५६
दिल्ली	भारत	३६,२६,८४२
दिल्ली (शहर)		३२,७६,६५५
मेक्सिको	यू एस ए	३४,८३,६४६
ओसाका	जापान	३०,७८,०००

जिन शहरो के नाम दो बार लिखे हैं, उन मे प्रथम के साथ दी गई जब संख्या मे वहाँ के अन्तर्गत आनेवाली ग्रामीण आबादी भी सम्मिलित है।

(साप्ताहिक हिन्दुस्तान, १० अक्तूबर, १६७१)

१२. वर्तमान विश्व के निरक्षर और अंधो की संख्या

१ **निरक्षर**--यद्यपि पिछले बीस वर्षो मे ६० करोड व्यक्तियो को साक्षर बनाया गया है, तथापि यूनेस्को-रिपोर्ट के अनुसार दुनिया मे आज निरक्षरो की सख्या ७८,३०,००,००० है। उक्त रिपोर्ट का यह भी कहना है कि सर्वोत्तम प्रयासो के बावजूद अगले ३० वर्षो मे भी दुनिया मे ६५,००,००,००० लोग निरक्षर ही बने रहेंगे।

निरक्षरता व्यापक रूप मे, अफ्रीका, एशिया और लेटिन

अमरीका में डेरा जमाये है। ये वे ही महाद्वीप है, जो विदेशी-प्रभुत्व के अन्तर्गत थे।

—हिन्दुस्तान, ३ सितम्बर १९७१

२ अन्धे—आज के विश्व मे अधो की कुल सख्या १ ५ करोड है, जबकि अकेले भारत मे उनकी सख्या ४५ मे ५० लाख के लगभग है। भारतीय चिकित्सा अनुसधान परिपद् के सर्वेक्षण के अनुसार मैसूरराज्य मे अधो की सख्या सबमे अधिक है। सर्वेक्षण से पता चला है कि भारत मे अन्धेपन का मुख्य कारण रोहा, कोदवा, मोतियाविन्द, ग्लाकोमा, अलसर जैसी बीमारियो के अलावा पौष्टिक खाद्य की कमी भी है।

—हिन्दुस्तान ६ अक्टूबर १९७१

१३. विश्व के प्रलयकारी भूकम्प

१. एक अमरीकी सर्वेक्षण के अनुसार पिछली ४ शताब्दियो मे कलकत्ता को, भूकम्प के कारण, सर्वाधिक विनाश सहना पडा है। कलकत्ता क्षेत्र मे ११ अक्टूबर १९३७ मे आये भूकम्प मे ३,००,००० व्यक्ति मौत के शिकार हुये थे।

२. विश्व के इतिहास मे सबसे भयानक भूकम्प २४ जनवरी १९५५ई को चीन के शासी नामक स्थान मे आया था, जिसमे ८,३०,००० व्यक्ति मरे थे। इस शताब्दी के आरम्भ मे पुन चीन एक भयकर भूकम्प का शिकार हुआ। १६ दिसम्बर १९२० को कानू प्रान्त मे आये भूकम्प मे १,८०,००० व्यक्ति मौत के शिकार हुए थे।

३ भारतीय द्वीप मे इस शताब्दी का सबसे अधिक विनाश-कारी भूकम्प क्वेटा मे ३१ मई १९३५ को आया था। यह स्थान अब प पाकिस्तान मे हैं। इसमे ६०,०००व्यक्ति मारे गये थे।

४ अभी ३० मई सन् १९७० को पेरू में आया हुआ भूकम्प हाल के वर्षो मे आये हुए भूकम्पो मे सबसे अधिक विनाशकारी भूकम्प कहा जाता है। इसमे १ लाख व्यक्तियो के मरने का अनुमान है। —नवभारत टाइम्स, ५ जून १९७०

एशिया महाद्वीप मे स्थित यह भारत एक विस्तृत देश है। सन् १९४७ मे विभाजित होने के वाद भी यह संसार का सातवाँ सवसे बडा देश है। इसका क्षेत्रफल लगभग ३२,३६,१४१ वर्ग किलोमीटर है एवं इसकी स्थली-सीमा १५,१७० किलोमीटर से भी अधिक है।

इस देश के तीन नाम है—(१) भारत अथवा भारतवर्ष, (२) हिन्दुस्तान, (३) इण्डिया,। प्रसिद्ध राजा दुष्यन्त के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर ही इस देश का नाम 'भारत' पडा। ईरानियो ने इस देश को हिन्दुस्तान और ग्रीक लोगो ने इसे इण्डिया कहकर पुकारा।

—आर्थिक व व्यापारिक भूगोल द्वारा (हुक्कू-सक्सेना) पृष्ठ २६।

२. भारत की आवादी

(क) भारत की आवादी पहली शताब्दी मे दस करोड, १५वी शताब्दी मे १५ करोड, सन् १८७३ मे (जव सर्वप्रथम जन-गणना हुई) २१ करोड, सन् १९२१ मे २५ करोड, १९५१ मे ३५ करोड ५० लाख एव १९६१ मे ४३ करोड थी।

—जैनभारती अंक २३

(ख) भारत की जनसख्या (१२ अप्रेल १९७० तक) ५४ करोड, ६६ लाख ५५ हजार नौ सौ पैंतालीस है। पुरुष २८ करोड ३० लाख और स्त्रियां २६ करोड़ ३६ लाख से कुछ अधिक

हैं। विगत दस वर्षो मे (१९६१ से १९७१ तक) १० करोड ७७ लाख के लगभग जनसख्या बढी है।

(ग) गत ७० वर्षो में आबादी की वृद्धि की दर

नीचे तालिका मे १९०१ से लेकर प्रति दशाब्दि जनसख्या वृद्धि की दर दी गई है :—

वर्ष	आबादी	प्र श. वृद्धि की दशाब्दि	१९०१ के बाद से प्र श वृद्धि
१९०१	२३८३३७३१३ (सयुक्त भारत)	—	—
१९११	२५२००५४७० (सयुक्त भारत)	+५.७३	+५.७१
१९२१	२५१२३९४९२ (सयुक्त भारत)	–०.३०	+५.४१
१९३१	२७८८६७४३० (संयुक्त भारत)	+११.००	+१७.०१
१९४१	३१८५३९०६० (संयुक्त भारत)	+१४.२३	+३३.६६
१९५१	३६०९५०३६५ (बटवारे के बाद)	+१३.३१	+५१.४५
१९६१	४३९०७२५८२	+२१.६४	+८४.२२
१९७१	५४७९४५५९४५	+२४.५७	+१२९.४९

(घ) भारत मे प्रतिदिन ५० हजार से अधिक एवं प्रतिवर्ष लगभग २ करोड़ बच्चे जन्म लेते है और ८० लाख मनुष्य मरते है। अत १ करोड २ लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष बढ़ते है।

—भारतीय अर्थशास्त्र खण्ड २, पृष्ठ ६३, सन् १९७०

३. भारत गणराज्य के अन्तरवर्ती राज्य—

(क) भारत गणराज्य के १६ राज्य हैं और १० केन्द्र प्रशासित प्रदेश हैं। उनके नाम, क्षेत्रफल, जनसंख्या, राजधानियाँ, आबादी का घनत्व और भाषाएँ इस प्रकार हैं—

क्र. स.	राज्य	क्षेत्रफल (कि. मी. में)	जनसंख्या (१९७१ में)	राजधानी	आबादी का घनत्व (प्रति कि. मी.)	मुख्य भाषा
१	मध्य प्रदेश	४,४३,४००	४,१४,४६,७२८	भोपाल	९३	हिन्दी
२.	राजस्थान	३,४२,३००	२,५७,२४,१४२	जयपुर	७५	विभिन्न प्रकार की राजस्थानी तथा हिन्दी
३	महाराष्ट्र	३,०७,५००	५,०२,९५,०८१	बम्बई	१६३	मराठी
४	उत्तर प्रदेश	२,९४,३६५	८,८२,९९,४५३	लखनऊ	३००	हिन्दी, उर्दू
५	आन्ध्र प्रदेश	२,७५,२८१	४,३३,९४,९५१	हैदराबाद	१५७	तेलगू

६.	जम्मू कश्मीर	२,२२,८००	४६,१५,१७६	श्रीनगर		कश्मीरी, डोगरी उर्दू
७.	असम	?,०३,३६०	१,४८,५१,३१४	शिलांग	१४६	बंगला, असमिया
८	मैसूर	१,९२,२०४	२,९२,२४,०४६	बंगलौर	१५२	कन्नड
९.	गुजरात	१,८७,११०	२,६६,६०,९२९	अहमदाबाद	१३६	गुजराती
१०.	बिहार	१,७४,०००	५,६३,८७,२९६	पटना	३२४	हिन्दी
११.	उडीसा	१,५५,८००	२,१९,३४,८२७	भुवनेश्वर	१४१	उडिया
१२	तमिलनाडु	१,३०,३६०	४,११,०३,१२५	मद्रास	३१६	तमिल
१३	पूर्वी पंजाब	५०,३२८	१,३४,७२,[illegible]०२	चंडीगढ	२६८	पंजाबी, हिन्दी
१४	हरियाणा	४३,८६९	९९,७१,१६५	चंडीगढ	२२५	,, हिन्दी
१५.	प. बंगाल	८७,९००	४,४४,४०,०९५	कलकत्ता	५०७	बंगला
१६	केरल	३८,९००	२,१२,८०,३९७	त्रिवेन्द्रम्	५४८	मलयालम
१७	हिमाचल प्रदेश	२८,२००	३४,२४,३३२	शिमला		हिन्दी, पहाडी
१८	नागालैण्ड	१६,४५०	५,१५,५६१	कोहिमा		बंगला, असमिया
१९	मेघालय		९,८३,३३६	शिलांग		खसिया

केन्द्र-प्रशासित प्रदेश—

क्र. स	प्रदेश	क्षेत्रफल (कि मी मे)	जनसख्या (सन् ७१)	राजधानी	आबादी का घनत्व (प्रति कि. मी)	मुख्यभाषा
१	अडमान व निकोबार द्वीप समूह	८,२३०	१,१५,०९०	पोर्ट ब्लेयर		
२.	लक्षद्वीप, मिनिकाय व अमीन द्वीप समूह	२८	३१,७९८	कोजिहकोड (केरल)	९९४	पुरानी मलयालम
३	दिल्ली	१,४८६	४०,४४,३३८	नई दिल्ली	२,२५४	हिन्दी, उर्दू, पजाबी

४	मणिपुर	२२३४७	१०,६९,५५५	इम्फाल		बगला असमिया
५	त्रिपुरा	८,६२०	१५,५६,८२२	अगरतला	१४६	,, ,, ,,
६	दादरा और नगरहवेली					
		४८६	७४,१६५	सिलवासा	१५१	
७	गोआ दमन और दीव					
		३,६९३	८५७,१८०	पजिम	२२५	मराठी, गुजराती
८	पाडिचेरी	४७९	४,७१,३४७	पाडिचेरी	९८२	फ्रासीसी, तमिल
९	नेफा	८०,४८९	४,४४,७४४	शिलांग		
१०.	चडीगढ		२,५६,९७९	चंडीगढ		पजाबी

भूटान और सिक्किम पश्चिमी बगाल के उत्तर मे दो स्वाधीन हिमालयवर्त्ती राज्य है। ये विशेष सधियो द्वारा भारत गणराज्य मे सम्मिलित है। इनके क्षेत्रफलादि निम्न प्रकार हैं —

१	भूटान	१९,३०५	८,४०,०००	थिम्फू	तिब्बती से मिलती-जुलती
२	सिक्किम	२,१८५	१,८४,६००	गगटोक	सिक्किमी गोरखावाली

(विश्वकोश भाग १०, आर्थिक-व्यापारिक भूगोल तथा हिन्दुस्तान १४ अप्रेल, १९७१ के आधार से)

(ख) भारत की जनसख्या का आयु विवरण
(१९६१ के आधार पर)

आयु समूह (वर्षों मे)	कुल जनसख्या का प्रतिशत
४ वर्ष तक के मनुष्य	१५ ०
५ से १४ वर्ष तक के मनुष्य	२९ ०
१५ से २४ ,, ,, ,	१६ ७
२५ मे ३४ ,, ,, ,,	१५ ४
३५ मे ४४ ,, ,, ,,	११ ०
४५ मे ५४ ,, ,, ,,	८ ०
५५ मे ६४ ,, ,, ,,	४ ८
६५ से ७४ ,, ,, ,,	२ १
७५ से अधिक ,, ,,	१ ०
	योग १०० ०

(ग) भारत मे वैवाहिक स्थिति–

(सख्या हजारो मे)

आयु वर्ग (वर्षों मे)	विवाहित महिलाएं	विधवा महिलाएं
१० वर्ष से १४ वर्ष तक	४,४२६	३०
१५ ,, १९ ,, ,,	१२,०२२	९१
२० ,, २४ ,, ,,	१७,५५२	२८८

—भारत का आर्थिक भूगोल तथा भारतीय अर्थशास्त्र द्वितीय खण्ड पृष्ठ ५८, ५९

४	मणिपुर	२२३४७	१०,६६,५५५	इम्फाल		बगला असमिया
५	त्रिपुरा	८,६२०	१५,५६,८२२	अगरतला	१४९	,, ,, ,,
६	दादरा और नगरहवेली	४८९	७४,१६५	सिलवासा	१५१	
७.	गोआ दमन और दीव	३,६९३	८ ५७,१८०	पजिम	२२५	मराठी, गुजराती
८.	पाडिचेरी	४७९	४,७१,३४७	पाडिचेरी	९८२	फ्रासीसी, तमिल
९	नेफा	८०,४८९	४,४४,७४४	शिलांग		
१०	चडीगढ		२,५६,९७९	चडीगढ		पजाबी

भूटान और सिक्किम पश्चिमी बगाल के उत्तर मे दो स्वाधीन हिमालयवर्त्ती राज्य हैं। ये विशेष सधियो द्वारा भारत गणराज्य मे सम्मिलित है। इनके क्षेत्रफलादि निम्न प्रकार है —

१.	भूटान	१९,३०५	८,४०,०००	थिम्फू	तिब्बती से मिलती-जुलती
२	सिक्किम	२,१८५	१,८४,६००	गगटोक	सिक्किमी गोरखावाली

(विश्वकोश भाग १०, आर्थिक-व्यापारिक भूगोल तथा हिन्दुस्तान १४ अप्रेल, १९७१ के आधार से)

(ख` भारत की जनसंख्या का आयु विवरण

(१९६१ के आधार पर)

आयु समूह (वर्षो मे)				कुल जनसख्या का प्रतिशत
४ वर्ष तक के मनुष्य				१५ ०
५ से १४ वर्ष तक के मनुष्य				२६ ०
१५ से २४	,,	,,	,	१६ ७
२५ मे ३४	,,	,,	,,	१५ ४
३५ मे ४४	,,	,,	,,	११ ०
४५ मे ५४	,,	,,	,,	८ ०
५५ मे ६४	,,	,,	,,	४ ८
६५ से ७४	,,	,,	,,	२ १
७५ मे अधिक		,,	,,	१ ०
			योग	१०० ०

(ग) भारत मे वैवाहिक स्थिति–

(सख्या हजारो मे)

आयु वर्ग (वर्षो मे)	विवाहित महिलाएँ	विधवा महिलाएँ
१० वर्ष मे १४ वर्ष तक	४,४२६	३०
१५ ,, १९ ,, ,,	१२,०२२	६१
२० ,, २४ ,, ,,	१७,५५२	२४८

—भारत का आर्थिक भूगोल तथा भारतीय अर्थशास्त्र द्वितीय खण्ड पृष्ठ ५८, ५९

(४) भारत के गाँव और शहर—

(क) सन् १९६१ की जनगणना के अनुसार भारत मे ५ लाख ६६ हजार ८७८ गाँव है, जिनमे ६२ प्रतिशत व्यक्ति निवास करते है।

शहरो की संख्या २६९ है और उनमे १८ प्रतिशत व्यक्ति रहते है। —भारतीय अर्थशास्त्र, खण्ड २ पृष्ठ ५३,५४ सन् ७०

(ख) भारत के ९ महानगर और उनकी आबादी(सन् ७१)

१ कलकत्ता-७०,४०,३४५
२ बम्बई-५९,३१,९८९
३ दिल्ली-३६,२९,८४२
४ मद्रास-२४,७०,२४८
५ हैदराबाद-१७,९८,९१०
६ अहमदाबाद-२,७,४६,१११
७ बगलोर-१६४८२३२
८ कानपुर-१२,७३,०४२
८ पूना-११,२३,३९९

नोट—दस लाख से अधिक जनसख्यावाले नगर महानगर कहलाते हैं।) —हिन्दुस्तान-१४ अप्रेल ७१

(५) भारत मे बेघर और घरवाले—

सन् १९६१ की जनगणना के अनुसार भारत में ५० लाख व्यक्ति बेघर है। उनमे से ९ प्रतिशत शहरो मे रहते है। एक बम्बई मे इनकी सख्या ७९ हजार है। देश में कुल घर १० करोड ७ लाख है। उनमे ८ करोड ३ लाख परिवार रहते है। एक परिवार एक रसोई का प्रयोग करता है तथा उसके औसत ५ व्यक्ति सदस्य है। ४ करोड परिवारो के पास एक कमरा है। ३९ ८ प्रतिशत के पास-पास कमरे है। २३ ३ प्रतिशत के पास ३ या अधिक कमरे है। ५६·९

प्रतिशत लोग कच्चे गारो के मकान मे रहते है, ४४ प्र.श. के अपने घर है और ५२ प्र श किराये के मकानो मे रहते है। –हिन्दुस्तान २३ अप्रेल, १९६४

(६) भारत मे पशुधन—

सन् १९६१ की पशुगणना के अनुसार भारत मे गाय-बैल लगभग १७॥ करोड, भैसे ५ करोड, बकरिया ६॥। करोड, भेडे ४ करोड, मुर्गियाँ ११ २० करोड, ऊँट ६ लाख से अधिक और घोडे १३॥ लाख है।

(७) भारत मे दूध—

भारत मे अन्य देशो की अपेक्षा यद्यपि अधिक गाय है, किन्तु यहाँ की औसत गाय प्रतिवर्ष अन्य देशो की अपेक्षा बहुत कम दूध देती है। देखिए, नीचे की तालिका—

	देश	प्रति गाय दूध (प्रति वर्ष)		देश	प्रति गाय दूध (प्रति वर्ष)
१	नीदरलैंड्स	८,००० पौंड	४	स. रा. अमेरिका	५,६०० पौंड
२	आस्ट्रेलिया	७,००० ,,			
३	स्वीन	६,००० ,,	५	भारत	४१३ पौंड

भारत मे कुल उत्पादन का लगभग ४२ प्रतिशत भाग दूध गायो से प्राप्त होता है, ५४ प्र.श. दूध भैसो से और ३ प्र.श. दूध बकरियो से। ऊपर की तालिका से स्पष्ट है कि भारत मे प्रति गाय औसतरूप से वर्ष मे लगभग ४१३ पौंड दूध देती है। परन्तु भैंस औसतरूप से भारत मे १,१०० पौंड वार्षिक दूध देती है।

यद्यपि दूध उत्पादन की मात्रा की दृष्टि से विश्व मे सयुक्त राष्ट्र अमेरिका के बाद, भारत ही सबसे अधिक दूध उत्पादन करता है, परन्तु यहाँ की घनी आबादी को देखते हुए यह मात्रा बहुत कम है। भारत मे प्रतिवर्ष लगभग ७ करोड मन दूध होता है, जबकि 'अमेरिकन रिपोर्टर' के अनुसार सयुक्त राष्ट्र अमेरिका मे प्रतिवर्ष १ ५ अरब मन से भी अधिक दूध होता है। इस कथन के अनुसार इतना दूध होता है कि ४८२५ कि मी लम्बी, १२ मीटर चौडी और १ मीटर गहरी नदी का दूध मे सुगमता पूर्वक भरा जा सकता है।

ठीक स्वास्थ्य के लिए प्रति व्यक्ति को प्रतिदिन कम से कम १५ २० औस दूध की आवश्यकता है, किन्तु भारत में प्रति व्यक्ति को प्रतिदिन औसतन ५ ५ औस (२॥ छटाक) दूध मिलता है, जबकि अन्य देशो मे कही उसकी सातगुनी और दसगुनी से भी अधिक उपलब्धि है। देखिए, नीचे

की तालिका—

देश	उपलब्धि	देश	उपलब्धि
कनाडा	५६ औंस	डेनमार्क	४० औस
न्यूजीलैंड	५५ ,,	म ग	
आस्ट्रेलिया	५५ ,,	अमेरिका	३५ ,,
इगलैंड	४० ,,	भारत	५५ ,,

—आर्थिक व व्यापारिक भूगोल (दुबकू-सक्सेना) पृष्ठ १६४

(८) भारतीय इतिहास की प्रमुख तिथियाँ—

ईसा पूर्व—	
१ ३५००१५००	सिंधु सभ्यता
	आर्यों का भारत में आगमन आरम्भ
२ ७५००	ऋग्वेद की रचना
३ क १५००-२०००	महाभारत युद्ध
ख १०००	
	वर्द्धमान महावीर का जन्म और निर्वाण
४ ५९९-५२७	गौतम बुद्ध का जन्म और निर्वाण
५ ६५६३-४८३	भारत पर सिकन्दर का आक्रमण
६ ३२७-३२५	चन्द्रगुप्त मौर्य का शासन
७ ३२२-२९८	अशोक का शासन
८. २७३-२३२	
ईस्वी सन्—	कनिष्क का शासन[1]
९ ७८-१२३	

---

१ सम्राट कनिष्क कुषाणवंशीय था। इस वंश के लोग आक्रमणकारी के रूप में चीन के उत्तर-पश्चिम से भारत आये और उन्होंने पेशावर को अपनी राजधानी बनाया। कनिष्क कश्मीर, मगध, बंगाल, काबुल, चीन आदि देशों को जीतकर सम्राट बना एवं बौद्धधर्म स्वीकार करके भारतीय कहलाने लगा। इसके राज्य में अश्वघोष (जिनसे इसने बौद्धधर्म स्वीकार किया था), वसुमित्र एवं नागार्जुन जैसे अनेक प्रसिद्ध बौद्ध-दार्शनिक और लेखक थे। बौद्ध बनने के बाद कनिष्क ने अनेक विहारों तथा स्तूपों का निर्माण करवाया। सुप्रसिद्ध चतुर्थ बौद्ध संगीत (सम्मेलन) की योजना भी इसी ने की। इस संगीति में बौद्धधर्म पर नये भाष्य लिखे गये और बौद्धधर्म को एक नया रूप दिया गया, जो 'महायान' कहलाया।

१०	३२०-४७५	गुप्तवंश का शासन, भारतीय कला और साहित्य का स्वर्ण-युग
११	३३५-३७५	समुद्रगुप्त का शासन
१२	३७६-४१३	चद्रगुप्त विक्रमादित्य का शासन
१३	४०५-४११	फाहियान की भारत-यात्रा
१४	६०६-६४७	हर्षवर्द्धन का शासन[1]
१५	१०००-१०२६	भारत पर महमूद गजनवी के आक्रमण
१६	११९२	पृथ्वीराज की पराजय और मृत्यु
१७	१२०६	उत्तर भारत मे मुस्लिम शासन आरम्भ
१८	१२२१	भारत पर चगेजखा का आक्रमण
१९	१३९८	भारत पर तैमूरलग का आक्रमण
२०	१५५६-१६०५	अकबर का शासन
२१.	१५७६	हल्दीघाटी की लडाई
२२	१५९७	महाराणा प्रताप की मृत्यु
२३	१६००-१८५८	भारत मे ईस्ट इडिया कपनी का शासन
२४	१६०५-१६२७	जहागीर का शासन
२५	१६१०	सूरत मे अग्रेजो की पहली कोठी की स्थापना
२६.	१६२८-१६५८	शाहजहां का शासन

१ हर्षवर्धन अन्तिम हिन्दू सम्राट था। इसकी राजधानी कन्नौज थी। सम्राट स्वयं कवि था और कवियो का सम्मान भी बहुत करता था। बाणभट्ट (कादम्बरी के निर्माता) इसी के राज्य दरबार के रत्न थे।

२७.	१६५८-१७०७	औरंगजेब का शासन
२८	१७३९	भारत पर नादिरशाह का आक्रमण[२]
२९	१७८०	महाराजा रणजीतसिंह द्वारा सिक्ख राज्य की स्थापना
३०	१८५८	ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन समाप्त और ब्रिटिश सरकार का सीधा शासन प्रारम्भ
३१	१८७४	बंगाल मे भयंकर अकाल
३२	१८८५	बम्बई मे इण्डियन नेशनल कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन
३३	१९२०	लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु
३४	१९२१	महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आन्दोलन आरम्भ
३५	१९२७-२८	साइमन कमीशन का बहिष्कार, लाला लाजपतराय की मृत्यु

---

२ नादिरशाह का आक्रमण—निरंकुश क्रूर और अत्याचारी शासन के लिए प्राय 'नादिरशाही' शब्द का प्रयोग होता है। नादिरशाह फारस का शासक था और १७३९ ई० मे उसने दिल्ली पर आक्रमण करके वहाँ कत्लेआम करवाया था। दिल्ली से वह पन्द्रह करोड रुपये नकद तथा पचास करोड रुपये से भी अधिक के रत्न-आभूषण आदि लूटकर ले गया था जिनमे विश्व-विख्यात हीरा 'कोहेनूर' और शाहजहाँ का रत्न-जटित सिंहासन 'तख्ते-ताऊस' भी था।

—सचित्र-विश्वकोष ६, पृष्ठ ४६

३६	१६२६	काग्रेस द्वारा लाहौर अधिवेशन मे पूर्ण स्वराज्य की घोपणा
३७	१६४२	"भारत छोडो" आदोलन
३८.	१६४३	सुभाषचन्द्र बोस द्वारा सिंगापुर मे आजाद हिन्द फौज की स्थापना
३६	१६४७	भारत स्वाधीन हुआ तथा देश का विभाजन और पाकिस्तान की स्थापना काश्मीर पर पाकिस्तान का आक्रमण
४०	१६४८	महात्मा गाधी की हत्या
४१	१६५०	भारत नये सविधान के अनुसार गणराज्य बन गया। सरदार पटेल की मृत्यु
४२	१६५२	भारत मे पहला आम चुनाव
४३	१६५४	भारत की फ्रासीसी बस्तियो का भारत मे विलय
४४	१६५६	भाषा के आधार पर भारतीय राज्यो का पुनर्गठन
४५	१६६१	गोआ पर भारत का अधिकार
४६.	१६६२	भारत पर चीन का आक्रमण
४७	१६६४	प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु लालबहादुर शास्त्री प्रधानमन्त्री बने
४८.	१६६५	भारत-पाक युद्ध

४९ १९६६ ताशकद मे प्रधान मत्री लालबहादुर शास्त्रीकी मृत्यु। श्रीमती इन्दिरा गाधी प्रधान मत्री बनी

—सचित्र विश्वकोष भा ६, पृ ३०

(९) भारत मे साक्षरता—

१ स्कूल जानेवाले बच्चो की सख्या २ करोड ३५ लाख मे बढकर ६ करोड ८० लाख हो गई और १९७०-७१ तक वह (योजना के मसविदे के अनुसार) ९ करोड ७५ लाख हो जायगी। कालेज जानेवाले छात्रो की सख्या ३ लाख से बढकर १ लाख हो गई।

—हिन्दुस्तान २१ अगस्त, १९६६

वर्त्तमान भारत मे ५४,६९,५५,९८५ मनुष्य निवास करते है। उनमे से १६,०५,३१,५७० व्यक्ति साक्षर और ३८,६४,२४,३७५ व्यक्ति निरक्षर है। पुरुष २९॥ प्रतिशत मे कुछ कम शिक्षित है और ७०॥ मे कुछ अधिक अशिक्षित है। स्त्रियाँ २४ प्र. श पढी हुई है और ७६ प्र श. अपढ है। विगत दस वर्षो मे यहा २२ प्र. श साक्षरता बढी है।

२ सम्पूर्ण भारत और विविध राज्यो मे १९६१ और १९७१ मे प्रतिशत साक्षरता के आँकडे इस प्रकार है—

राज्य	सन १९६१	सन १९७१
भारत	२४ ०३	२९ ३४
चडीगढ	५१ ६	६१ २८

केरल	४६ ८५	६०·१६
दिल्ली	५२ ७५	५६ ६५
गोआ-दमन-दीव	३० ७५	४४ ५३
अंडमान-निकोबार	३३ ६३	४३ ४८
लक्षद्वीप मिनिकाय अमीन द्वीप	२३ २७	४३ ४४
पांडिचेरी	२७ ४३	४३·३६
तमिलनाडु	३१ ४१	३९ ३९
महाराष्ट्र	२९ ८२	३९·०६
गुजरात	३० ४५	३५ ७
पंजाब	२६ ७४	३३·३९
प. बंगाल	२९·२८	३३ ०५
मणिपुर	३० ४२	३२ ८०
मैसूर	२५ ४०	३१·४७
हिमाचल प्रदेश	२१ २६	३१ ३२
त्रिपुरा	२० २४	३०·८७
असम	२९·२९	२८ ७४
मेघालय	१८ ४७	२८ ४१
नागालैंड	१७ ९१	२७ ३३
हरियाणा	१९ ९३	२६·६९
उड़ीसा	२१ ६६	२६·१२
आन्ध्र	२१ १९	२४·५६
मध्य प्रदेश	१७·१३	२२ ०३
उत्तर प्रदेश	१८ ६५	२१ ६४

पाचवा भाग · चौथा कोष्ठक

बिहार	१८·४८	१९·९७
राजस्थान	१५·२१	१८·७९
जम्मू-कश्मीर	११·०३	१८·३०
दादरा और नगर हवेली	९·४८	१४·८६
नेफा	७·१३	९·३४

—हिन्दुस्तान, १४ अप्रेल, १९७१

(१०) भारत की बडी चीजें—

अधिक क्षेत्रफलवाला राज्य	मध्य प्रदेश
अधिक जनसंख्यावाला राज्य	उत्तर प्रदेश
अधिक घनत्व (जनसंख्या) वाला राज्य	दिल्ली
अधिक जनसंख्यावाला नगर	कलकत्ता
बडा बंदरगाह	बम्बई
बडी सडक	ग्रांड ट्रंक रोड
अधिक शिक्षित	केरल
लम्बा पुल	सोन नदी
लम्बा प्लेटफार्म	सोनपुर (विश्व मे)
बडी झील	वुलर झील (कश्मीर)
बडी खारी झील	सांभर (राजस्थान)
बडा डेल्टा	सुन्दरबन
बडा इस्पात का कारखाना	टाटा का कारखाना (जमशेदपुर)

सुन्दर भवन	ताजमहल
बडी मूर्ति	गोमतेश्वर की मूर्ति (मैसूर)
ऊँची मीनार	कुतुब मीनार (दिल्ली)
बडी गुम्बद	गोलगुम्बद (बीजापुर)
बडा पुस्तकालय	राष्ट्रीय पुस्तकालय (कलकत्ता)
बडा चिडियाघर	अलीपुर (कलकत्ता)
बडा अजायबघर	इंडियन म्यूजियम (कलकत्ता)
सबसे ऊँचा पर्वत शिखर	माउंट एवरेस्ट
लम्बा बाँध	हीराकुण्ड बाँध
सबसे अधिक वर्षा वाला क्षेत्र	चेरापूंजी (आसाम)

—आर्थिक व व्यापारिक भूगोल पृष्ठ ३३, द्वारा हुक्कू, सक्सेना

२३. भारत की कतिपय विशेष ज्ञातव्य बाते

१. (क) औसत आयु ५२ वर्ष।

(ख) प्रति व्यक्ति औसत वार्षिक आय चालू मूल्यो पर ५५२ रुपये और १९४८-४९ के मूल्यो पर ३२४·४ रुपये।

(ग) खाद्यान्नो की उत्पत्ति लगभग १० करोड टन (१९६९-७०)

(घ) प्रति व्यक्ति खाद्यान्नो की खपत १५ ४ औसत प्रतिदिन (१९६९-७०)

(च) प्रति व्यक्ति के लिए उपलब्ध कैलोरी (Calories) २१४५ प्रतिदिन।

(छ) प्रति व्यक्ति वस्त्र की उपलब्धि १६ मीटर वार्षिक।

(ज) प्रति सहस्र वार्षिक जन्मदर ४२ व प्रति सहस्र मृत्यु दर १७ २।

—भारतीय अर्थशास्त्र खण्ड २, पृष्ठ २६ और ४३

२ भारतवर्ष मे लगभग ५२ लाख कुए है, ७५ हजार तालाब है और नहरो की लम्बाई लगभग १ लाख ४९ हजार किलोमीटर है।

३ भारतवर्ष मे नदियो का पानी केवल ५६ प्रतिशत भाग सिचाई आदि के उपयोग मे आता है, शेष यो ही समुद्र मे चला जाता है।

४ भारत मे केवल ३६ करोड ६० लाख एकड जमीन में खेती होती है जबकि अमेरिका मे ४७ करोड ८० लाख और रूस मे ५५ करोड ६० लाख एकड जमीन खेती के उपयोग मे आती है।

५. भारत मे (सन् ६६ से ६६ के आकडो के अनुसार) प्रति वर्ष गेहू लगभग ११५, ३ लाख टन, चावल ३ करोड ७६ लाख टन, मक्का ५० लाख टन, बाजरा ३८ लाख टन, चना ४५० पौड प्रति एकड, गन्ना ६८ लाख ८ हजार टन, कपास की ६७ लाख गाठे (३६२ पौड की एक गाठ), जूट भी ८४ लाख ७ हजार गाँठें (४०० पौड की गाठ), चाय ३७ ५४ करोड किलोग्राम, कहवा ६८ हजार मीट्रिक टन, मूंगफली ५६ ७ लाख टन, तम्बाकू ३॥ लाख टन, शक्कर (चीनी) ४३ लाख टन, रबर ६४ ४५ हजार टन, लोहा १४८ लाख मीट्रिक टन, अभ्रक २५ हजार टन, सोना ३७४० किलोग्राम हीरा पाँच लाख कैरट, मैगनीज (भूरे रग की धातु) १६ लाख टन, कोयला ७१ करोड टन, पेट्रोलियम (चट्टान से निकला हुआ तेल) ३० लाख टन, इस्पात ४४.८८ लाख टन, सीमेंट ११० लाख टन और कागज ५.५ लाख टन पैदा हुए।

६. भारत मे सूती कपडे की ६०० मिले है (अमरीका मे १२०० है) उनमे ७२५ करोड के मूल्य का ६ ०६ अरब गज कपडा प्रतिवर्ष बनता है, उसमे ६२ करोड का विदेश जाता है। उनके चार कारखाने है। रेशम के छोटे छोटे

अनेक कारखाने है और बड़े चार है। प्रतिवर्ष १८·७१ लाख किलोग्राम (१ करोड गज) नकली रेशम बनता है। १३ लाख टन जूट प्रतिवर्ष उत्पन्न होता है। ७ ५ लाख टन जूट का सामान विदेश जाता है, उसमे भारत को १५० करोड की आमदनी होती है।

६ भारत मे रेल-इजिन के दो कारखाने है—एक तो चितरजन नगर मे और दूसरा जमशेदपुर मे। दोनो कारखानो मे सन् १८६०-६१ तक एक हजार से भी अधिक इजिन तैयार हो चुके थे।

आधुनिक इंजिन मे लगभग ५३५० पुर्जे लगते है। उनमे ८० प्रतिशत पुर्जे तो चितरजन नगर के कारखाने मे ही बनते है और दस प्रतिशत बाहर मे मँगवाये जाते है। एक इजिन पर लगभग चार लाख रुपये लगते है।

८ सन् ६०-६१ मे यहा (भारत मे) चार लाख टेलीफोन बनते थे। एक टेलीफोन मे ५३८ पुर्जे लगते है। उनमे तो १६ पुर्जे तो अन्य उत्पादको मे प्राप्त किये जाते है और तीन पूर्जे विदेशो से मँगवाये जाते है।

—व्यापारिक व आर्थिक भूगोल, सन् ६६ के आधार से

☼

• सूर्योदय और सूर्यास्त सारणी

भारत के विभिन्न प्रातो मे समय का अन्तर

महीना	दिनाक	दिल्ली		बम्बई		मद्रास		कलकत्ता	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	१	७ १४	१७·३५	७ १२	१८·१२	६ ३१	१७ ५३	६ १७	१७·०३
	१५	७ १६	१७ ४५	७ १५	१८ २१	६ ३५	१८ ०१	६ १९	१७ १२
फरवरी	१	७ १०	१७ ५९	७·१३	१८·३१	६ ३६	१८ ०९	६ १६	१७ २४
	१५	७·०१	१८ १०	७ ०८	१८ ३८	६ ३२	१८ १४	६ ०९	१७ ३२
मार्च	१	६ ४७	१८ २१	६ ५८	१८ ४४	६ २५	१८ १८	५ ५८	१७ ४०
	१५	६·३२	१८·२९	६ ४८	१८ ४८	६ १७	१८ १९	५ ४६	१७ ४६
अप्रैल	१	६ १२	१८ ३९	६ ३३	१८ ५२	६ ०६	१८ २१	५ ३०	१७ ५२
	१५	५·५६	१८·४७	६ २२	१८ ५६	५ ५७	१८·२२	५ १७	१७ ५७
मई	१	५·४१	१८ ५९	६·११	१९·०२	५ ४९	१८ २४	५ ०४	१८ ०३
	१५	५ ३१	१९ ०४	६ ०५	१९ ०६	५ ४४	१८ २७	४ ५७	१८ ०९
जून	१	५ २४	१९ १४	६·०१	१९ १२	५ ४२	१८ ३२	४ ५२	१८ १७
	१५	५·२३	१९ २०	६·०१	१९ १७	५ ४३	१८ ३६	४ ५२	१८ २२

जुलाई	१	५ २७	१९ २३	६ ०५	१९ २०	५ ४६	१८ ३९	५ ५५	१८ २५
	१५	५·३३	१९ २१	६ १०	१९ १९	५ ५०	१८ ३९	५ ०१	१८ २४
अगस्त	१	५ ४३	१९ १२	६ १६	१९ १४	५·५५	१८ ३६	५ ०८	१८ १७
	१५	५ ५०	१९ ०१	६ २०	१९ ०६	५ ५७	१८ ३०	५ १३	१८ ०८
सितम्बर	१	५ ५६	१८·४३	६ २४	१८ ५३	५·५८	१८ २०	५ १९	१७ ५४
	१५	६ ०६	१८ २६	६ २६	१८ ४१	५ ५८	१८·१०	५ २३	१७ ४०
अक्तूबर	१	६·१४	१८·०७	६ २९	१८·२७	५ ५९	१७ ५९	५ २८	१७ २४
	१५	६·२२	१७ ५२	६ ३३	१८·१९	५ ५९	१७ ५०	५ ३३	१७ १२
नवम्बर	१	६ ३३	१७ ३६	६·३९	१८ ०५	६ ०३	१७ ४२	५ ४२	१६ ५९
	१५	६ ४४	१७ २७	६·४६	१८ ००	६ ०८	१७ ३९	५ ४९	१६·५३
दिसम्बर	१	६ ५७	१७ २४	६ ५६	१८ ००	६ १६	१७ ४०	६ ००	१६ ५१
	१५	७ ०७	१७ २६	७ ०४	१८ ०४	६ २३	१७ ४५	६ ०९	१६ ५४

टिप्पणी—(१) समय लीद वर्ष के हैं तथा अन्य वर्षों में लगभग १ मिनट का अन्तर पड़ सकता है।

(२) क्षितिज पर सूर्य की ऊपरी कोर के दिखाई देने का समय भारतीय प्रामाणिक समयानुसार दिया गया है।

—भारत-भारती मान चित्रावली, १९७१

ससार के प्रमुख नगरों के समय और दूरियाँ

संख्या	नगरो के नाम	देशो के नाम	नगरो का वह समय जब दिल्ली मे दोपहर के बारह बजे हो		नगरो की दूरिया किलोमीटर मे दिल्ली से
			घन्टा	मिनट	
१	अक्करा	घाना	६	३०	८,४८०
२	अदन	अदन	६	३०	३,७६०
३	अथेंस	यूनान	८	३०	५,०१०
४	अदिस अबाबा	इथोपिया	६	३०	४,५६०
५	अंकारा	टर्की	८	३०	४,२१०
६	एम्सटरडम	नीदरलैंड्स	७	३०	६,३६०
७	ओटावा	कनाडा	१	३०	११,३४०
८	ओस्लो	नार्वे	७	३०	५,६६०
९	कराची	पाकिस्तान	११	३०	१,०६०
१०	काठमाडू	नैपाल	१२	००	७६०
११	काबुल	अफगानिस्तान	११	००	६६०
१२	काहिरा	स अरब गणराज्य (मिश्र)	८	३०	४,४२०

१३	कुआलालुमपुर	मलाया	१४	००	३,८३०
१४	केनबेरा	आस्ट्रेलिया	१६	३०	१०,३२०
१५	केपटाउन	दक्षिण अफ्रीका सघ	८	३०	६,२८०
१६	कोपेनहेगेन	डेनमार्क	७	३०	५,८५०
१७	कोलम्बो	श्रीलंका	१२	००	२,४३०
१८	खारतूम	सूडान	८	३०	४,७८०
१९	जकार्ता	हिन्देशिया	१४	००	५,०१०
२०	जेनेवा	स्विटजरलैंड	७	३०	६,३५०
२१	टोकियो	जापान	१५	३०	५,८२०
२२	ढाका	पूर्व बगाल	१२	३०	१,४३०
२३	तेहरान	ईरान	१०	००	२,५४०
२४	दमिश्क	सीरिया	८	३०	३,९२०
२५	दी हेग	नीदरलैंड्स	७	३०	६,४००
२६	न्यूयार्क	स. रा. अमेरिका	१	३०	११,७४०
२७	प्राग	जैकोस्लोवाकिया	७	३०	५,७१०
२८	पेकिंग	चीन	१४	३०	३,७८०
२९	पेरिस	फ्रास	७	३०	६,५९०

४७	रगून	ब्रह्मा	१३	००	२,३४०
४८	लिस्बन	पुर्तगाल	६	३०	७,७७०
४९	नदन	ब्रिटेन	६	३०	६,७१०
५०	वारसा	पोलैंड	७	३०	५,२६०
५१	वाशिंगटन	स रा अमेरिका	१	३०	१२,०४०
५२	वियना	आस्ट्रिया	७	३०	५,५७०
५३	वेलिंगटन	न्यूजीलैंड	१८	३०	१२,६२०
५४	सिओल	कोरिया	१५	००	४,७००
५५	सिंगापुर	मलेशिया संघ	१४	००	४,१४०
५६	सैगांव	दक्षिणी वियतनाम	१३	३०	३,६४०
५७	स्टॉकहोम	स्वीडन	७	३०	५,५७०
५८	हनोई	उत्तरी वियतनाम	१३	३०	५,०४०
५९	हेलसिंकी	फिनलैंड	८	३०	५,२२०
६०	हांगकांग	हांगकांग द्वीप	१४	३०	३,७६०

—भारत भारती मान चित्रावली, १९७१

परिशिष्ट

वक्तृत्वकला के बीज
भाग १ से ५ तक मे
उद्धृत ग्रन्थों व व्यक्तियो की नामावली

१ ग्रन्थ सूची

अङ्गुत्तर निकाय
अंगिरास्मृति
अग्निपुराण
अथर्ववेद
अर्थशास्त्र
अध्यात्मसार
अध्यात्मोपनिषद्
अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका
अनुयोग द्वार
अपरोक्षानुभूति
अभिधम्मपिटक
अभिधानराजेन्द्र
अभिधानचिन्तामणि
अभिज्ञान शाकुन्तल
अमितिगति श्रावकाचार
अमृतध्वनि
अमर भारती (मासिक)
अवेस्ता
अत्रिस्मृति
अष्टाग हृदय-निदान
आगम और त्रिपिटक एक अनुशीलन
आचाराङ्गसूत्र
आर्थिक व व्यापारिक भूगोल
आप्त-मीमासा
आत्मानुशासन
आवश्यकनिर्युक्ति
आवश्यक मलयगिरि
आवश्यक सूत्र
आत्म-पुराण
आत्मविकास
आतुर प्रत्याख्यान
आपस्तम्बस्मृति
आवा अद्धी सुर्यश्त
औपपातिक सूत्र
इतिहास समुच्चय
ईशोपनिषद्
इस्लामधर्म
इष्टोपदेश
ईश्वरगीता
उत्तरराम चरित्र

उत्तराध्ययन सूत्र
उत्तराध्ययन वृहद्वृत्ति
उदान
उपदेश तरङ्गिणी
उपदेशप्रासाद
उपदेशमाला
उपदेशमुमनमाला
उपासक दशा
ऋग्वेद
ऋपिभासित
ऐतरेय ब्राह्मण
कठोपनिपद्
कथासरित्सागर
कल्याण (मासिक)
कवितावली
कात्यायन स्मृति
किशन बावनी
किरातार्जुनीय
कीर्तिकेयानुप्रेक्षा
कुमारपालचरित्र
कुमार सम्भव
कुरानशरीफ
कुरुक्षेत्र
कुवलयानन्द
कूटवेद
केनोपनिषद्
कौटिलीय अर्थशास्त्र
खुले आकाश मे
गच्छाचार प्रकीर्णक
गरुड पुराण
गृहस्थधर्म
गीता
गीता भाष्य
गुर्जरभजनपुष्पावली
गुरुग्रन्थ साहिव
गोम्मटसार
गौतमस्मृति
गोरक्षा-शतक
घटचर्पटपजरिका
चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र
चन्द-चरित्र
चरक संहिता
चरित्र रक्षा
चरकसूत्र
चाणक्यनीति
चाणक्यसूत्र
चित्राम की चोपी
चीनी सुभापित
छान्दोग्य उपनिपद्
जपुजी साहिव

जागृति (मासिक)
जातक
जावालश्रुति
जाह्नवी
जीतकल्प
जीवन-लक्ष्य
जीवन सौरभ
जीवाभिगम सूत्र
जैनभारती
जैनसिद्धान्त दीपिका
जैनसिद्धान्त वोलसंग्रह
टॉड राजस्थान इतिहास
टी वी हैण्डवुक
डिकेन्स
डेलीमिरर
तत्त्वामृत
तत्त्वार्थ-सूत्र
तन्दुलवैचारिकगाथा
तत्त्वानुशासन
ताओ-उपनिषद्
ताओ-तेह-किंग
तात्त्विक त्रिशती
तिरुकुरल
तीन वात
तैत्तरीय उपनिषद्
दशाश्रुत-स्कन्ध
दशाश्रुत-स्कन्धवृत्ति
दक्षसंहिता
दर्शनपाहुड
दान-चन्द्रिका
दिगम्बर प्रतिक्रमण त्रयी
दीर्घनिकाय
दोहा-सदोह
द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशिका
द्रव्य-सग्रह
धन-वावनी
ध्यानाष्टक
धम्मपद
धर्मविन्दु
धर्मयुग
धर्मसग्रह
धर्मरत्न प्रकरण
धर्मशास्त्र का इतिहास
धर्मों की फुलवारी
तैत्तिरीय ताण्ड्य महाब्राह्मण
तोरा
थेरगाथा
दशवैकालिक सूत्र
दर्शन-शुद्धि
धर्म-सूत्र

नविश्ते
नवभारत टाइम्स (दैनिक)
नवनीत (मासिक)
नवीन राष्ट्र एटलस
नारद पुराण
नारद नीति
नारद परिव्राजकोपनिषद्
निर्णयसिन्धु
नियमसार
निरुक्त
निशीथ चूर्णि
निशीथ भाष्य
निरालम्बोपनिषद्
नीतिवाक्यामृत
नैषधीय चरित्र
पचतन
पचास्तिकाय
पजावकेशरी
पद्मपुराण

प्रशमरति
प्रज्ञापना सूत्र
पातजल योग
पारस्कर स्मृ
प्रास्ताविक श
पुरानी बाइबि
पुरुषार्थ सिद्धि
पुराण
पूर्व मीमासा
बृहत्कल्प भाष्
ब्रह्मग्रन्थावली
ब्रह्मानन्द गीत
बृहदारण्यकोप
बृहस्पतिस्मृति
बाइबिल
बुखारी
वीरपश्न